खंड

3

शिवराजविजयः (प्रथम निःश्वासः)

इकाई 10
शिवराजविजय परिचय 123

इकाई 11
शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 1-14 139

इकाई 12
शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 15-20 156

इकाई 13
शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 21-29 165

इकाई 14
शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 30-36 176

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 10 शिवराजविजय परिचय

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 अम्बिकादत्त व्यास का परिचय

10.3 'शिवराजविजय' का परिचय

- 10.3.1 'शिवराजविजय' की कथावस्तु
- 10.3.2 'शिवराजविजय' के घटनाक्रम का समय
- 10.3.3 'शिवराजविजय' का साहित्यिक मूल्यांकन

10.4 'शिवराजविजय' के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

- 10.4.1 शिवाजी का चरित्र-चित्रण
- 10.4.2 रघुवीर सिंह का चरित्र-चित्रण
- 10.4.3 अफजल खान का चरित्र-चित्रण
- 10.4.4 गौरसिंह का चरित्र-चित्रण

10.5 सारांश

10.6 शब्दावली

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- अम्बिकादत्त व्यास के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- शिवराजविजय उपन्यास की कथावस्तु से परिचित होंगे।
- शिवराजविजय के घटनाक्रम से परिचित होंगे।
- शिवराजविजय की भाषा-शैली, अलंकार-योजना, रस-योजना आदि से परिचित होंगे।
- शिवराजविजय के पात्रों की चारित्रिक विशिष्टताओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- आप संस्कृत की पारिभाषिक शब्दावली तथा विशिष्ट प्रयोग विधि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

काव्य का स्वरूप या तो गद्यमय होता है या पद्यमय अथवा गद्य-पद्य मिश्रित। काव्य के इन स्वरूपों में गद्य की प्रधानता है क्योंकि गद्य मनुष्य की प्रारम्भिक भाषा है। मनुष्य जब बोलना प्रारम्भ करता है तो सर्वप्रथम गद्य ही बोलता है। भावों को जितना स्पष्ट रूप से गद्य के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है उतना पद्य के माध्यम से नहीं। सभी प्रकार के गद्य को काव्य नहीं कहा जा सकता है क्योंकि गद्य में भी काव्य के समान प्रत्येक शब्द को कुछ न कुछ विशेष चमत्कार से युक्त होना चाहिए। इसीलिये गद्यकाव्य को कवियों की कसौटी कहा गया है – **'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।'**

19वीं शती से पूर्व संस्कृत साहित्य में गद्यकाव्य के दो भेद प्रचलित थे – कथा और आख्यायिका। आधुनिक काल में उपन्यास और कहानी के रूप में गद्य की दो नई विधाओं को साहित्य में स्थान मिला। इन विविध विधाओं में उपन्यास विधा पूर्व प्रचलित कथा नामक विधा से साम्य रखती है। आधुनिक काल में अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय संस्कृत के प्रथम उपन्यास के रूप में प्रसिद्ध है। शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास तीन विरामों में विभक्त है तथा प्रत्येक विराम में चार-चार निःश्वास हैं। इस उपन्यास में भाषा, भाव, अलंकार, रस आदि साहित्यिक तत्त्वों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। वीर रस प्रधान इस उपन्यास के नायक वीर शिवाजी हैं। प्रिय छात्रों! संस्कृत गद्य साहित्य पाठ्यक्रम के तृतीय खण्ड की इस इकाई में आप व्यास जी का परिचय, शिवराजविजय की कथावस्तु, घटनाक्रम, साहित्यिक मूल्यांकन तथा प्रमुख पात्रों जैसे शिवाजी, रघुवीर सिंह, गौरसिंह आदि की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

10.2 अम्बिकादत्त व्यास का परिचय

संस्कृत भाषा के आधुनिक साहित्यकारों में अम्बिकादत्त व्यास का नाम सर्वविदित है। इनकी रचनाओं में प्राचीनता और नवीनता दोनों का सम्मिलित प्रयोग मिलता है। इन्होंने 'बिहारी-विहार' में संक्षिप्त निज वृत्तान्त स्वयं लिखा है। व्यास जी का जन्म जयपुर के समीप रावत जी का धूला नामक ग्राम में सनातनमतावलम्बी ब्राह्मण परिवार में चैत्र शुक्ल अष्टमी संवत् 1915 में हुआ। इनके पितामह राजाराम तथा पिता दुर्गादत्त प्रसिद्ध कर्मकाण्डी और विद्वान् थे। व्यास जी प्रारम्भ से ही धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। संस्कृत व हिन्दी में इनकी विशेष रुचि थी। व्यास जी के पिता श्री दुर्गादत्त जी कवि, विद्वान् और व्यवहारकुशल व्यक्ति थे। अतः उन्होंने व्यास जी को बाल्यकाल से ही अक्षरारम्भ के साथ ही अमरकोष, शब्दधातुरूपावली और व्यावहारिक पदार्थों के संस्कृत नाम मौखिक रूप से कण्ठस्थ कराने प्रारम्भ कर दिए। व्यास जी स्वयं भी कुशाग्र और विलक्षण प्रतिभासम्पन्न थे, अतः शीघ्र ही संस्कृत में इनका ज्ञान प्रौढ़ होता गया। परिणामतः 10 वर्ष की अवस्था में ही काव्य-रचना प्रारम्भ कर दी। चूँकि दुर्गादत्त जी स्वयं विख्यात कवि थे अतः उनके साथ रहने से व्यास जी का भी अन्य कवियों से सम्पर्क बढा। लगभग 12 वर्ष की अवस्था में व्यास जी ने धर्मसभा की परीक्षा में पुरस्कार प्राप्त किया और श्री तैलंग अष्टावधान के 'सुकविरेप' कहने पर भारतेन्दु जी ने 'काशी-कविता-वद्धिर्नी-सभा' की ओर से 'सुकवि' की उपाधि प्रदान की।

उन दिनों बाल विवाह की प्रथा का प्रचलन था। अतः 13 वर्ष की अवस्था में व्यास जी का भी विवाह हो गया। इनके पिता दुर्गादत्त पौरोहित्य कर्म से जीविकोपार्जन करते थे, अतः आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त परिवार का भरण-पोषण साधारण रूप से ही हो पाता था। दूसरी ओर व्यास जी का पारिवारिक जीवन भी सुखमय नहीं था। इनके 11 वर्ष की अवस्था में माता का तथा 17 वर्ष की अवस्था में पिता का देहान्त होने से व्यास जी पर गृहस्थी का भार आ पड़ा।

संवत् 1937 में इन्होंने गवर्नमेण्ट संस्कृत कॉलेज से साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की, साथ ही साथ अंग्रेजी का भी प्रौढ़ ज्ञान अर्जित किया। संवत् 1940 में मधुवनी संस्कृत स्कूल के अध्यक्ष होकर बिहार गए वहाँ मैथिली भाषा का अध्ययन किया। उन्होंने संस्कृत भाषा की अभिनव प्रणाली का आविष्कार किया। उन्होंने बिहार-संस्कृत-समाज की स्थापना की, जो आज भी संस्कृत के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहा है। संवत् 1943 में ये मुजफ्फरपुर जिला स्कूल के हेडपण्डित होकर कार्य करने लगे। संवत् 1944 में भागलपुर जिला स्कूल के हेडपण्डित हो गए। अन्तिम समय में एक-दो वर्षों के लिये पटना कॉलेज में भी अध्यापक रहे। संवत् 1950 में ये छुट्टी लेकर भारत-भ्रमण पर निकले।

व्यास जी अत्यन्त प्रतिभाशाली थे। वक्ता और साहित्य स्रष्टा के साथ ही चित्रकारिता, अश्वारोहिता, संगीत और शतरंज में भी उनकी विशेष रुचि थी। सितार, हारमोनियम, जल तरंग और मृदंग इनके प्रिय वाद्य यन्त्र थे। इन्होंने हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और बंग्ला भाषा का ज्ञान प्राप्त किया था। व्याकरण, न्याय, वेदान्त और दर्शन में इनकी विशेष रुचि थी। कविता कला में ये इतने प्रवीण थे कि एक घड़ी में 100 श्लोकों की रचना कर सकते थे इसलिये संवत् 1938 में 'काशी ब्रह्मामृतवर्षिणी' सभा में इन्हें 'घटिकाशतक' की उपाधि प्रदान की गई। 100 प्रश्नों को एकसाथ ही सुनकर उन सभी का उत्तर उसी क्रम में देने की अद्‌भुत क्षमता थी इसलिये इन्हें 'शतावधान' की उपाधि भी मिली थी।

व्यास जी ने हिन्दी और संस्कृत में छोटी-बड़ी सब मिलाकर 80 पुस्तकों की रचना की। रत्नाष्टकम्, सामवतम् नाटक, कथाकुसुमम्, गद्यकाव्यमीमांसा, गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्, धर्माधर्मकलकलम्, द्रव्यस्तोत्रम्, सहस्त्रनामरामायण, बालव्याकरण, मित्रालापः, शिवराजविजय आदि इनकी संस्कृत भाषा में प्रकाशित रचनाएं हैं। अबोधनिवारण, अवतारमीमांसा, आश्चर्यवृत्तान्त, ईश्वरेच्छा, बिहारी-विहार, भारतसौभाग्य, ललितानाटिका, विभक्तिविलास आदि इनकी हिन्दी भाषा में प्रकाशित रचनाएं हैं।

'शिवराजविजय' अम्बिकादत्त व्यास जी की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति है। संस्कृत गद्य-साहित्य में शिवराजविजय का अन्यतम स्थान है। बाण, दण्डी और सुबन्धु के बाद संस्कृत गद्य साहित्य की परम्परा पर यदि दृष्टि डालें तो और भी गद्यकारों के नाम प्राप्त होते हैं किन्तु बौद्धिक प्रतिभा, साहित्यिक उत्कृष्टता और सामाजिक परिदृश्यों के आकलन की विशिष्टता के परिणामस्वरूप व्यास जी का नाम प्रमुख गद्यकारों की श्रेणी में अंकित है।

अप्रतिम प्रतिभासम्पन्न संस्कृत साहित्य का यह कवि दीर्घायु नहीं हो सका। 42 वर्ष की अवस्था में महाकवि का सम्मान प्राप्त करने के उपरान्त व्यास जी सोमवार, मार्गशीर्ष त्रयोदशी, संवत् 1957 को अपने पीछे एक 9 वर्षीय पुत्र, एक कन्या और विधवा पत्नी को असहाय छोड़कर पंचतन्त्र में विलीन हो गये, किन्तु व्यास जी अपने यश रूपी शरीर से पाठकों के अन्तःस्थल में आज भी जीवित हैं।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

i) व्यास जी का संक्षिप्त निज-वृत्तान्त मिलता है –

क) शिवराजविजय में ख) सामवतम् में

ग) बिहारी-विहार में घ) भारतसौभाग्य में

ii) व्यास जी के पिता का नाम था –

क) राजाराम ख) दुर्गादत्त

ग) देवीदत्त घ) कृष्णदत्त

iii) शतावधान की उपाधि से विभूषित हैं –

क) अम्बिकादत्त व्यास ख) पण्डिता क्षमाराव

ग) बाणभट्ट घ) सुबन्धु

iv) 'सामवतम्' रचना की विधा है –

क) महाकाव्य ख) आख्यायिका

ग) कथा घ) नाटक

2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) व्यास जी का जन्म कहाँ हुआ था?

.....

.....

.....

.....

.....

ii) 'काशी कविता वर्द्धिनी' सभा की ओर से व्यास जी ने कौन सी उपाधि प्राप्त की?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) व्यास जी ने कितनी पुस्तकों की रचना की?

.....

.....

.....

.....

.....

iv) शिवराजविजय किसकी रचना है?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

1) अम्बिकादत्त व्यास का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

10.3 'शिवराजविजय' का परिचय

प्रिय छात्रों!इस इकाई के माध्यम से अब तक आपने अम्बिकादत्त व्यास के जीवन-वृत्त का अध्ययन किया। इकाई के इस अंश में आप शिवराजविजय की कथावस्तु,घटनाक्रम का समय एवं उसके साहित्यिक मूल्यांकन के विषय में अध्ययन करेंगे।

10.3.1 'शिवराजविजय' की कथावस्तु

शिवराजविजय की रचना 1898 ई. में प्रारम्भ हुई, इसकी पूर्ति में 15 वर्ष का समय लगा। यह ग्रन्थ बंग्ला उपन्यास की धारा से प्रेरित है। व्यास जी ने अपनी इस रचना को स्वयं उपन्यास कहा है। शिवराजविजय तीन विरामों में विभाजित है। प्रत्येक विराम में चार-चार निःश्वास हैं। इसके नायक शिवाजी हैं तथा प्रतिनायक औरंगजेब है। इस ग्रन्थ में शिवाजी का चरित्र उदात्त रूप में वर्णित किया गया है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है।

वीर शिवाजी ने दक्षिण में यवनों के आधिपत्य तथा अत्याचारों से खिन्न होकर स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष प्रारम्भ किया। उस समय दो-दो कोस पर आश्रम बनाए गए जिनके माध्यम से यवनों की गतिविधि का परिचय प्राप्त होता था। शिवाजी की अनवरत विजय से उद्विग्न होकर बीजापुर के शासक ने उनसे युद्ध करने के लिए अफजल खान को भेजा। अफजल खान ने भी भीमा नदी के तट पर अपना शिविर लगाया। बीजापुर के शासक सन्धि का आश्रय लेकर वीर शिवाजी को जीवित पकड़ना चाहते थे किन्तु उनकी इस गुप्त योजना के विषय का शिवाजी ने पहले ही पता लगा लिया। एक यवन गुप्तचर बीजापुर से पत्र लेकर जा रहा था। रास्ते में उसने एक ब्राह्मण कन्या का अपहरण कर लिया किन्तु वह कन्या एक आश्रम के अध्यक्ष ब्रह्मचारी गुरु के शिष्यों गौरसिंह एवं श्यामसिंह द्वारा बचा ली गयी। गौरसिंह द्वारा वह यवन गुप्तचर मार डाला गया। गौरसिंह ने उसके वस्त्रों से बीजापुर का वह गुप्त सन्देश पत्र प्राप्त किया।

उस पत्र द्वारा बीजापुर की गुप्त दुरभिसन्धि को जानकर शिवाजी ने स्वयं अफजल खान को छलने की योजना बनाई। बीजापुर के दरबार से सन्धि प्रस्ताव लेकर भेजे गए पण्डित गोपनाथ ने प्रताप दुर्ग की तलहटी में अफजल खान से मिलने का शिवाजी का प्रबन्ध किया। गौरसिंह गायक का वेष धारण कर अफजल खान के शिविर में जाकर समस्त वृत्तान्त पता लगा लाया। शिवाजी ने अपनी सेना चारों ओर जंगलों में तथा अफजल खान के शिविर के आस-पास छिपा दी। अफजल खान प्रातः-काल शिवाजी से मिलने आया। शिवाजी अपने वस्त्रों के अन्दर कवच तथा हाथों में बघनखा पहनकर गए। आलिंगन करने पर शिवाजी ने अफजल खान के कन्धों और गर्दन को फाड़कर उसे भूमि पर पटक दिया तथा शिवाजी की सेना ने यवनों की सेना को मारकर भगा दिया।

गौरसिंह ने जिस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की थी, उसके संरक्षक एक वृद्ध ब्राह्मण थे। उनके आने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि वह कन्या गौरसिंह और श्यामसिंह की बहन सौवर्णी है तथा वृद्ध उनके पुरोहित देवशर्मा हैं। उसके बाद ब्रह्मचारी गुरु के अनुरोध करने पर गौरसिंह ने अपना वृत्तान्त सुनाया जो इस प्रकार है –

गौरसिंह और श्यामसिंह उदयपुर के एक जागीरदार खड्गसिंह के पुत्र हैं। माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् तीनों भाई बहन पुरोहित के संरक्षण में रहने लगे। एकबार शिकार खेलने गए हुए दोनों भाइयों को लुटेरों ने पकड़ लिया किन्तु किसी युक्ति से वे घोड़ों पर चढकर भाग निकले और एक हनुमान मन्दिर के अध्यक्ष की सहायता से महाराष्ट्र पहुँचे। वहाँ भीमा नदी के तट पर शिवाजी से उनकी भेंट हुई और वे इस आश्रम में रहने लगे।

शाइस्ता खाँ ने पूना पर अधिकार कर लिया और वहीं शिवाजी के महलों में रहने लगा। शिवाजी का उससे युद्ध अनिवार्य हो गया था। शिवाजी ने सिंहदुर्ग में अपना एक सन्देश रघुवीर सिंह द्वारा तोरण दुर्ग के अध्यक्ष के पास भेजा। आँधी पानी की उपेक्षा करता हुआ रघुवीर सिंह तोरण दुर्ग पहुँचकर दुर्गाध्यक्ष की आज्ञा से हनुमान मन्दिर में ठहरा। इसी मन्दिर में देवशर्मा सौवर्णी को साथ लेकर रहने लगे थे। मन्दिर की वाटिका में गाना गाती

हुई सौवर्णी को देखकर रघुवीर सिंह के हृदय में उसके प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हुआ। शिवाजी के आदेशानुसार रघुवीर सिंह शाइस्ता खाँ के साथ होने वाले युद्ध के भविष्य को पूछने के लिए देवशर्मा के पास गया। देवशर्मा ने सौवर्णी के द्वारा रघुवीर सिंह को एक मोदक खिलाकर गले में एक माला पहनवाई और प्रातः-काल आकर रात्रि में देखे गए स्वप्न का वृत्तान्त सुनाने के लिए कहा। प्रातः-काल दुर्गाध्यक्ष से सन्देश का उत्तर लेकर वह देवशर्मा के पास गया और यवनों के साथ युद्ध में 'विजय' तथा आर्यों के साथ युद्ध में 'पराजय' यह भविष्य जानकर वाटिका में गया। वाटिका में रघुवीर सिंह की पुनः सौवर्णी से मुलाकात हुई। उसके पश्चात् वह हनुमान जी का प्रसाद लेकर सिंहदुर्ग की ओर चल पड़ा।

एक बार शिवाजी पण्डित के वेष में पूना जाकर गुप्त रूप से वहाँ का निरीक्षण कर आए और सन्देह करने पर पीछा करने वाले चाँद खाँ को शिवाजी ने मार गिराया। शिवाजी ने यशवन्त सिंह से पूना से दूर रहने का अनुरोध करके कुछ चुने हुए मित्रों के साथ बारात के बहाने पूना में प्रवेश किया और शाइस्ता खाँ के निवास पर आक्रमण कर दिया।

चाँद खाँ शाइस्ता खाँ के पुत्र रघुवीर सिंह द्वारा मारे गए। शाइस्ता खाँ अपनी घायल उँगली के साथ खिड़की से कूदकर बाहर भाग गया। वहीं दूसरी ओर रघुवीर सिंह ने औरंगजेब की पुत्री रोशनआरा को गिरफ्तार कर लिया था।

किसी समय ब्रह्मचारी गुरु ने गौरसिंह से अपना और अपने पुत्र वीरेन्द्र सिंह का पूर्व वृत्तान्त बतलाया। वहीं दूसरी ओर रघुवीर सिंह की प्रेमिका सौवर्णी ने क्रूरसिंह के द्वारा किये जाने वाले अपमान की बात बताई। उसी समय संयोगवश क्रूरसिंह की नियुक्ति दूसरी जगह हो गई और सौवर्णी का कष्ट दूर हो गया।

रोशनआरा भी शिवाजी के प्रति अपना प्रेम प्रकट कर रही थी किन्तु शिवाजी ने कहा कि वे उसे पिता द्वारा दिए जाने पर ही स्वीकार करेंगे। उसी समय जयसिंह ने सेना सहित आक्रमण कर दिया। शिवाजी ने उसके मन में हिन्दुत्व की भावना जगाने का प्रयत्न किया किन्तु असफल रहने पर कुछ कारणों से मुगलों की कुछ शर्तें मानकर वे सन्धि करने के लिए विवश हुए। इसी सन्धि के परिणामस्वरूप रोशनआरा और मुअज्जम को वापस कर दिया गया।

उसके पश्चात् बीजापुर के किले पर आक्रमण करके रघुवीर सिंह की मदद से शिवाजी ने विजय प्राप्त की और रहमत खाँ को जीवित पकड़ लिया। किन्तु रहमत खाँ और क्रूरसिंह द्वारा रघुवीर सिंह को राजद्रोही बतलाये जाने पर शिवाजी ने उसे निष्कासित कर दिया।

रघुवीर सिंह ने राधास्वामी का वेष धारण किया और शिवाजी का उपकार करता रहा। साथ ही सौवर्णी का अपहरण करने की इच्छा वाले क्रूरसिंह का वध कर दिया। जयसिंह की सन्धि के अनुसार शिवाजी 1666 में औरंगजेब के राजदरबार में उपस्थित हुए। मार्ग में राधास्वामी द्वारा कई बार रोके जाने पर भी शिवाजी नहीं माने। अन्ततः औरंगजेब ने शिवाजी को नजरबन्द करवा दिया और मकान के चारों ओर पहरा बैठा दिया। परन्तु अपनी योजना और रघुवीर सिंह के सहयोग से शिवाजी अपने साथियों के साथ भाग निकलने में सफल हो गए। उसके पश्चात् राधास्वामी ही रघुवीर सिंह है, यह जानकर शिवाजी ने उससे क्षमा-याचना की।

तदनन्तर रघुवीर सिंह भी शिवाजी के साथ वापस लौट आता है। उसे मण्डलेश्वर पद प्रदान किया गया तथा सौवर्णी के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। शिवाजी भी विवाह में सम्मिलित हुए और वैवाहिक जोड़े को आशीर्वाद प्रदान किया। उधर दूतों ने सूचना दी कि सन्धि में मुगलों को दिए गए सभी किले जीत लिए गए हैं।

बाद में शिवाजी सतारा नगरी को राजधानी बनाकर रहने लगे और धीरे-धीरे कुछ ही दिनों में सम्पूर्ण महाराष्ट्र पर शिवाजी का अधिकार हो गया तथा औरंगजेब द्वारा प्रेषित सेनापति मोहम्मद खाँ भगा दिया गया।

10.3.2 'शिवराजविजय' के घटनाक्रम का समय

शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। व्यास जी ने इतिहास की घटनाओं को इस उपन्यास में अभिव्यक्त किया है। यह उपन्यास ऐतिहासिक होते हुए भी साहित्यिक सौन्दर्य से युक्त है। यद्यपि इस उपन्यास में दो कथाएं समानान्तर चल रही थीं जिसमें एक के नायक वीर शिवाजी हैं तो दूसरी के नायक रघुवीर सिंह हैं तथापि ये दोनों कथाएं पूर्ण स्वतन्त्र न होकर एक दूसरे की पूरक हैं। यह उपन्यास महाराष्ट्र शिरोमणि शिवाजी की 10 वर्षों की जीवनी पर आधारित है। इसका कथानक मातृभूमि के प्रति प्रेम राजा की प्रजावत्सलता, प्रजा की राजभक्तिपरायणता, धार्मिकता तथा राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। ऐतिहासिकता, देशभक्ति, राजभक्ति, मार्तृभूमिभक्ति आदि भावों का इस अनुपम कृति में सुन्दर समन्वय हुआ है। इन नवीन भावनाओं का प्राचीन संस्कृत साहित्य में नितान्त अभाव था।

व्यास जी ने ऐसे समय में शिवराजविजय लिखकर राष्ट्रीय प्रेम से परिपूर्ण महाराज शिवाजी का आदर्श हमारे सम्मुख रखा था, जब 1857 में प्रथम स्वाधीनता संग्राम की विफलता के बाद जनता में भय तथा आतंक व्याप्त था। उस समय शिवराजविजय ने अपने देशभक्तिपूर्ण कथानक के माध्यम से जनता में शंखनाद का कार्य किया है।

इस कृति में प्राचीन गौरव की भी घोषणा की गयी है – **'अस्मिन्नेव भारतवर्षे यायूजकैः राजसूयादियज्ञाः व्ययाजिषत। कदाचिदिहैव वर्ष-वाताऽऽतप-हिम-सहानि तपांसि अतापिषत्।'** बाण के हर्षचरित की भाँति शिवराजविजय का कथानक भी हमें समय की गतिविधि से परिचित कराता है।

10.3.3 'शिवराजविजय' का साहित्यिक मूल्यांकन

1) **भाषा-शैली** – मनोगत भावों को अभिव्यक्त करने का प्रमुख साधन भाषा है। भावों को अभिव्यक्त करने के लिये भाषा पर अधिकार होना नितान्त आवश्यक है। बिना भाषा पर अधिकार किए कोई भी लेखक भावों की सफल अभिव्यक्ति करने में पूर्णतया सफल नहीं हो पाता।

   भाषा की दृष्टि से शिवराजविजय अत्यन्त आकर्षक कृति है। इसमें संस्कृत भाषा का वास्तविक रूप प्रस्फुटित हुआ है। शिवराजविजय में उचित शब्दावलियों का प्रयोग, अर्थपूर्ण वाक्य विन्यास तथा अवसर के अनुकूल एक ओर दीर्घ समास बहुला पदावली का प्रयोग किया गया है तो दूसरी ओर सरल और लघु पदावली का प्रयोग किया गया है। इसमें ओज, प्रसाद और माधुर्य इन तीनों गुणों का समुचित समन्वय हुआ है।

   व्यास जी का भाषा पर पूर्ण अधिकार था। वे भावों के अनुकूल भाषा का संयोजन करने का सदैव ध्यान रखते थे। जिस प्रकार के कोमल या कठोर भावों का वर्णन करना होता था उसी के अनुरूप भाषा संयोजन करते थे। शान्त, स्निग्ध एवं नीरव निशा के वर्णन का एक उदाहरण देखिए –

   ''धीर-समीर-स्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनी-कामिनी चन्दनबिन्दौ इव इन्दौ, कौमुदी-कपटेन सुधाधारमिव वर्षति गगने, अस्मिन्नीतिवार्तां

शुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु पतंग-कुलेषु, कैरवविकाश हर्ष-प्रकाश-मुखरेषु चञ्चरीकेषु।''

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शिवराजविजय में व्यास जी ने भाषा और शैली का प्रयोग भावों के अनुसार किया है। यत्र-तत्र व्याकरणिक शब्दों के प्रयोग व्यास जी की विद्वत्ता की ओर संकेत करते हैं।

2) **अलंकार-योजना** – अम्बिकादत्त व्यास जी ने अपनी रचना शिवराजविजय को एक कुशल रमणी के तुल्य अलंकारों से सजाया है। उन्होंने अलंकारों के प्रयोग में अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है। स्थान-स्थान पर अलंकारों की छटा के दर्शन होते हैं किन्तु कवि ने अलंकारों का प्रयोग सर्वथा स्वाभाविक रूप में ही किया है। अनुप्रास अलंकार का एक प्रयोग देखिए –

'मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला-कलाप-कलनः सकल-कालनः-करालः कालः' इत्यादि।

उत्प्रेक्षा अलंकार कवि की कल्पना का बहुत बड़ा सम्बल है। बाणभट्ट के समान व्यास जी ने भी उत्प्रेक्षा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है। अलंकारों में उपमा अलंकार का एक विशिष्ट स्थान है। उपमा एक प्रकार से वक्तव्य को कहने का ढंग है। व्यास जी ने परम्परागत उपमानों के साथ-साथ नवीन उपमानों को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। उन्होंने नौका की उपमा कुम्भड़े के एक टुकड़े से की है – **'कुष्माण्डफक्किकारया नौकया।'**

व्यास जी का प्रिय अलंकार विरोधाभास है। विरोधाभास अलंकार के प्रयोग में व्यास जी बाण का अनुकरण करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार अलंकारों के प्रयोग में व्यास जी ने अपनी सूक्ष्म मर्मज्ञता का परिचय दिया है। उनका गद्य अपने सहज सौन्दर्य से पाठकों के चित्त को आकर्षित करने वाला है।

3) **रस-योजना**– **'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'** के अनुसार रस ही काव्य की आत्मा है। व्यास जी ने शिवराजविजय में सर्वाधिक आश्रय स्वाभाविकता को दिया है। परिणामतः उनकी कृति आदि से अन्त तक निर्बाध गति से रसास्वादन कराती है। शिवराजविजय का प्रधान रस वीर है। शिवराजविजय में शिवाजी के शौर्य का अद्भुत वर्णन किया गया है। गौरसिंह अफजल खान से कहता है–

'को नामापर शिववीरात् ? स एव राजनीतौ निष्णात, स एव सैन्धवारोह विद्यासिन्धु, स एव चन्द्रहास चालने चतुर, स एव मल्लविद्यामर्मज्ञ, स एव बाणविद्यावारिधि, स एव वीरवारवर पुरुषपौरुष परीक्षक, स एव दीनदुखदावदहन, स एव स्वधर्मरक्षण सक्षण।'

व्यास जी ने युद्धादि के प्रसंग में वीर रस के साथ-साथ रौद्र, भयानक, वीभत्स तथा अद्भुत रस का प्रयोग भी किया है। उनका शृंगार मादकता और उच्छृंखलता से रहित है। उन्होंने शृंगार का वर्णन अत्यन्त शिष्ट और सात्विक रूप में किया है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शिवराजविजय में नौ रसों का प्रयोग बड़ी चारुता और दक्षता से किया गया है।

4) **वर्णन कौशल** – काव्य में शिल्प की अपेक्षा अभिव्यंजना का अधिक महत्त्व है। हृदयग्राही मार्मिक भावों की अभिव्यंजना ही काव्य की सफलता है। वस्तु, घटना, भाव

और दृश्य का वर्णन करना ही कवि की विशेषता है। वर्णन कौशल की कला में व्यास जी अत्यन्त निपुण हैं। उनकी वर्णन शैली अद्‌भुत, शान्त, गौरव से ओत-प्रोत एवं आकर्षक है। शिवराजविजय के वर्णन बड़े सजीव और श्लाघनीय हैं। कहीं महाराष्ट्र के शिविरों का वर्णन है तो कहीं विषम गिरि दुर्गों पर आक्रमण का वर्णन है। कहीं मुगल परिवारों का दृश्य है तो कहीं सैन्य सज्जा का। अफजल खान के विलासमय जीवन के चित्रण में तथा यवन शिविरों के चित्रण में विनोद एवं हास्य का पुट है।

संस्कृत साहित्य में प्रकृति वर्णन का विशिष्ट स्थान है। व्यास जी ने प्रकृति के मनोरम पक्ष का बड़ी कुशलता के साथ वर्णन किया है। सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रोदय, चन्द्रास्त और रात्रि आदि के वर्णन में उन्होंने अपनी वर्णन कुशलता का परिचय दिया है। आश्रम की शोभा के वर्णन के प्रसंग में प्रकृति के संश्लिष्ट रूप का दर्शन होता है–**''कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परसहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं, पतंगि-कुल-कूजित-पूजितं पयः पूरितं सर आसीत्।''** इत्यादि।

पं. अम्बिकादत्त व्यास की वर्णन शैली सरल, स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण है। इसमें राजनैतिक दाँव-पेंचों तथा युद्ध कौशल को बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णित किया गया है। व्यास जी ने मानव आकृति का चित्रण भी सुन्दर ढंग से किया है।

5) **संवाद**– सजीव, रोचक और स्वाभाविक एवं सरल भाषा में संवाद विधान उपन्यास के कथानक का प्राण हुआ करता है। शिवराजविजय में संवादों की हृदयग्राहिता का यही रहस्य है। व्यास जी ने संवादों के अनावश्यक विस्तार का सर्वथा परित्याग किया है। संवादों की भाषा इतनी चुस्त और मुहावरेदार है कि वह विषय को अत्यन्त आकर्षक बना देती है –

दौवारिकः – आम् ! अग्रे कथ्यताम्।
संन्यासी – वयं च संन्यासिनो वनेषु गिरिकन्दरेषु च विचरामः।
दौवारिकः – स्यादेवम्! अग्रे अग्रे।' इत्यादि।

6) **सामाजिक चित्रण** – शिवराजविजय एक ऐसा उपन्यास है जिसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों और चरित्रों का समग्र रूप से वर्णन किया गया है। व्यास जी ने शिवराजविजय में मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया है। उस समय राजा अकर्मण्य, विलासी और द्वेषभाव से युक्त थे। हिन्दू जाति मुसलमानों के अत्याचार से पीड़ित थी। मुसलमानों का साम्राज्य भारत में निरन्तर बढता जा रहा था। हिन्दू कन्याओं का अपहरण, मन्दिरों और मूर्तियों का विध्वंस, पवित्र धर्मग्रन्थों के विनाश को वे अपना कर्तव्य मानते थे।

इस प्रकार विषम-परिस्थिति में वीर शिवाजी ने अपने शौर्य, पराक्रम और सदाचरण द्वारा हिन्दू जनता और हिन्दुत्व की रक्षा करने का संकल्प लिया। उन्होंने हिन्दू जनता में राष्ट्रभक्ति, आत्मविश्वास और मातृभूमि की सेवा का भाव जाग्रत किया। जिस विलासिता और व्यसन के कारण हिन्दू राजाओं का पतन हुआ उसी विलासिता और भोग के कारण मुस्लिम शासकों का भी पराभव हुआ। हिन्दुओं पर उनका अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। उनके अत्याचारों का वर्णन करते हुए व्यास जी कहते हैं–

''क्वचिद् दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद् धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्त्तनादाः, क्वचिद् रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद् गृहनिपातः, इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः।''

शिवाजी उन हिन्दू राजाओं में अपवाद रूप थे क्योंकि न तो उनमें अन्य हिन्दू राजाओं के समान कमजोरियाँ थीं और न ही स्वार्थ लिप्सा। वे वीर, पराक्रमी, राजनीति में पारंगत एवं कुशल प्रशासक थे। उनकी क्षमता, व्यूहरचना, ओजस्विता एवं धीरता अपूर्व थी इसलिये उन्होंने विशाल सेना वाले मुस्लिम शासक के विरुद्ध विजय प्राप्त की थी।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

i) शिवराजविजय विभक्त है –

क) उच्छ्वासों में　　ख) सर्गों में

ग) अङ्कों में　　घ) विरामों में

ii) शिवराजविजय के नायक हैं –

क) गौरसिंह　　ख) शिवाजी

ग) अफजल खान　　घ) औरंगजेब

iii) अफजल खान ने अपना शिविर लगाया –

क) भीमा नदी के तट पर　　ख) सिंह दुर्ग में

ग) प्रताप दुर्ग में　　घ) बेतवा नदी के तट पर

iv) गायक का वेष धारण करने वाला है –

क) श्यामसिंह　　ख) गौरसिंह

ग) रघुवीर सिंह　　घ) खड्गसिंह

v) शिवाजी ने नगरी को अपनी राजधानी बनाया –

क) आगरा　　ख) दिल्ली

ग) सतारा　　घ) कर्नाटक

2) नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (X) कथन का चयन कीजिए –

i) व्यास जी द्वारा प्रणीत शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है – ( )

ii) शिवराजविजय उपन्यास का प्रतिनायक औरंगजेब है – ( )

iii) राधास्वामी का वेष धारण करने वाला गौरसिंह है – ( )

iv) व्यास जी का प्रिय अलंकार उपमा है – ( )

v) शिवराजविजय का प्रधान रस वीर है – ( )

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) शिवराजविजय उपन्यास की पूर्ति में कितना समय लगा?

ii) शिवराजविजय में कितने विराम एवं निःश्वास हैं?

iii) ब्राह्मण कन्या का अपहरण किसने किया?

iv) रोशनआरा को किसने गिरफ्तार किया?

1) शिवराजविजय की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

2) भाषा-शैली, अलंकार एवं रस योजना की दृष्टि से शिवराजविजय का साहित्यिक मूल्यांकन कीजिए।

10.4 'शिवराजविजय' के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

प्रिय छात्रों! इकाई के इस अंश में आप शिवराजविजय के प्रमुख पात्रों यथा शिवाजी, रघुवीर सिंह, गौरसिंह आदि की चारित्रिक विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

10.4.1 शिवाजी का चरित्र-चित्रण

पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने शिवराजविजय में शिवाजी के उदात्त और आदर्श चरित्र का वर्णन किया है। वीर शिवाजी स्वधर्म रक्षा के व्रती, राजनीति में कुशल तथा भारतीय आदर्शों और संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। सनातन धर्म की रक्षा के लिए वे अपने प्राणों की बाजी लगाने के लिए भी तैयार रहते थे।

वीर शिवाजी अत्यन्त वीर एवं पराक्रमी थे। उनका नाम श्रवण मात्र से ही शत्रुओं के मन में भय व्याप्त हो जाता था। वे अत्यन्त देशभक्त थे। वे इस बात से दुःखित थे कि समस्त हिन्दू राजागण एकता के बन्धन में बँधकर यवनों को यहाँ से क्यों नहीं भगा देते। शिवाजी साम्राज्य के अभिलाषी थे। वे किसी भी हिन्दू राजा से मिलने के लिये सदैव तत्पर रहते थे किन्तु दुराचारी, अनाचारी यवन शासकों के साथ किसी भी प्रकार के सन्धि प्रस्ताव को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थे।

शिवाजी राजनीति में निपुण थे और **'शठे शाठ्यं समाचरेत्'** की परम्परा का अनुसरण करते हुये शठों के साथ शठता करने में तनिक भी संकोच नहीं करते थे। उनकी व्यवस्था ऐसी थी कि उनके शासन में प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को राष्ट्र के प्रति समर्पित समझता था। उस समय मुनियों के आश्रमों में भी राजनीति की शिक्षा दी जाती थी। प्रत्येक दो-दो कोस के मध्य सनातन धर्म की रक्षा के लिये मुनियों ने आश्रम बनाये थे। वे आश्रम के छप्पर और ओरियों के बीच शस्त्र छिपाकर रखते थे। वे सदैव हर प्रकार के संकट का सामना करने के लिये तैयार रहते थे।

शिवाजी ने गुप्तचरों का ऐसा जाल बिछाया हुआ था कि उन्हें शत्रुओं की गुप्त मन्त्रणाओं की सूचना मिल जाती थी। प्रत्येक व्यक्ति शिवाजी के प्रति इतना निष्ठावान् था कि वह शिवाजी को देवतुल्य मानता था। संन्यासी वेष में गौरसिंह द्वारा द्वारपाल की परीक्षा, रघुवीर सिंह का भयंकर आँधी तूफान की परवाह न कर तोरण दुर्ग पहुँचना आदि अनेक ऐसे प्रसंग हैं जिनसे उनकी कुशल राजनीतिज्ञता का बोध होता है। शिवाजी की वीरता और उनके सिपाहियों की निर्भीकता एवं युद्ध कौशल से शत्रुसेना सदा भयाक्रान्त रहती थी। शिवाजी की वीरता का वर्णन करते हुये व्यास जी लिखते है–

''कथ वा आगत एष शिववीर इति भ्रमेणापि सम्भाव्य अस्य विरोधिषु केचन मूर्च्छिता निपतन्ति, अस्य विस्मृतशस्त्रास्त्रा पलायन्ते, इतरे महात्रासा कुञ्चितोदरा विशिथिल वाससो नग्ना भवन्ति, अपरे च शुष्कमुखा दशनेषु तृण सन्धाय साग्रेडम् प्रणिपातपरम्परा रचयन्तो जीवन याचन्ते।''

10.4.2 रघुवीर सिंह का चरित्र-चित्रण

रघुवीर सिंह शिवाजी का एक विश्वस्त दूत है, इस पर तोरण के दुर्गाध्यक्ष को भी आश्चर्य होता है। रघुवीर सिंह विभिन्न कष्टों को सहते हुए तोरण दुर्ग की यात्रा करता है और मुख्य द्वार बन्द होने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता है 'इतने कम समय में इतनी दूर आ गये' यह पूछने पर वह उत्तर देता है कि 'प्रभु (शिवाजी) का ऐसा ही आदेश था।' इस प्रकार शिवाजी के सेवक अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए शिवाजी के आदेशों का पालन करते थे।

सौवर्णी का संगीत सुनकर और उसे देखकर रघुवीर सिंह का मन व्याकुल हो उठता है किन्तु वह शीघ्र ही अपने मन पर अधिकार कर लेता है। पुजारी द्वारा सौवर्णी से रघुवीर सिंह को माला तथा प्रसाद दिलाते समय दोनों का एक-दूसरे के प्रति पुनः आकर्षण बढता है, फिर भी सौवर्णी की मोती की माला को शिष्टता से उसके गले में डाल देता है।

10.4.3 अफजल खान का चरित्र-चित्रण

मुगल शासकों की परम्पराओं से घिरे हुए सेनापति अफजल खान का चरित्र अत्यन्त स्वाभाविक रूप से चित्रित किया गया है। अफजल खान को बीजापुर के नवाब शाइस्ता खाँ ने शिवाजी को जीतने के लिए प्रेषित किया था। उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह शिवाजी को जीवित ही पकड़कर लाएगा किन्तु अन्य शासकों के समान वह भी विलासी अदूरदर्शी, आत्मश्लाघी तथा सूक्ष्म राजनीतिक दाँव-पेंच से अनभिज्ञ था। परिणामतः वह तानरंग (गौरसिंह) के सामने ही अपने सेनानायकों को आदेश देते समय अपनी सारी योजनाएं प्रकट कर देता है–

'इति कथयति तानरङ्गे, अभिमान-परवश स स्वसहचरान् सम्बोध्य पुनरादिशत् भो-भो योद्धार! सूर्योदयात् प्रागेव भवन्त पञ्चापि सहस्त्राणि सादिना दशापि च सहस्त्राणि पत्तीना सज्जीकृत्य युद्धाय तिष्ठत। गोपीनाथपण्डित-द्वाराऽऽहूतोऽस्ति मया शिव वराक। तद् यदि विश्वस्य स समागच्छेत्, ततस्तु बद्ध्वा जीवन्त नेष्याम, अन्यथा तु सुदुर्गमेन धूलीकरिष्याम।'

इसके साथ ही व्यास जी ने अफजल खान के सैनिकों की कायरता, भयाकुलता तथा अत्याचारों को भी ऐतिहासिक तथ्यों के अनुकूल काव्यात्मक ढंग से चित्रित किया है–

'वय वलिन, अस्माकीनां महती सेना, तथापि न जानीमः किमिति कम्पत इव क्षुभ्यतीव च हृदयम्।'

10.4.4 गौरसिंह का चरित्र-चित्रण

गौरसिंह और श्यामसिंह किन परिस्थितियों में अपनी मातृभूमि का परित्याग कर कोंकण पहुँचते है तथा वहाँ पहुँचकर शिवाजी के आश्रम में क्या-क्या चमत्कार दिखाते हैं, व्यास जी ने इन सभी घटनाओं का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। व्यास जी ने गौरसिंह का जो चरित्र पाठकों के मनःपटल पर खींचा है वह वास्तव में अद्वितीय है। गौरसिंह बड़ी वीरता के साथ अपहृत बालिका को यवनों से छीनता है तथा यवन युवक की हत्या कर उसकी जेब से पत्र निकालता है जिससे अफजल खान की योजना का पता लग जाता है।

गौरसिंह वेष-परिवर्तन की कला में अत्यन्त निपुण है वह एक क्षण गायक की भूमिका का निर्वाह करता है तो अगले ही क्षण सैनिक, संन्यासी और गुप्तचर की भूमिका में आकर अपने कार्यों का निर्वाहन करता है। गौरसिंह एक अच्छा सुभट है, राजनीति में प्रवीण है, योद्धाओं में अग्रणी है तथा अपने कार्य में दृढ, आलस्यरहित तथा सदैव सजग एवं तत्पर रहने वाला है।

गौरसिंह इतना कुशल है कि बड़ी चतुरता से द्वारपाल की परीक्षा करता है तथा अफजल खान के शिविर में जाकर बड़ी चतुराई से उसकी भावी योजना की जानकारी लेता है और शिवाजी की प्रशंसा भी कर आता है साथ ही अफजल खान पर अपना प्रभाव छोड़ जाता है। वह संगीत कला में इतना निपुण है कि शत्रु और उसके सभी गायक उसके सामने हतप्रभ हो जाते हैं वह अपनी यात्रा का ऐसा वर्णन करता है कि जैसे अभी-अभी वहाँ से आ रहा हो। संन्यासी के वेष में द्वारपाल की परीक्षा लेता है। वह शिवाजी के द्वारा दिए गए कार्य को बड़ी निपुणता से सम्पादित करता है। दो-दो कोस की दूरी पर आश्रमों की स्थापना तथा विविध वेषधारी तपस्वियों के माध्यम से औरंगजेब तथा उसके सेनापति की प्रत्येक गतिविधियों की जानकारी लेता है, जिससे उसकी राजनीतिक चेतना का परिचय मिलता है।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) शिवाजी के चरित्र की चार विशेषताएं लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) रघुवीर सिंह ने शिवाजी की किस प्रकार सहायता की?

.....

.....

.....

.....

.....

iii) अफजल खान शिवाजी को क्यों नहीं जीत सका?

.....

.....

.....

.....

iv) गौरसिंह के चरित्र की तीन विशेषताएं लिखिए।

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए –

(क) शिवाजी (ख) रघुवीर सिंह (ग) गौरसिंह

10.5 सारांश

प्रिय छात्रों! इस इकाई में आपने अम्बिकादत्त व्यास रचित शिवराजविजय उपन्यास का परिचय प्राप्त किया। शिवराजविजय को संस्कृत साहित्य का प्रथम उपन्यास माना जाता है। यह एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस इकाई के अन्तर्गत आपने व्यास जी के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के विषय में जानकारी प्राप्त की। व्यास जी कुशाग्र बुद्धि एवं विलक्षण प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति थे। संस्कृत भाषा पर इनका पूर्ण अधिकार था। इनकी कुल 80 रचनायें प्राप्त होती हैं जिनमें शिवराजविजय का अत्यन्त महत्त्व है। अपनी प्रतिभा के परिणामस्वरूप व्यास जी ने 'घटिकाशतक' एवं 'शतावधान' की उपाधि प्राप्त की।

शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह उपन्यास तीन विरामों में विभक्त है, प्रत्येक विराम में 4-4 निःश्वास हैं। इस इकाई में आपने शिवराजविजय उपन्यास की कथावस्तु एवं उसकी घटना के विषय में सविस्तार अध्ययन किया। भाषा, भाव, रस, अलंकार, संवाद आदि पर यदि विचार करें तो वीर रस प्रधान इस उपन्यास की भाषा सरल एवं स्वाभाविक है। अपने भावों को अभिव्यक्त करने में एवं तात्कालिक सामाजिक स्थितियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में नितान्त सक्षम है। इस उपन्यास के नायक वीर शिवाजी हैं। इस इकाई में आपने शिवराजविजय उपन्यास के प्रमुख पात्रों यथा शिवाजी, रघुवीर सिंह, अफजल खान आदि पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का भी अध्ययन किया।

10.6 शब्दावली

कण्ठस्थ	–	जबानी याद
कुशाग्र	–	तीव्र बुद्धि वाला
अभिनव	–	नूतन, नया
अन्यतम	–	दूसरे से भिन्न, बहुतों से पृथक
ऐतिहासिक	–	इतिहास सम्बन्धी
उद्विग्न	–	व्याकुल
आलिंगन	–	गले लगाना
निष्कासित	–	बाहर निकालना
यायूजकैः	–	याज्ञिकों के द्वारा
उच्छृंखलता	–	स्वच्छन्दता, निरंकुशता
अभिव्यंजना	–	विवेचना, निरूपण
श्लाघनीय	–	प्रशंसनीय
अकर्मण्य	–	आलसी
व्यसन	–	बुरी आदतें

उदात्त – महान्

अनभिज्ञ – अपरिचित

10.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार, 2 कटरा रोड, इलाहाबाद – 211002

2) संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।

3) संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास – राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारती बुक कार्पोरेशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

4) शिवराजविजय – डॉ. रमाशंकर मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

10.8 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (i) (ग) बिहारी-विहार में (ii) (ख) दुर्गादत्त (iii) (क) अम्बिकादत्त व्यास (iv) (घ) नाटक।

2) i) व्यास जी का जन्म जयपुर के समीप रावत जी का धूला नामक ग्राम में हुआ था।

ii) 'काशी कविता वर्द्धिनी' सभा की ओर से व्यास जी ने 'सुकवि' की उपाधि प्राप्त की।

iii) व्यास जी ने 80 पुस्तकों की रचना की।

iv) शिवराजविजय अम्बिकादत्त व्यास की रचना है।

बोध प्रश्न 2

1) i) (घ) विरामों में (ii) (ख)शिवाजी (iii) (क) भीमा नदी के तट पर

iv) (ख) गौरसिंह (v) (ग) सतारा

2) i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य

3) i) शिवराजविजय उपन्यास की पूर्ति में 15 वर्ष का समय लगा।

ii) शिवराजविजय में तीन विराम हैं तथा प्रत्येक विराम में 4-4 निःश्वास हैं।

iii) ब्राह्मण कन्या का अपहरण एक यवन गुप्तचर ने किया।

iv) रोशनआरा को रघुवीर सिंह ने गिरफ्तार किया।

बोध प्रश्न 3

i) शिवाजी के चरित्र की चार विशेषताएं निम्नलिखित हैं –

i) शिवाजी अपने धर्म की रक्षा के लिये दृढ़प्रतिज्ञ थे।

ii) वे राजनीति में कुशल थे।

iii) वे भारतीय आदर्शों और संस्कृति के प्रतिनिधि थे।

iv) वे अत्यन्त वीर और पराक्रमी योद्धा थे।

ii) रघुवीर सिंह शिवाजी का एक विश्वस्त दूत है। वह विभिन्न कष्टों को सहते हुए तोरण दुर्ग की यात्रा करता है तथा इतने कम समय में तोरण दुर्ग पहुँचकर अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुये शिवाजी के आदेशों का पालन करता है।

iii) अफजल खान को बीजापुर के नवाब शाइस्ता खाँ ने शिवाजी को जीतने के लिये भेजा था किन्तु अन्य यवन शासकों के समान वह भी विलासी, अदूरदर्शी, आत्मश्लाघी तथा सूक्ष्म राजनीतिक दाँव-पेंचों से अनभिज्ञ था, परिणामतः वह शिवाजी को जीतने में असफल रहा।

iv) गौरसिंह के चरित्र की तीन विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

i) वह वेष परिवर्तन की कला में अत्यन्त प्रवीण था।

ii) वह राजनीति में प्रवीण था।

iii) वह अपने कार्य में दृढ आलस्यरहित तथा सदैव सजग एवं तत्पर रहने वाला था।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास)–अनुच्छेद 1-14

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 गद्यांश का अनुवाद– विष्णोर्माया भगवती ..... तावदस्माच्छात्रेणैवऽऽनीते''ति।

11.3 सारांश

11.4 शब्दावली

11.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- भगवान् सूर्य की विभिन्न क्रियाओं का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- गौरबटु और श्यामबटु के शारीरिक सौन्दर्य का अध्ययन करेंगे।
- ब्रह्मचारी गुरु की कुटिया के मनोरम दृश्य से परिचित होंगे।
- गौरबटु और श्यामबटु के पारस्परिक वार्तालाप का अध्ययन करेंगे।
- योगिराज के वैभव से परिचित होंगे।
- यवन गुप्तचर द्वारा अपहृत बालिका के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! संस्कृत गद्य-साहित्य पाठ्यक्रम का यह तृतीय खण्ड है। इस खण्ड की दसवीं इकाई में आपने शिवराजविजय का परिचय प्राप्त किया। शिवराजविजय तीन विरामों में विभक्त है तथा प्रत्येक विराम में चार निःश्वास हैं। शिवराजविजय का प्रथम निःश्वास आपके पाठ्यक्रम में रखा गया है। इस इकाई में आप शिवराजविजय के प्रारम्भिक गद्यांशों का अध्ययन करेंगे। व्यास जी ने भगवान् विष्णु की स्तुति के पश्चात् सूर्योदय वर्णन से अपने ग्रन्थ का प्रारम्भ किया है। भगवान् सूर्य का प्रकाश पूर्व दिशा में फैल रहा है। वह ही ब्रह्माण्ड के प्रकाशक हैं। वेद इन्हीं की महिमा का गान करते हैं ऐसे भगवान् सूर्य को प्रणाम करता हुआ कोई बटु अपनी पर्णकुटी से निकलता है। इस इकाई में गौरबटु और श्यामबटु की गुरु के प्रति उनकी सेवा एवं कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन किया गया है। यवन बालक द्वारा अपहृत बालिका के रोने की आवाज से योगिराज विचलित होकर भारतवर्ष की दशा जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। ब्रह्मचारी गुरु योगिराज से भारतवर्ष की तात्कालिक स्थिति वर्णित करते हैं जिसका वर्णन इस इकाई में किया गया है

11.2 गद्यांश का अनुवाद – विष्णोर्माया भगवती ..... तावदस्माच्छात्रेणैवऽऽनीते''ति

''विष्णोर्माया भगवती यया सम्मोहितं जगत्।'' (भागवतम्-10/1/25)

''हिंस्त्रः स्वपापेन विहिंसितः खलः साधुः समत्वेन भयाद् विमुच्यते।''

(भागवतम्-10/7/31)

सन्दर्भ– प्रस्तुत मंगलाचरण अम्बिकादत्त व्यास के शिवराजविजय से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत मंगलाचरण में भगवान् विष्णु की वन्दना की गई है।

अनुवाद– अखिल ब्रह्माण्ड नियामक भगवान् विष्णु की सत्त्वप्रधानात्मिका माया जिसने सम्पूर्ण चराचर जगत् को सुचारू रूप से मोहपाश में बाँध लिया है ऐसी भगवान् विष्णु की वह गुणावरिका माया सकल ऐश्वर्यशालिनी है।

दुष्ट हिंसक अपने पाप के द्वारा मृत्यु रूपी शैय्या को प्राप्त हो गया और साधु पुरुष अपनी समत्वबुद्धि (लौकिक और पारलौकिक जगत् का भेद कर सकने वाली विवेकबुद्धि) के कारण जन्ममरण रूपी भय से मुक्त हो गया।

शब्दार्थ– **विष्णोः** =भगवान् विष्णु की, वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरात्मकं प्रपञ्चमिति विष्णुः, तस्य विष्णोः, अखिल चराचर जगत् में व्याप्त हैं जो ऐसे विष्णु। **भगवती** =समग्र षड्गुणसम्पन्न ऐश्वर्यशालिनी भग पदार्थ-भगवत्व के विषय में प्रसिद्ध है। **यया** =जिस माया शक्ति के द्वारा। **जगत्** =चर और अचर से व्याप्त है ऐसा संसार। **सम्मोहितम्** =ब्रह्म की माया शक्ति के द्वारा मोहित कर लिया गया है जो। **हिंस्त्रः** =हिंसा करने वाला (हिंसक)। **स्वपापेन** =अपने पाप के द्वारा, **विहिंसितः** =मृत्यु को प्राप्त हो गया। **साधुः** =सज्जन पुरुष। **समत्वेन** =समत्व (विवेक) बुद्धि के कारण। **भयाद्** =भय से। **विमुच्यते** =मुक्त हो जाता है।

''अरुण एष प्रकाशः पूर्वस्यां भगवतो मरीचिमालिनः। एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचर-चक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोक-विमोकः कोक-लोकस्य, अवलम्बो रोलम्बकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य। अयमेव अहोरात्रं जनयति, अयमेव वत्सरं द्वादशसु भागेषु विभनक्ति, अयमेव कारणं षण्णामृतूनाम्, एष एवाङ्गीकरोति उत्तरं दक्षिणं चायनम्, एनेनैव सम्पादिता युगभेदाः, एनेनैव कृताः कल्पभेदाः, एनमेवाऽऽश्रित्य भवति परमेष्ठिनः परार्द्धसङ्ख्या, असावेव चर्कर्ति बर्भर्ति जर्हर्ति च जगत्, वेदा एतस्यैव वन्दिनः, गायत्री अमुमेव गायति, ब्रह्मनिष्ठा ब्राह्मणा अमुमेवाहरहरुपतिष्ठन्ते। धन्य एष कुलमूलं श्रीरामचन्द्रस्य, प्रणम्य एष विश्वेषामिति उदेष्यन्तं भास्वन्तं प्रणमन् निजपर्णकुटीरात् निश्चक्राम कश्चित् गुरुसेवनपटुविप्रबटुः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में सूर्यदेव को प्रणाम करके किसी ब्राह्मण बालक के पर्णकुटी से बाहर निकलने का वर्णन किया गया है।

अनुवाद– पूर्व दिशा में रश्मियों की माला से युक्त भगवान् सूर्य की यह लालिमा है। यह भगवान् सूर्यदेव नभोमण्डल के रत्न, नक्षत्र समूह के चक्रवर्ती सम्राट, स्वर्गाधिपति इन्द्र की

पूर्व दिशा रूपी नायिका के कुण्डल, ब्रह्माण्डरूपी भवन में प्रकाश करने वाले, कमल-समूह के अतिशय प्रिय, चक्रवाकों का शोक दूर करने वाले, भ्रमर-समूह के आश्रय, समस्त व्यवहार के प्रवर्तक और दिन के स्वामी हैं। यही दिन और रात के जनक हैं। यही वर्ष को बारह भागों में विभक्त करते हैं। ये ही छः ऋतुओं के कारण हैं। ये ही उत्तरायण और दक्षिणायन (सूर्य मार्ग को) स्वीकार करते हैं। इन्होंने ही सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग का भेद किया है। इन्होंने ही कल्पों का विभाजन किया है। इनका आश्रय लेकर ही ब्रह्मा की परार्द्ध (सबसे बड़ी और अन्तिम) संख्या पूरी होती है। यही भगवान् सूर्य बार-बार जगत् की उत्पत्ति, पालन और संहार करते हैं। वेद इन्हीं की वन्दना करते हैं। गायत्री इन्हीं का गान करती है। ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण प्रतिदिन इन्हीं की उपासना करते हैं। श्रीरामचन्द्र के कुल के मूल ये भगवान् सूर्य धन्य हैं। भगवान् सूर्य सभी के प्रणम्य हैं, यही विचार कर उदीयमान सूर्य को प्रणाम करता हुआ गुरुसेवा में कुशल कोई ब्राह्मण बालक अपनी पर्णकुटी से बाहर निकला।

शब्दार्थ– भगवतः =ऐश्वर्ययुक्त, **मरीचिमालिनः** = किरणों की माला वाले भगवान् सूर्य, **एषः** =यह, **अरुणः** =कुछ लाल वर्ण का, **एष भगवान्** =यह भगवान्, **आकाशमण्डलस्य** =आकाश मण्डल के, **मणिः** =रत्न हैं, **खेचरचक्रस्य** =नक्षत्रसमूह के, **चक्रवर्ती** =सम्पूर्ण विश्व के एकक्षत्र शासनकर्ता (सम्राट), **आखण्डलदिशः** =इन्द्र की पूर्व दिशा के, **ब्रह्माण्डभाण्डस्य** =ब्रह्माण्ड रूपी भवन अथवा ब्रह्माण्ड रूपी पात्र के, **पुण्डरीकपटलस्य** =श्वेतकमल समूह के, **प्रेयान्** =अतिशय प्रिय हैं, **कोकलोकस्य** =चक्रवाक समूह के, **शोकविमोकः** =दुःखहर्ता हैं, **रोलम्बकदम्बस्य** =भ्रमर समूह के, **अवलम्बः** = आश्रय हैं, **सर्वव्यवहारस्य** =सांसारिक व्यवहार के, **सूत्रधारः** =प्रवर्तक हैं, **इनः** =स्वामी हैं। **अहोरात्रं** =दिन-रात, **जनयति** =उत्पन्न करते हैं, **वत्सरं** =वर्ष को, **द्वादशसु भागेषु** =बारह भागों में, **विभनक्ति** =विभाजित करते हैं, **षण्णामृतूनां** =वसन्तादि छः ऋतुओं को, **अङ्गीकरोति** =स्वीकार करते हैं। **एनेनैव** =इन्हीं भगवान् सूर्य के द्वारा, **कल्पभेदाः** =कल्पों का विभाजन, **कृताः** =किया गया है, **एनमेवाश्रित्य** =इन्हीं भगवान् सूर्य का ही आश्रय कर, **परमेष्ठिन्** =ब्रह्मा की, **परार्द्धसङ्ख्या भवति** =अन्तिमा परार्द्ध नाम्नी संख्या पूरी होती है, **असावेव** =यही भगवान् सूर्य, **चर्कर्ति** =बार-बार उत्पन्न करते हैं, **बर्भर्ति** =भरण-पोषण करते हैं, **जर्हर्ति** =संहार करते हैं, **वन्दिनः** =स्तुतिवाचक हैं, **अमुमेव** =भगवान् सूर्य का ही, **अहरहः** =प्रतिदिन, **उपतिष्ठन्ते** =उपासना करते हैं, **कुलमूलं** =आदिवंशप्रवर्तक, **विश्वेषां** =सम्पूर्ण जनों के लिए, **प्रणम्य** =प्रणाम करने योग्य, **इति** =इस प्रकार से विचार कर, **उदेष्यन्तं भास्वन्तं** =उदीयमान भगवान् सूर्य को प्रणाम करता हुआ, **निजपर्णकुटीरात्** =अपनी पर्णकुटी से, **कश्चित्** =कोई, **गुरुसेवनपटुः** =गुरु सेवा में निपुण, **विप्रवटुः** =ब्राह्मण का बालक, **निश्चक्राम** =निकला।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– जनयति–जन्+णिच्+लट्+तिप् (बुधयुधनशजनेङ्प्रुद्रुस्त्रुभ्यो णेः (1/3/86) इत्यनेन परस्मैपदम्)। **विभनक्ति**–विभञ्ज+लट्+तिप्। **आश्रित्य**–आङ्+श्रिञ्+क्त्वा+ल्यप्। **चर्कर्ति**–डुकृञ् करणे+यङ् (लुक्)+लट्+तिप्। **बर्भर्ति**–भृञ्+यङ् (लुक्)+लट्+तिप्। **उपतिष्ठन्ते**–उप+स्था+लट्+झ ('उपाद्देवपूजासङ्गतिकरणमित्रकरणपथिष्विति वक्तव्यम्' इत्यनेन वार्तिकेनात्मनेपदम्)। **प्रणम्यः**–प्र+णम्+यत्। **प्रणमन्**–प्र+णम्+शतृ। **कुटीरः**–'ह्रस्वा कुटी' इत्यस्मिन्नर्थे 'कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः' (5/3/88) इत्यनेन र प्रत्ययः। **निश्चक्राम**–निर्+क्रमु पादविक्षेपे+लिट्।

"अहो! चिररात्राय सुप्तोऽहम्, स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव महान् पुण्यमयः समयोऽतिवाहितः, सन्ध्योपासन-समयोऽयमस्मद्गुरुचरणानाम्, तत् सपदि अवचिनोमि कुसुमानि" इति चिन्तयन् कदलीदलमेकमाकुञ्च्य, तृणशकलैः सन्धाय, पुटकं विधाय, पुष्पावचयं कर्त्तुमारेभे।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में ब्राह्मण बालक के फूल तोड़ने का वर्णन किया गया है।

अनुवाद– ओह! खेद है, मैं चिरकाल तक शयन करता रहा। निद्रारूपी जाल में फंसकर मैंने बड़ा पुण्यमय समय गंवा दिया। यह हमारे गुरु जी की सन्ध्योपासना का समय है। अतः शीघ्र ही फूल तोड़कर लाता हूँ। यह सोचता हुआ वह विप्रबालक केले के एक पत्ते को तोड़कर, तिनकों से जोड़कर, दोना बनाकर, पुष्प चुनना आरम्भ कर दिया।

शब्दार्थ– **अहो!** =आश्चर्ययुक्त खेद है, **चिररात्राय** =बहुत देर तक, **अहम्** =मैं (द्विजबालक), **सुप्तः** =सोता रहा, **स्वप्नजालपरतन्त्रेणैव** = निद्रारूपी जाल के अधीन होने से ही, **महान् पुण्यमयः** =अत्यन्त मूल्यवान्, **समयः** = काल, **अतिवाहितः** =व्यर्थ नष्ट कर दिया, **अस्मद्गुरुचरणानाम्** =हमारे गुरु चरणों की, **अयम्** =यह, **सन्ध्योपासनसमयः** =सन्ध्या उपासना का समय है, **तत्** = इसलिए, **सपदि** =शीघ्र, **कुसुमानि** =फूलों को, **अवचिनोमि** = तोड़कर संग्रह करता हूँ, **इति** =इस प्रकार से, **चिन्तयन्** =मन में विचार करता हुआ, **एकम्** =एक, **कदलीदलम्** =केले के पत्ते को, **आकुञ्च्य** =तोड़कर, **तृणशकलैः** =छोटे तिनकों के टुकड़ों से, **सन्धाय** = जोड़कर, **पुटकं** =पुष्पों को रखने के लिये पात्र (दोना), **विधाय** =बनाकर, **पुष्पावचयं** =फूलों का चयन, **कर्त्तुम्** =करने के लिये, **आरेभे** = आरम्भ किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **सुप्तः**–स्वप्+क्त। **पुण्यमयः**–पुण्य+मयट्। **अवचिनोमि**–अव+चिञ्+लट्+मिप्। **चिन्तयन्**–चिन्त+शतृ। **आकुञ्च्य**–आ+कुञ्च+क्त्वा+ल्यप्। **सन्धाय**–सम्+धा+क्त्वा+ल्यप्। **आरेभे**–आङ्+रम्भ्+लिट्+तिप्।

बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः,आयतललाटः,सुबाहुर्विशाललोचनश्चाऽऽसीत्।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में बटुक ब्राह्मण के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

अनुवाद– वह बटुक ब्राह्मण आकृति से सुन्दर और गौर वर्ण का था। जटाओं से ब्रह्मचारी प्रतीत होता था। उसकी अवस्था अभी सोलह वर्ष पूर्ण नहीं हुई थी। उसका कण्ठ शङ्ख के समान सुन्दर और मस्तक विशाल था, रमणीय भुजाओं वाला और बड़ी-बड़ी आँखों वाला था।

शब्दार्थ– **असौ** =वह, **बटुः** =ब्रह्मचारी, **आकृत्या** =आकार से, **सुन्दरः** =रमणीय, **वर्णेन** =रङ्ग से, **गौरः** =धवलवर्ण, **जटाभिः** =जटाओं के द्वारा, **ब्रह्मचारी** =विप्र बालक, **वयसा** =अवस्था से, **षोडशवर्षदेशीयः** =ईषद् असमाप्त सोलहवर्ष वाला, **कम्बुकण्ठः** = शंख के समान ग्रीवावाला, **आयतललाटः** =चौड़े ललाट वाला, **सुबाहुः** = सुन्दर भुजाओं वाला, **विशाललोचनः** = दीर्घ नेत्रों वाला, **च** = और, **आसीत्** =था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **षोडशवर्षदेशीयः**–षोडशवर्ष+देशीयः, 'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः' इत्यनेन देशीयर् प्रत्ययः।**जटाभिः**– जटा+भिस्, 'इत्थम्भूतलक्षणे' इत्यनेन तृतीया।

कदलीदलकुञ्जायितस्य एतत्कुटीरस्य समन्तात् पुष्पवाटिका, पूर्वतः परम-पवित्र-पानीयं परस्सहस्त्र-पुण्डरीक-पटल-परिलसितं पतत्रि-कुल-कूजित-पूजितं पयः-पूरितं सर आसीत्।दक्षिणतश्चैको निर्झर-झर्झर-ध्वनि-ध्वनित-दिगन्तरः फल-पटलाऽऽस्वाद-

चपलित-चञ्चु-पतङ्गकुलाऽऽक्रमणाधिक-विनत-शाख-शाखि-समूह-व्याप्तः सुन्दरकन्दरः पर्वतखण्ड आसीत्।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– व्यास जी ने प्रस्तुत गद्यांश में कुटिया के चारों ओर के मनोरम दृश्य का वर्णन किया है।

अनुवाद– केले के वृक्षों से घिरी होने के कारण कुञ्ज के तुल्य प्रतीत होने वाली इस कुटिया के चारों ओर एक पुष्पों का उद्यान था। पूर्व की ओर अत्यन्त पवित्र जलवाला, हजारों श्वेतकमलों से समलङ्कृत, पक्षियों के कलरव से सुशोभित, पानी से पूर्णतः परिपूरित (भरा हुआ) एक सरोवर (तालाब) था। दक्षिण की ओर झरने की झर-झर ध्वनि से दिशाओं को मुखरित करने वाली, फल-समूह को खाने से चंचल हो गई चोंच वाले पक्षियों के फुदक-फुदक कर बैठने के आक्रमण से और अधिक झुक जाने वाली शाखाओं वाले पेड़ों से व्याप्त तथा सुन्दर गुफाओं वाली एक पहाड़ी (पर्वत का टुकड़ा) था।

शब्दार्थ– कदलीदलकुञ्जायितस्य =केले के पत्तों से घिरे होने के कारण कुञ्ज के समान प्रतीत होने वाली, **एतत्कुटीरस्य** =इस कुटिया के, **समन्तात्** =चारों ओर, **पुष्पवाटिका** =पुष्पों का उद्यान, **पूर्वतः** =पूर्व की ओर, **परमपवित्रपानीयं** =अत्यन्त पवित्र जलवाला, **परस्सहस्त्रपुण्डरीकपटलपरिलसितम्** =हजारों श्वेतकमलों के समूह से सुशोभित, **पतत्रिकुलकूजितपूजितम्** =पक्षियों के समूह के कलरव से अलंकृत, **पयःपूरपूरितम्** =जल के प्राचुर्य से भरा हुआ, **सरः** =तालाब, **आसीत्** =था, **दक्षिणतः** =दक्षिण की ओर, **निर्झरझर्झरध्वनिध्वनितदिगन्तरः** =झरने की झर-झर ध्वनि से दिशाओं को शब्दायमान करने वाला, **फलपटलास्वादचपलितचञ्चुपतङ्गकुलाक्रमणाधिकविनतशाख शाखिसमूहव्याप्तः** =फलों के समूह के भक्षण से चञ्चल चोंचों वाले पक्षि-समूह के आक्रमण से झुकी हुई शाखाओं वाले पादपों के समूह से व्याप्त, **सुन्दरकन्दरः** =सुन्दर गुफाओं वाला, **पर्वतखण्डः** =पहाड़ का टुकड़ा (पहाड़ी), **आसीत्** =थी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **कुञ्जायित**–कुञ्ज+क्यङ्+क्त, 'कर्तुः क्यङ् सलोपश्च' इत्यनेन क्तप्रत्ययः। **पूर्वतः**–पूर्व+तस् 'तसिलादिश्वाकृत्वसुचः' इत्यनेन पुंवत्त्वम्। **दक्षिणतः**–दक्षिण+तस्। **चपलित**–चपल+इतच्। **विनत**–वि+नम्+क्त। **शाखिनः**–शाखा+इनि।

यावदेष ब्रह्मचारी बटुरलिपुञ्जमुद्धूय कुसुमकोरकानवचिनोति; तावत् तस्यैव सतीर्थ्योऽपरस्तत्समानवयाः कस्तूरिका-रेणु-रूषित इव श्यामः, चन्दन-चर्चित-भालः, कर्पूरागुरु-क्षोद-च्छुरित-वक्षो-बाहु-दण्डः, सुगन्ध-पटलैरुन्निद्रयन्निव निद्रा-मन्थराणि कोरक निकुरम्बकान्तराल-सुप्तानि मिलिन्द-वृन्दानि झटिति समुपसृत्य निवारयन् गौरबटुमेवमवादीत्–

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– पहले ब्रह्मचारी को फूल तोड़ने से मना करते हुए किसी दूसरे ब्रह्मचारी का वर्णन प्रस्तुत गद्यांश में किया गया है।

अनुवाद– जैसे ही वह ब्रह्मचारी बालक भौंरों को उड़ाकर फूल की कलियों को चुनता है, वैसे ही उसका सहपाठी, समान अवस्था वाला दूसरा ब्रह्मचारी, कस्तूरिका के चूर्ण के लेप से सना हुआ सा श्यामवर्ण वाला, मस्तक पर चन्दन लगाए हुए, कर्पूर-मिश्रित अगरु के चूर्ण से सुशोभित वक्षस्थल एवं भुजाओं वाला, निद्रा से अलसाये हुए, कलियों के अन्दर सोये हुए भ्रमर-समूह को सुगन्ध से जगाता हुआ सा शीघ्रता से समीप आकर उस गौर ब्रह्मचारी बालक से पुष्प-चयन के लिये मना करता हुआ इस प्रकार बोला।

शब्दार्थ– यावत् =जब तक, **एषः** =यह, **ब्रह्मचारी बटुः** =ब्रह्मचारी बालक, **अलिपुञ्जम्** =भ्रमर-समूह को, **उद्धूय** =उड़ाकर, **कुसुमकोरकान्** =पुष्प-कलियों को, **अवचिनोति** =तोड़ता है, **तावत्** =तब तक, **तस्यैव** =उसी का, **सतीर्थ्यः** =सहाध्यायी, **अपरः** =दूसरा, **तत्समानवयाः** =उसके समान अवस्था वाला, **कस्तूरिकारेणुरूषित इव** =कस्तूरी के चूर्ण से लिप्त हुए के समान, **श्यामः** =कृष्णवर्ण, **चन्दनचर्चितभालः** =चन्दन के लेप से सुशोभित ललाट वाला, **कर्पूरागुरुक्षोदच्छुरितवक्षोबाहुदण्डः** =कर्पूर मिश्रित अगरु के चूर्ण से अनुलिप्त वक्षःस्थल एवं भुजाओं वाला, **सुगन्धपटलैः** =सौरभ-समूह से, **उन्निद्रयन्निव** =जगाता हुआ-सा, **निद्रामन्थराणि** =निद्रा से अलसाए हुए, **कोरकनिकुरम्बकान्तरालसुप्तानि** =कलियों के समूह के अन्दर सोये हुए, **मिलिन्दवृन्दानि** =भ्रमर समूहों को, **झटिति** =शीघ्र, **समुपसृत्य** =समीप आकर, **निवारयन्** =पुष्प चयन के लिए मना करता हुआ, **गौरबटुम्** =शुभ्रवर्ण के बालक से, **एवम्** =इस प्रकार, **अवादीत्** =बोला।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उद्धूय–उद्+धूञ्+ल्यप्। **अवचिनोति**–अव+चिञ्+लट्+तिप्। **सतीर्थ्यः**–'समानतीर्थे वासी' ति यत्प्रत्यये, 'तीर्थे ये' इत्यनेन सादेशः। **उन्निद्रयन्**–उद्+निह+णिच्=शतृ, 'तत्करोति तदाचष्टे' इत्यनेन णिचि। **समुपसृत्य**–सम्+सृज्+ल्यप्। **निवारयन्**–नि+वृ+णिच्+शतृ। **अवादीत्**–वद्+लुङ्+तिप्।

''अलं भो अलम्! मयैव पूर्वमवचितानि कुसुमानि, त्वं तु चिरं रात्रावजागरीरिति क्षिप्रं नोत्थापितः, गुरुचरणा अत्र तडागतटे सन्ध्यामुपासते, संस्थापिता मया निखिला सामग्री तेषां समीपे। यां च सप्तवर्षकल्पाम्, यावनत्रासेन निःशब्दं रुदतीम्, परमसुन्दरीम्, कलित-मानव-देहामिव सरस्वतीं सान्त्वयन् मरन्दमधुरा अपः पाययन्, कन्दखण्डानि भोजयन्, त्वं त्रियामाया यामत्रयमनैषीः; सेयमधुना स्वपिति, उद्बुद्ध्य च पुनस्तथैव रोदिष्यति, तत् परिमार्गणीयान्येतस्याः पितरौ गृहं च''–

इति संश्रुत्य उष्णं निःश्वस्य यावत् सोऽपि किञ्चिद् वक्तुमियेष तावदकस्मात् पर्वतशिखरे निपपात उभयोर्दृष्टिः।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में द्वितीय ब्रह्मचारी द्वारा कन्या का वर्णन किया गया है।

अनुवाद– 'बस भाई बस! मेरे द्वारा पहले ही पुष्पों का चयन कर लिया गया है। तुम रात में देर तक जागते रहे थे, इसलिए तुम्हें प्रातःकाल शीघ्र नहीं जगाया। गुरु जी यहाँ तालाब के किनारे संध्याकालीन उपासना कर रहे हैं। पूजा की समस्त सामग्री मैंने उनके पास रख दी है और जो लगभग सात वर्ष की अवस्था वाली, यवनों के भय से शब्दरहित सिसक-सिसक कर रोती हुई, परम सुन्दरी, मानव-शरीर धारण किये हुए सरस्वती के समान, पुष्परस-मिश्रित मीठा जल पिलाते हुए, कन्दों के टुकड़े खिलाते हुए तुमने रात्रि के तीन प्रहर बिता दिये थे, वह इस समय सो रही है, जागकर फिर वैसे ही रोयेगी। इसलिए उसके माता-पिता और घर का पता लगाना चाहिये। यह सुनकर गर्म साँस लेकर, ज्यों ही उसने (गौरबटु ने) कुछ भी कहना चाहा, तब तक त्यों ही अकस्मात् उन दोनों की दृष्टि पर्वत की चोटी पर पड़ी।

शब्दार्थ– अलं भो अलम् =पर्याप्त हो गया, अब बस करो। **मयैव** =मेरे द्वारा ही, **पूर्वम्** =पहले, **कुसुमानि** =फूल, **अवचितानि** =चुन लिए गये हैं, **त्वं तु** =तुम तो, **चिरम्** =देर तक, **रात्रौ** =रात में, **अजागरीः** =जागते रहे, **इति** =इसलिये, **क्षिप्रं** =शीघ्र, **नोत्थापितः** =नहीं उठाये गये। **गुरुचरणाः** =पूज्यपाद गुरुजी, **अत्र** =इस, **तडागतटे** =कमलों से भरे हुए सरोवर के तट पर, **सन्ध्याम्** =प्रातःकालीन पूजा, **उपासते** =उपासना कर रहे हैं। **मया** =मेरे द्वारा, **निखिला** =सम्पूर्ण, **सामग्री** =पूजनसामग्री, **तेषां समीपे** =उनके निकट,

संस्थापिता =रख दी गई है। **यां च** =जिस बालिका को, **सप्तवर्षकल्पाम्** =लगभग 7 वर्ष की अवस्था वाली, **यावनत्रासेन** =यवन (मुगल) के भय से, **निःशब्दं** =शब्दरहित अर्थात् आवाज को बाहर निकाले बिना, **रुदतीम्** =सिसकियाँ भरकर रोती हुई, **परमसुन्दरीम्** =अतिशय सौन्दर्य को धारण किये हुए, **सरस्वतीं** =सरस्वती जैसी को, **सान्त्वयन्** =धैर्य बंधाते हुए, **मरन्दमधुराः** =पुष्पों के रस से मिश्रित होने के कारण मीठा, **अपः** =जल को, **पाययन्** =पिलाते हुए, **कन्दखण्डानि** =कन्द के खण्डों को, **भोजयन्** =खिलाते हुए, **त्वं** =तुम, **त्रियामायाः** =रात्रि के, **यामत्रयम्** =तीन प्रहर को, **अनैषीः** = बिता दिये, **सेयम्** =वह यह, **स्वपिति** =सो रही है, **उद्बुद्धय च** =जागकर, **पुनः** =फिर, **तथैव** =उसी प्रकार, **रोदिष्यति** =रोयेगी, **तत्** =इसलिये, **परिमार्गणीयानि** =खोजे जाने चाहिये, **एतस्याः** =इसके, **पितरौ** =माता-पिता को, **गृहञ्च** =और घर को, **इति** =ऐसा, **संश्रुत्य** =सुनकर, **उष्णं** =गरम, **निःश्वस्य** =साँस लेकर, **यावत्** =जब तक, **सोऽपि** =वह भी, **किञ्चित** =कुछ, **वक्तुं** =कहने के लिए, **इयेष** =इच्छा किया, **तावत्** =तब तक, **अकस्मात्** =सहसा, **पर्वतशिखरे** =पर्वत के चोटी पर, **उभयोः** =उन दोनों की, **दृष्टिः** =आँखें, **निपपात** =पड़ी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **अवचितानि**–अव+चिञ्+क्त। **अजागरीः**–जागृ+लुङ्+सिप् (म.पु.ए.व.)। **उत्थापितः**–उत्+स्था+पुक्+निच्+क्त।**उपासते**–उप+ आस्+लट्।**संस्थापिता**–सम्+स्था+णिच्+पुक्+क्त (स्त्री.)। **सप्तवर्षकल्पाम्**–'ईषद् असमाप्ति' अर्थ में 'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः' इस सूत्र से कल्पप् प्रत्यय। **पाययन्**–पा+णिच्+शतृ। **रुदतीम्**–रुद्+शतृ+ङीप्(स्त्री.द्वि.ए.व.) । **भोजयन्**–भुज्+णिच्+शतृ। **अनैषीः**–नी+लुङ्+सिप्(म.पु.ए.व.)। **उद्बुद्धय**–उद्+बुध+क्त्वा+ल्यप्। **परिमार्गणीयानि**–परि+मृज्+अनीयर्। **संश्रुत्य**–सम्+श्रु+ल्यप्। **निःश्वस्य**–निः+श्वस्+ल्यप्। **वक्तुम्**–वच्+तुमुन्। **इयेष**–इष्+लिट्+तिप्। **दृष्टिः**–दृश्+क्तिन्। **निपपात**–नि+पत्+लिट्+तिप्।

तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति विश्वसन्ति स्म। स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारि-बटुभ्यामदर्शि।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में गौरबटु और श्यामबटु के द्वारा किसी ब्रह्मचारी के देखे जाने का वर्णन व्यास जी ने किया है।

अनुवाद– उस पर्वत पर एक विशाल गुफा थी। उसी गुफा में एक महामुनि समाधि लगाये हुए थे। उन्होंने समाधि कब स्वीकार की यह कोई नहीं जानता। ग्राम प्रधान तथा अन्य ग्रामीण कभी-कभी आकर उनकी पूजा, प्रणाम तथा स्तुति कर आते थे। कोई उन्हें कपिल, कोई लोमश, कोई जैगीषव्य तथा अन्य जन उन्हें मार्कण्डेय मानते थे। वही महामुनि इस समय पर्वतशिखर से उतरते हुए ब्रह्मचारी बालक गौरबटु और श्यामबटु के द्वारा देखे गये।

शब्दार्थ– **तस्मिन्** =उस, **पर्वते** =पर्वत पर, **एकः** =एक, **महान्** =विशाल, **कन्दरः** =गुफा, **आसीत्** =थी। **तस्मिन्नेव** =उस गुफा में ही, **एकः** =एक, **महामुनिः** =महर्षि, **समाधौ** =चित्तवृत्तिनिरोधात्मक योग में, **तिष्ठति स्म** =बैठे थे, **सः** =वह महर्षि, **कदा** =किस समय, **समाधिम्** =समाधि को, **अङ्गीकृतवान्** =स्वीकार किया, **इति** =यह, **कोऽपि** =कोई भी, **न** =नहीं, **वेत्ति** =जानता है। **ग्रामणी-ग्रामीणग्रामाः** =ग्राम के प्रधान तथा ग्रामवासियों का समूह, **मध्ये-मध्ये** =बीच-बीच में, **समागत्य** =आकर, **तम्** =उस

समाधिरत योगिराज को, **पूजयन्ति** =पूजा करते हैं, **प्रणमन्ति** =प्रणाम करते हैं, **स्तुवन्ति** =स्तुति करते हैं, **तं** =उन्हें, **केचित्** =कुछ लोग, **कपिल इति** =कपिल मुनि हैं ऐसा, **अन्ये** =अन्य जन, **लोमश इति** =लोमश ऋषि हैं ऐसा, **इतरे** =अन्य लोग, **जैगीषव्य इति** =जैगीषव्य मुनि हैं ऐसा, **अन्ये च** =और अपर लोग, **मार्कण्डेय इति** =मार्कण्डेय मुनि हैं ऐसा, **विश्वसन्ति स्म** =विश्वास करते थे। **स एव** =वह ही, **अयम्** =यह मुनि, **अधुना** =इस समय, **शिखरात्** =पर्वत चोटी से, **अवतरन्** =उतरते हुए, **ब्रह्मचारिबटुभ्याम्** =गौरबटु और श्यामबटु के द्वारा, **अदर्शि** =देखे गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **वेत्ति**–विद्+लट्+तिप्। **ग्रामणी**–ग्राम+नी+क्विप्। **ग्रामीणः**–ग्रामे भव इति ग्रामीणः, ग्राम+खञ्, 'ग्रामाद्यखञौ' इत्यनेन सूत्रेण। **अदर्शि**–दृश्+कर्मवाच्य में लुङ्, प्रथम पु. एकवचन।

बोध प्रश्न 1

1) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों पर सही (√) का चिह्न लगाइए –**

   i) शिवराजविजय में निःश्वास है – 3/4

   ii) शिवराजविजय उपन्यास के नायक हैं– अफजल खाँ/वीर शिवाजी

   iii) उत्तरायण और दक्षिणायन को स्वीकार करते हैं – सूर्य/चन्द्रमा

   iv) गुरु जी सन्ध्याकालीन उपासना कर रहे थे– कुटी के भीतर/तालाब के किनारे

2) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –**

   i) शिवराजविजय के मंगलाचरण में किसकी वन्दना की गयी है?

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   ii) चक्रवाकों के शोक को दूर करने वाले कौन हैं?

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   iii) सोलह वर्ष की अवस्था वाला ब्राह्मण बटु कौन था?

   .....

   .....

   .....

   .....

iv) 'अवचिनोति' पद में किस धातु का प्रयोग किया गया है?

.....

.....

.....

.....

.....

v) गौरबटु और श्यामबटु ने पर्वतशिखर से उतरते हुए किसको देखा?

.....

.....

.....

.....

.....

vi) 'ग्रामीण' में किस प्रत्यय का प्रयोग किया गया है?

.....

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न –

1) ब्रह्मचारी गुरु के आश्रम का वर्णन कीजिए।

2) गौरबटु एवं श्यामबटु के शारीरिक सौष्ठव का वर्णन कीजिए।

"अहो! प्रबुद्धो मुनिः! प्रबुद्धो मुनिः! इत एवाऽऽगच्छति, इत एवाऽऽगच्छति, सत्कार्योऽयम् सत्कार्योऽयम्" इति तौ सम्भ्रान्तौ बभूवतुः।

अथ समापित-सन्ध्यावन्दनादिक्रिये समायाते गुरौ, तदाज्ञया नित्यनियम-सम्पादनाय प्रयाते गौरबटौ, छात्रगण-सहकारेण प्रस्तुतासु च स्वागत-सामग्रीषु, "इत आगम्यतां सनाथ्यतामेष आश्रमः" इति सप्रणाममभिगम्य वदत्सु निखिलेषु, योगिराज आगत्य तन्निर्दिष्ट काष्ठ-पीठं भास्वानिवोदयगिरिमारुरोह, उपाविशच्च।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में मुनि के जागने का वर्णन किया गया है।

अनुवाद– अहो! मुनि जग गये, मुनि जग गये। इधर ही आ रहे हैं, इधर ही आ रहे हैं। इनका सत्कार करना चाहिये, इनका सत्कार करना चाहिये। यह कहते हुए वे दोनों बटु हर्ष से व्याकुल हो गये।

तदनन्तर सन्ध्या वन्दनादि कृत्य समाप्त करके गुरु के आ जाने और उनकी आज्ञा से गौर ब्रह्मचारी के सन्ध्यावन्दन आदि नित्यकर्म करने के लिए चले जाने पर, छात्रों के सहयोग से स्वागत सामग्री के प्रस्तुत हो जाने और प्रणामपूर्वक सभी उपस्थित लोगों के 'इधर पधारिये, इस आश्रम को सनाथ कीजिए' यह कहने पर योगिराज आकर उनके द्वारा निर्दिष्ट काष्ठ निर्मित चौकी पर उदयाचल पर सूर्य की भाँति चढ़कर बैठ गये।

शब्दार्थ– अहो =आश्चर्य और प्रसन्नता का सूचक है, **प्रबुद्धो मुनिः** =जग गये महर्षि, **इत एवागच्छति** =इधर को ही आ रहे हैं, **सत्कार्योऽयम्** =यह सत्कार के योग्य हैं, **इति** =इस प्रकार से, **तौ** =वे दोनों, **सम्भ्रान्तौ** =हर्ष से व्याकुल, **बभूवतुः** =हो गये।

अथ =तदनन्तर, **समापितसन्ध्यावन्दनादिक्रिये** =सन्ध्या-वन्दनादि क्रिया समाप्त कर चुके हुए, **गुरौ** =गुरुजी के, **समायाते** =आने पर, **तदाज्ञया** =उनकी आज्ञा से, **नित्यनियमसम्पादनाय** =नित्य नियम सन्ध्या वन्दनादि करने के लिये, **गौरबटौ** =गौरबटु के, **प्रयाते** =चले जाने पर, **छात्रगणसहकारेण** =शिष्य समुदाय की सहायता से, **स्वागतसामग्रीषु** =स्वागत योग्य सामग्रियों के, **प्रस्तुतासु** =समुपस्थित हो जाने पर, **इत आगम्यताम्** =इधर आइये, **सनाथ्यताम् एष आश्रमः** =इस आश्रम को समलंकृत कीजिए, **इति** =इस प्रकार से, **सप्रणामम्** =प्रणामपूर्वक, **अभिगम्य** =पास आकर, **तन्निर्दिष्टकाष्ठपीठम्** =मुनि के द्वारा संकेतित चौकी पर, **भास्वान् इव** =सूर्य के समान, **उदयगिरिम्** =उदयाचल पर, **आरुरोह** =चढ़ गये, **उपाविशत् च** =और बैठ गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – समायाते–सम्+आ+या+क्त; 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' इत्यनेन सप्तमी। **प्रस्तुतासु**–प्र+स्तु+क्त+टाप्+सुप्, **अभिगम्य**–अभि+गम्+क्त्वा+ल्यप्। **वदत्सु**–वद्+शतृ (सप्तमी बहुवचन)। **आगत्य**–आ+गम्+क्त्वा+ल्यप्।

तस्मिन् पूज्यमाने, ''योगिराडुत्थित'' इति ''आयात'' इति च आकर्ण्य कर्णपरम्परया बहवो जनाः परितः स्थिताः। सुघटितं शरीरम्, सान्द्रां जटाम्, विशालान्यङ्गानि, अङ्गारप्रतिमे नयने, मधुरां गम्भीरां च वाचं वर्णयन्तश्चकिता इव सञ्जाताः।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– योगिराज के तपस्वी शरीर को देखकर लोगों के आश्चर्यचकित हो जाने का वर्णन प्रस्तुत गद्यांश में किया गया है।

अनुवाद– उस योगिराज के पूजन के समय ही 'महामुनि उठ गये हैं और यहाँ आये हुए हैं, यह वृत्तान्त क्रमशः एक-दूसरे के कर्णपरम्परा से सुनकर वहाँ चारों ओर बहुत से लोग एकत्रित हो गये। उनके सुगठित शरीर, घनी जटाओं, विशाल अङ्गों, अङ्गार सदृश नेत्रों तथा मधुर और गम्भीर वाणी की प्रशंसा करते हुए लोग आश्चर्यचकित हो गये।

शब्दार्थ– तस्मिन् पूज्यमाने =जब उनकी पूजा हो रही थी, **योगिराड्** =महामुनि, **उत्थितः** =उठ गये हैं, **इति** =ऐसा, **आयातः** =आये हुए हैं, **कर्णपरम्परया** =एक कान से दूसरे कान तक अर्थात् कानों कान, **आकर्ण्य** =सुनकर, **बहवो जनाः** =बहुत से मनुष्य, **परितः** =चारों ओर, **स्थिताः** =एकत्र हो गये। **सुघटितं** =सुगठित, **शरीरम्** =देह, **सान्द्रां** =घनी, **जटाम्** =जटा को, **विशालान्यङ्गानि** =विशाल अङ्गों को, **अङ्गारप्रतिमे** =अङ्गार सदृश, **नयने** =नेत्र में, **मधुरां** =मीठी, **च** =और, **गम्भीरां** =गम्भीर, **वाचं** =वाणी की, **वर्णयन्तः** =प्रशंसा करते हुए, **चकिता इव** =आश्चर्यान्वित से, **सञ्जाताः** =हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी–**योगिराट्**–योगिन्+राज+क्विप्। **पूज्यमाने**–पूज्+य+शानच्। **उत्थितः**–उत्+स्था+क्त। **आयातः**–आ+या+क्त। **वर्णयन्तः**–वर्ण+णिच्+शतृ। **सञ्जाताः**–सम्+जन्+क्त।

अथ योगिराजं सम्पूज्य यावदीहितं किमपि आलपितुम्, तावत् कुटीराद् अश्रूयत तस्या एव बालिकायाः सकरुण-रोदनम्।

ततः ''किमिति? कुत इति? केयमिति? कथमिति?'' पृच्छापरवशे योगिराजे ब्रह्मचारिगुरुणा बालिकां सान्त्वयितुं श्यामबटुमादिश्य कथितम्–

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– योगिराज कन्या का रुदन सुनकर उसके विषय में जानने की इच्छा प्रकट करते हैं।

अनुवाद– तदनन्तर योगिराज का विधिवत् पूजन-सत्कार कर ब्रह्मचारियों के गुरु ने जैसे ही योगिराज से कुछ बात करने की इच्छा की, वैसे ही कुटिया से उसी पूर्ववर्णित बालिका का करुण-विलाप सुनाई पड़ा।

तब योगिराज के, ''यह क्या है? यह कहाँ से आई है? यह कौन है? यह कैसे आई है? यह पूछने पर ब्रह्मचारियों के गुरु ने कन्या को शान्त करने के लिये श्याम बटु को आदेश देकर यह कहना प्रारम्भ किया।

शब्दार्थ– अथ =अनन्तर, **योगिराजम्** =योगिराज का, **सम्पूज्य** =स्वागत-सत्कार करके, **यावत्** =ज्यों ही, **ईहितम्** =चेष्टा किया, **किमपि** =कुछ भी, **आलपितुम्** =कहने के लिए, **तावत्** =त्यों ही, **कुटीरात्** =कुटी से, **अश्रूयत** =सुनाई पड़ा, **तस्या एव** =उस पूर्ववर्णित, **बालिकायाः** =कन्या का ही, **सकरुणरोदनम्** =सशोक विलाप।

ततः किमिति =तदनन्तर यह क्या है? **कुत इति** =कहाँ से आ रहा है? **केयमिति** =कौन है यह? **कथमिति** =यह क्यों रो रही है? **इति** =इस प्रकार से, **पृच्छापरवशे** =जिज्ञासा के अधीन होने पर, **योगिराजे** =योगिराज के, **ब्रह्मचारिगुरुणा** =ब्रह्मचारी गुरु के द्वारा, **बालिकां** =कन्या को, **सान्त्वयितुं** =शान्त करने के लिए, **श्यामबटुम्** =श्याम वर्णवाले ब्रह्मचारी को, **आदिश्य** =आदेश देकर, **कथितम्** =वक्ष्यमाण रीति से कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सम्पूज्य–सम्+पूज्+क्त्वा+ल्यप्। **ईहितम्**–ईह चेष्टायाम्+क्त। **अश्रूयत**–श्रु+कर्मणि/यक्+लङ्, प्र.पु.ए.व.। **रोदनम्**–रुदिर् अश्रुविमोचने+भावे ल्युट्। **सान्त्वयितुम्**–सान्त्व+णिच्+तुमुन्। **आदिश्य**–आ+दिश्+क्त्वा+ल्यप्।

''भगवन्! श्रूयतां यदि कुतूहलम्। ह्यः सम्पादित-सायन्तन-कृत्ये, अत्रैव कुशाऽऽस्तरण मधिष्ठिते मयि, परितः समासीनेषु छात्रवर्गेषु, धीर-समीर-स्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनी-कामिनी-चन्दनबिन्दौ इव इन्दौ, कौमुदी-कपटेन सुधाधारामिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्तां शुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु-पतंग-कुलेषु, कैरव-विकाश-हर्ष-प्रकास-मुखरेषु चञ्चरीकेषु, अस्पष्टाक्षरम्, कम्पमान-निःश्वासम्, श्लथत्कण्ठम्, घर्घरितस्वनम्, चीत्कारमात्रम्, दीनतामयम्, अत्यवधान-श्रव्यत्वादनुमितदविष्ठतं क्रन्दनमश्रौषम्।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में मुनि के द्वारा कन्या के रुदन को सुनने का वर्णन व्यास जी द्वारा किया गया है।

अनुवाद– भगवन्! यदि आपको इसका वृत्तान्त जानने की उत्कण्ठा है तो सुनिये। कल, सायंकालीन नित्यकर्म से निवृत्त होकर मैं यहीं कुशासन पर बैठा हुआ था और मेरे चारों ओर छात्रगण बैठे थे, मन्द-मन्द वायु के संस्पर्श से लतायें धीरे-धीरे हिल रहीं थीं, निशा रूपी

नायिका के मस्तक पर चन्दन के तिलक के समान चन्द्रमा उदित हो चुका था, आकाश चाँदनी के बहाने अमृत सा बरसा रहा था, हमारी नीति चर्चा को सुनने की इच्छा से पक्षी समुदाय ने मानो मौन धारण कर लिया था और कुमुदों के प्रसूनों के खिल जाने से भौंरे हर्षातिरेक से गुनगुना रहे थे, उसी समय मैंने अस्पष्ट अक्षरों वाला, काँपती हुई साँसों से युक्त रुँधे हुए गले वाला, घरघराते हुए शब्द से समन्वित, केवल चीत्कार मात्र, दीनतापूर्ण, विशेष ध्यान से सुनने के कारण जिसके अत्यन्त दूर होने का अनुमान होता था, ऐसे रुदन को सुना।

शब्दार्थ– भगवन्! =ऐश्वर्यसम्पन्न!, **यदि कुतूहलम्** =यदि उत्कण्ठा है तो, **श्रूयताम्** =सुनें, **ह्यः** =कल, **सम्पादितसायन्तनकृत्ये** =सायंकालिक क्रियाओं को समाप्त कर चुकने पर, **अत्रैव** =यहीं, **कुशास्तरणमधिष्ठिते मयि** =मेरे कुशासन पर बैठने पर, **परितः** =चारों ओर, **समासीनेषु छात्रवर्गेषु** =छात्रवृन्द के बैठे होने पर, **धीरसमीरस्पर्शेन** =मन्द वायु के स्पर्श से, **मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु** =धीरे-धीरे लताओं के कम्पित होने पर, **समुदिते यामिनी कामिनीचन्दनबिन्दौ इव इन्दौ** =रात्रिरूपी नायिका के चन्दन बिन्दु के समान चन्द्रमा के समुदित होने पर, **कौमुदीकपटेन सुधाधारामिव वर्षति गगने** =चन्द्रज्योत्स्ना के बहाने आकाश द्वारा मानो अमृत की वर्षा करने पर, **अस्मन्नीतिवार्तां शुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु पतंगकुलेषु** = हमारी नीतिसम्बन्धी चर्चा को सुनने की इच्छा से मानो पक्षियों के समूह को मौन धारण करने पर, **कैरवविकाशहर्षप्रकाशमुखरेषु चञ्चरीकेषु** =कुमुदों के खिलने की अभिव्यक्ति के कारण भ्रमरों के मुखरित होने पर, **अस्पष्टाक्षरम्** =अव्यक्त अक्षरों वाला, **कम्पमाननिःश्वासम्** =काँपती हुई श्वासवाला, **श्लथत्कण्ठम्** = रुँधे हुए गले वाला, **घर्घरितस्वनम्** ='घर-घर' शब्द से समन्वित, **चीत्कारमात्रम्** =चिल्लाना मात्र था जिसमें, **दीनतामयम्** =दीनता से युक्त, **अत्यवधानश्रव्यत्वात्** =विशेष ध्यान से सुनाई पड़ने के कारण, **अनुमितदविष्ठतम्** =बहुत दूर होने का अनुमान किया जाने वाला, **क्रन्दनम्** =विलाप या रोदन को, **अश्रौषम्** =सुना।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– श्रूयताम्–श्रु+कर्मवाच्य, लोट् लकार, प्र.पु.ए.व.। **सम्पादितम्**–सम्+पद् +णिच्+क्त। **सायन्तनम्**–सायं भवमिति सायन्तनम्; सायम्+ट्युल अथवा ट्यु, तुट् का आगम 'सायंचिरंप्राहेण प्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च' इत्यनेन सूत्रेण। **कुशास्तरणम्**–इत्यत्र 'अधिशीङ्स्थासां कर्म' इत्यनेन सूत्रेण कर्म। **अधिष्ठिते**–अधि+स्था+क्त। **समासीनेषु** सम्+आस् उपवेशने+शानच्; अत्र 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' इत्यनेन सप्तमी। **शुश्रूषुः**–श्रु+सन्+'सनाशंसभिक्ष उः'इत्यनेन उ। **आकलयत्सु**–आ+कल+णिच्+शतृ। **क्रन्दनम्**–क्रदि+भावे ल्युट्। **अश्रौषम्**–श्रु+ लुङ्, उत्तमपुरुष एकवचन।

तत्क्षणमेव च ''कुत इदम्? किमिदमिति दृश्यतां ज्ञायताम्'' इत्यादिश्य छात्रेषु विसृष्टेषु, क्षणानन्तरं छात्रेणैकेन भयभीता सवेगमत्युष्णं दीर्घं निःश्वसती, मृगीव व्याघ्राऽऽघ्राता, अश्रुप्रवाहैः स्नाता, सवेपथुः कन्यकैका अङ्के निधाय समानीता। चिरान्वेषणेनापि च तस्याः सहचरी सहचरो वा न प्राप्तः। तां च चन्द्रकलयेव निर्मिताम्, नवनीतेनेव रचिताम्, मृणाल-गौरीम्, कुन्दकोरकाग्रदतीं सक्षोभं रुदतीमवलोक्याऽस्माभिरपि न पारितं निरोद्धुं नयनबाष्पाणि।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– मुनि के द्वारा रुदन करती हुई कन्या का वर्णन प्रस्तुत अनुच्छेद में किया गया है।

अनुवाद– उसी क्षण 'यह रोने का शब्द कहाँ से आ रहा है? किस कारण से है? देख कर पता लगाओ– यह आज्ञा देकर, छात्रों को भेजा और क्षण भर बाद ही एक छात्र के द्वारा

डरी हुई, जल्दी-जल्दी गर्म और लम्बी साँसें ले रही, सिंह से सूँघी गयी हरिणी के समान, अश्रुप्रवाह से स्नान की हुई, काँपती हुई एक बालिका गोद में उठाकर लाई गई। चिरकाल तक अन्वेषण करने पर भी उसकी कोई सखी या साथी प्राप्त नहीं हुआ। चन्द्रमा की कलाओं से रची हुई-सी, मक्खन से निर्मित सी, कमलनाल के समान गौरवर्ण वाली, कुन्दपुष्प की कलियों के अग्रभाग के समान नुकीले और श्वेत दाँतों वाली, उस बालिका को व्याकुल होकर रोते देख, हम लोग भी अपने आँसू न रोक सके।

शब्दार्थ– तत्क्षणमेव =उसी समय, **च** =और, **कुत इदम्** =यह रोदन कहाँ से है, **किमिदम्** =किस कारण है, **दृश्यताम्** =देखिये, **ज्ञायताम्** =जानिये, **इत्यादिश्य** =इस प्रकार आदेश देकर, **छात्रेषु विसृष्टेषु** =छात्रों के भेजे जाने पर, **क्षणानन्तरं** =एक क्षण बाद, **छात्रेणैकेन** =एक छात्र के द्वारा, **भयभीता** =भय से डरी हुई, **सवेगम्** =जल्दी-जल्दी, **अत्युष्णं** =अत्यन्त गरम, **दीर्घम्** =लम्बी, **निःश्वसती** =श्वास लेती हुई, **मृगीव** =हरिणी की तरह, **व्याघ्राऽऽघ्राता** =सिंह के द्वारा सूँघी गई, **अश्रुप्रवाहैः** =आँसुओं के प्रवाह से, **स्नाता** =नहाई हुई, **सवेपथुः** =काँपती हुई, **कन्यकैका** =एक बालिका, **अङ्के** =गोद में, **निधाय** =रखकर, **समानीता** =लाई गई। **चिरान्वेषणेनापि** =चिरकाल तक अन्वेषण करने पर भी, **तस्याः** =उसकी, **सहचरी** =सखी, **सहचरो वा** =अथवा साथी, **न प्राप्तः** =नहीं प्राप्त हुआ। **ताम्** =उस बालिका को, **चन्द्रकलयेव** =चन्द्रमा की कला के समान गोरी, **कुन्दकोरकाग्रदतीम्** =कुन्द पुष्प के कली के अग्रभाग के समान दाँतों वाली, **सक्षोभं** =व्याकुलतापूर्ण, **रुदतीम्** =रोती हुई, **अवलोक्य** =देखकर, **अस्माभिरपि** =हम लोगों के द्वारा भी, **न पारितं** =पार नहीं पाया गया, **निरोद्धं** =रोकने के लिए, **नयनबाष्पाणि** =आँसुओं को।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दृश्यताम्–दृश्+कर्मणि यक्, लोट् प्र.पु.ए.व.। **ज्ञायताम्**–ज्ञा अवबोधने+कर्मणि यक्, लोट् प्र.पु.ए.व.। **विसृष्टेषु**–वि+सृज्+क्त। **भीता**–भी+क्त+टाप्। **निःश्वसती**–निस्+श्वस्+शतृ+ङीप्। **सवेपथुः**–स+वेपृ कम्पने+भावे अथुच् प्रत्ययः। **स्नाता**–स्ना+क्त+टाप्। **निधाय**–नि+धा+ल्यप्। **समानीता**–सम्+आ+नी+क्त+टाप्। **अन्वेषण**–अनु+इष्+ल्युट्। **सहचरी**–सह चरतीति–सह+चर+अच्+स्त्रियां ङीष्। **प्राप्तः**–प्र+अप्+क्त। **रुदतीम्**–रुद्+शतृ+ ङीप्। **निरोद्धुम्**–नि+रुध्+तुमुन्।

अथ "कन्यके! मा भैषीः, पुत्रि! त्वां मातुः समीपे प्रापयिष्यामः, दुहितः! खेदं मा वह, भगवति! भुङ्क्ष्व किञ्चित्, पिब पयः, एते तव भ्रातरः, यत् कथयिष्यसि तदेव करिष्यामः, मा स्म रोदनैः प्राणान् संशयपदवीमारोपयः, मा स्म कोमलमिदं शरीरं शोकज्वालावलीढं कार्षीः" इति सहस्त्रधा बोधनेन कथमपि सम्बुद्धा किञ्चिद् दुग्धं पीतवती। ततश्च मया क्रोडे उपवेश्य, "बालिके! कथय क्व ते पितरौ? कथमेतस्मिन्नाश्रमप्रान्ते समायाता? किं ते कष्टम्? कथमरोदीः? किं वाञ्छसि? किं कुर्मः?" इति पृष्टा मुग्धतया अपरिकलित–वाक्पाटवा, भयेन विशिथिलवचनविन्यासा, लज्जया अतिमन्दस्वरा, शोकेन रुद्धकण्ठा, चकितचकितेव कथं कथमपि अबोधयदस्मान् यद्–

"एषा अस्मिन्नेदीयस्येव ग्रामे वसतः कस्यापि ब्राह्मणस्य तनयाऽस्ति।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– मुनि के द्वारा कन्या का वृत्तान्त वर्णित किया जा रहा है।

अनुवाद– तदनन्तर पुत्रि! डरो मत। बेटी! हम सब तुम्हें माँ के पास पहुँचा देंगे, वत्से! दुःखी मत होओ। देवि! कुछ खाओ, दूध पीओ। ये सब तुम्हारे भाई हैं। जो कहोगी, वही

करेंगे। रो-रोकर प्राणों को सन्देह में मत डालो। इस कोमल शरीर को दुःखाग्नि से संतप्त मत करो। इस प्रकार हजारों तरह से समझाने-बुझाने पर किसी प्रकार आश्वस्त हो उस बालिका ने कुछ दूध पिया। तदनन्तर मैंने उसे गोद में लेकर पूछा 'वत्से! बताओ, तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं? इस आश्रम के पास कैसे आई? तुम्हें क्या दुःख है?' तुम क्यों रो रही थी? तुम क्या चाहती हो? हम तुम्हारे लिये क्या करें? इस प्रकार पूछने पर अबोध बालिका होने के कारण भाषण चातुरी से अनभिज्ञ, भय के कारण लड़खड़ाते हुए शब्दों वाली, लज्जा के कारण अत्यन्त मन्द स्वरों में, शोक के कारण रुँधे गले से, डरी हुई-सी उसने किसी प्रकार हम आश्रमवासियों को बतलाया कि वह अत्यन्त समीप के ही ग्राम में निवास करने वाले किसी ब्राह्मण की पुत्री है।

शब्दार्थ– अथ =अनन्तर, **कन्यके** =पुत्रि!, **मा भैषीः** =मत डरो, **पुत्रि!** =बालिके!, **त्वाम्** =तुमको, **मातुः समीपे** =माता के पास में, **प्रापयिष्यामः** =हम पहुँचा देंगे, **दुहितः** =पुत्रि!, **खेदं मा वह** =खेद मत करो, **भगवति** =ऐश्वर्यशालिनि बाले!, **भुङ्क्ष्व किञ्चित्** =थोड़ा खाओ, **पिब पयः** =दूध पीओ, **एते** =ये सब, **तव भ्रातरः** =तुम्हारे भाई हैं, **यत् कथयिष्यसि** =जो कहोगी, **तदेव करिष्यामः** =वही करेंगे, **रोदनैः** =विलाप करने से, **प्राणान्** =प्राणों को, **संशयपदवीम्** =सन्देह के मार्ग में, **मा स्म आरोपय** =मत डालो, **कोमलमिदं शरीरम्** =इस कोमल देह को, **शोकज्वालावलीढं** =दुःखाग्नि से व्याप्त, **मा स्म कार्षीः** =मत करो, **इति** =इस प्रकार, **सहस्त्रधाबोधनेन** =अनेक प्रकार समझाने से, **कथमपि** =किसी प्रकार, **सम्बुद्धा** =आश्वस्त होकर, **किञ्चिद् दुग्धं पीतवती** =थोड़ा दूध पी, **ततश्च** =इसके बाद, **मया** =ब्रह्मचारी गुरु के द्वारा, **क्रोडे** =गोद में, **उपवेश्य** =बैठाकर, **कथय** =कहो, **क्व ते पितरौ** =तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं, **कथम्** =किस प्रकार, **एतस्मिन् आश्रमप्रान्ते** =इस आश्रम के निकट अर्थात् तपोवन में, **समायाता** =आई, **किं ते कष्टम्** =तुम्हें क्या कष्ट है, **कथमरोदीः** =क्यों रोई?, **किं वाञ्छसि** =क्या चाहती हो, **किं कुर्मः** = हम सब क्या करें, **इति** =इस प्रकार, **पृष्टा** =पूछने पर, **मुग्धतया** =सरलता के कारण, **अपरिकलितवाक्पाटवा** =भाषण चतुरी से अनभिज्ञ, **भयेन** =डर से, **विशिथिलवचनविन्यासा** =लड़खड़ाते हुए शब्दों में बोलने वाली, **लज्जया** =लज्जा के कारण, **अतिमन्दस्वरा** =अत्यन्त धीमे स्वरों वाली, **शोकेन** =शोक से, **रुद्धकण्ठा** =रुँधे हुए कण्ठवाली, **चकितचकितेव** =अत्यन्त चकित हुई सी, **कथं कथमपि** =किसी-किसी प्रकार, **अबोधयत्** =बतलाई, **अस्मान्** =हम सब आश्रमवासियों को, **यत्** =कि, **एषा** =यह, **अस्मिन्नेदीयस्येव ग्रामे** =इस अत्यन्त समीप के ग्राम में, **वसतः** =निवास करने वाले, **कस्यापि ब्राह्मणस्य** =किसी ब्राह्मण की, **तनया** =पुत्री, **अस्ति** =है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मैषीः–भी+लुङ्, मध्यमपुरुष एकवचन, 'मा' के योग में आडागमाभाव। **प्रापयिष्यामः**–प्र+आप्+णिच्+लृट्, उ.पु.ब.व.। **भुङ्क्ष्व**–भुज् आत्मनेपद, लोट्, म.पु.ए.व.। **आरोपयः**–'मा स्म' के योग में लङ्, मध्यमपुरुष एकवचन, 'स्मोत्तरे लङ् च'। **अवलीढम्**–अव+लिह्+क्त। **मा कार्षीः**–कृ+लुङ्, म.पु.ए.व., 'मा' के योग में अडागमाभाव। **पीतवती**–पा पाने+क्तवतु+ङीप्। **उपवेश्य**–उप+विश्+णिच्+ल्यप्। **अरोदीः**–रुद्+लुङ्+सिप, म.पु.ए.व.। **नेदीयसि**–अन्तिक (समीप)+ईयसुन्। **वसतः**–वस्+शतृ, षष्ठी ए.व.।

एनां च सुन्दरीमाकलय्य कोऽपि यवन-तनयो नदीतटान्मातुर्हस्तादाच्छिद्य क्रन्दन्तीं नीत्वाऽपससार। ततः कञ्चिदध्वानमतिक्रम्य यावदसिधेनुकां सन्दर्श्य बिभीषिकयाऽस्याः क्रन्दन-कोलाहलं शमयितुमियेष; तावदकस्मात् कोऽपि काल-कम्बल इव भल्लूको वनान्तादुपाजगाम। दृष्ट्वैव यवन-तनयोऽसौ तत्रैव त्यक्त्वा कन्यकामिमां शाल्मलितरुमेकमारुरोह। विप्रतनया चेयं पलाश-पलाशि-श्रेण्यां प्रविश्य घुणाक्षरन्यायेन इत एव समायाता यावद् भयेन पुना रोदितुमारब्धवती, तावदस्मच्छात्रेणैवाऽऽनीते'' ति।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– मुनि के द्वारा कन्या का वृत्तान्त वर्णित किया जा रहा है।

अनुवाद– इस कन्या को सुन्दर समझकर कोई मुसलमान लड़का नदी के तट से, माँ के हाथ से छीनकर रोती बिलखती हुई इस बालिका को लेकर भागा। कुछ दूर जाकर जैसे ही उसने छूरा दिखाकर, डराकर उसके रोने के शब्द को शान्त कराना चाहा वैसे ही अचानक कानन-प्रान्त से एक काले कम्बल जैसा भालू (रीछ) निकला। उसे देखते ही वह मुसलमान लड़का बालिका को वहीं छोड़कर सेमर के एक पेड़ पर चढ़ गया और यह ब्राह्मण बालिका पलाश वृक्षों के झुरमुट में प्रवेश कर घुणाक्षरन्याय से इधर आकर भय के कारण पुनः रोने लगी, तभी हमारा छात्र इसे यहाँ ले आया।

शब्दार्थ– **एनाम्** =उस पूर्ववर्णित कन्या को, **सुन्दरीम्** =सुन्दर अंगों वाली, **आकलय्य** =समझकर, **कोऽपि** =कोई, **यवनतनयः** =यवनपुत्र, **नदीतटात्** =नदी के तट से, **मातुर्हस्तात्** =माता के हाथ से, **आच्छिद्य** =छीनकर, **क्रन्दन्तीं** =रोती हुई को, **नीत्वा** =लेकर, **अपससार** =भागा। **ततः** =तदनन्तर, **किञ्चिद्** =कुछ, **अध्वानम्** =मार्ग को, **अतिक्रम्य** =पारकर, **यावद्** =जब तक, **अकस्मात्** =अचानक, **असिधेनुकां** =छुरी को, **सन्दर्श्य** =दिखाकर, **बिभीषिकया** =डर से, **अस्याः** =इस बालिका को, **क्रन्दनकोलाहलं** =रोदन ध्वनि को, **शमयितुम्** =शान्त करने की, **इयेष** =इच्छा की, **तावत्** =तब तक, **अकस्मात्** =अचानक, **कोऽपि** =कोई, **कालकम्बल इव** =काले कम्बल के समान, **भल्लूकः** =भालू, **वनान्तात्** =वन प्रान्त से, **उपजगाम** =पास आया। **दृष्ट्वैव** =देखकर ही, **कन्यकामिमां** =इस कन्या को, **तत्रैव** =वहीं पर, **त्यक्त्वा** =छोड़कर, **शाल्मलितरुमेकं** =एक शाल्मली वृक्ष पर, **आरुरोह** =चढ़ गया, **विप्रतनया चेयं** =और यह ब्राह्मणपुत्री, **पलाशपलाशिश्रेण्याम्** =पलाश वृक्षों के समूह में, **प्रविश्य** =प्रवेशकर, **घुणाक्षरन्यायेन** =संयोगवश, **इत एव** = इधर ही, **समायाता** =आ गई, **यावत्** =जब तक, **भयेन** =भय से, **पुना रोदितुम्** =फिर रोने के लिये, **आरब्धवती** =आरम्भ किया, **तावत्** =तब तक, **अस्मच्छात्रेणैव** =हमारे छात्र के द्वारा ही, **आनीता** =लाई गई। इति।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **आकलय्य**–आ+कल+ल्यप्। **आच्छिद्य**–आ+छिद्+ल्यप्। **क्रन्दन्तीम्**–क्रन्द+शतृ(द्वि.एकवचन) ।**नीत्वा**–नी+क्त्वा। **अपससार**–अप+सृ+लिट्+तिप्। **अतिक्रम्य**–अति+क्रम्+ल्यप् ।**इयेष**–इष् इच्छायां+लिट्+तिप्। **उपाजगाम्**–उप+आ+गम्+ लिट्+तिप्। **त्यक्त्वा**–त्यज्+क्त्वा। **आरुरोह**–आ+रुह+लिट्+तिप्। **प्रविश्य**–प्र+विश्+ल्यप्। **समायाता**–सम्+आ+या+क्त+टाप्। **पुनारोदितुम्**–'रो रि' इति लोपे, 'ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' इति दीर्घे। **रोदितुम्**–रुद+इ+तुमुन्। **आरब्धवती**–आ+रभ+क्तवतु+ङीप्। **अनीता**–आ+नी+क्त+टाप्।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित प्रश्नों में सही विकल्प का चयन कीजिए –

i) 'अहो! प्रबुद्धो मुनिः!प्रबुद्धो मुनिः' कथन है –

क) गौरबटु　　ख) श्यामबटु

ग) ब्रह्मचारी गुरु　　घ) गौरबटु और श्यामबटु दोनों

ii) ब्रह्मचारी गुरु ने कन्या को शान्त कराने के लिए भेजा –

क) गौरबटु को　　ख) ग्रामीणों को

ग) श्यामबटु को　　घ) गौरबटु और श्यामबटु दोनों को

iii) 'भगवन् श्रूयतां यदि कुतूहलम्' कथन है –

क) ब्रह्मचारी गुरु का ख) योगीराज का

ग) ग्रामीणों का घ) गौरबटु का

2) नीचे दिए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (x) कथन का चयन कीजिए–

i) 'श्रूयताम्' पद में लोट् लकार प्र.पु.ए.व. की क्रिया है – ( )

ii) 'सायन्तनम्' पद में ट्युल प्रत्यय का प्रयोग है – ( )

iii) 'अश्रौषम्'पद में लोट् लकार का प्रयोग है – ( )

iv) कन्या को छोड़कर मुसलमान लड़का सेमर के पेड़ पर चढ़ गया – ( )

अभ्यास प्रश्न

1) यवन द्वारा अपहृत कन्या का परिचय दीजिए।

11.3 सारांश

शिवराजविजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास में अम्बिकादत्त व्यास जी ने भारतवर्ष की तात्कालिक दशा का वर्णन किया है। आपके पाठ्यक्रम में इस उपन्यास का प्रथम निःश्वास अध्ययन हेतु रखा गया है। व्यास जी ने सूर्योदय वर्णन से इस उपन्यास का प्रारम्भ किया है। गुरु की सेवा में तत्पर गौरबटु गुरु जी के सन्ध्योपासन के लिए पुष्पचयन प्रारम्भ करता है। उसी समय उसी के समान अवस्था वाला बटु आकर उसको पुष्पचयन से रोकता है और यह सूचित करता है कि उसने गुरु जी के सन्ध्योपासन के लिये पुष्पों का चयन कर लिया है। उसने अपने सहपाठी से कहा कि तुम देर रात तक जागते रहे इसलिए मैंने तुमको प्रातःकाल नहीं जगाया। उसने कहा यवन के भय से रोती हुई उस कन्या के माता-पिता का पता लगाना चाहिए अन्यथा वह सोकर उठने पर पुनः रोयेगी। उसी समय उन दोनों की दृष्टि पर्वत की चोटी पर पड़ी। उस पर्वत पर एक विशाल गुफा थी जिसमें एक महामुनि समाधि लगाये हुए थे। गाँव के मुखिया तथा अन्य ग्रामीण लोग समय-समय पर उनकी पूजा, प्रणाम और स्तुति कर आते थे। उन्हीं महामुनि को गौरबटु और श्यामबटु ने पर्वतशिखर से उतरते हुए देखा। महामुनि आश्रम में पहुँचे। वहाँ विधिपूर्वक आदर सत्कार प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने उस बालिका के करुण क्रन्दन को सुना तथा उस बालिका के विषय में जानने की इच्छा प्रकट की। तदनन्तर ब्रह्मचारी गुरु ने योगिराज को सम्पूर्ण घटनाक्रम के विषय में बताया कि किस प्रकार उनके एक छात्र के द्वारा वह कन्या यहाँ लाई गई।

11.4 शब्दावली

प्रवर्तक – सञ्चालन करने वाला

चिरकाल – अधिक समय तक

समलङ्कृत – सजा हुआ

शब्दरहित – बिना बोले

वृत्तान्त – कथा

संस्पर्श – छूने से

हर्षातिरेक – खुशी की अधिकता से

अन्वेषण – खोजने पर

संतप्त – तपाना

घुणाक्षरन्याय – संयोग वश

11.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः) – डा. रमाशंकर मिश्र,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी।

2) शिवराजविजयः (प्रथम विराम) – डा. देवनारायण मिश्र,साहित्य भण्डार,मेरठ।

3) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः) – डा. गायत्री शुक्ला,इन्दिरा प्रकाशन,इलाहाबाद।

4) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः प्रथमो निःश्वासः) – डा. चन्द्रिका लाल श्रीवास्तव,गुरुमन्त्र प्रकाशन,गोरखपुर।

11.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) 4 (ii) वीर शिवाजी (iii) सूर्य (iv) तालाब के किनारे

2) i) शिवराजविजय के मंगलाचरण में सूर्य की वन्दना की गयी है ।

ii) चक्रवाकों के शोक को दूर करने वाले भगवान् सूर्य हैं।

iii) सोलह वर्ष की अवस्था वाला ब्राह्मण गौरबटु था।

iv) 'अवचिनोति' पद में 'चिञ्' धातु का प्रयोग किया गया है।

v) गौरबटु और श्यामबटु ने पर्वत शिखर से उतरते हुए योगिराज को देखा।

vi) 'ग्रामीण' में खञ् प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न 2

1) i) (घ) गौरबटु एवं श्यामबटु दोनों (ii) (ग) श्यामबटु को (iii) (क) ब्रह्मचारी गुरु का

2) i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (vi) सत्य

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 12 शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 15-20

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 गद्यांश का अनुवाद –तदाकर्ण्यकोपज्वालाज्वलित.....इति कथयित्वा तूष्णीमवतस्थे।

12.3 सारांश

12.4 शब्दावली

12.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- भारतवर्ष की तात्कालिक दशा से परिचित होंगे।
- आप विक्रमादित्य के समय के भारतवर्ष के वैभव को जान सकेंगे।
- योगिराज की विशिष्टताओं से परिचित होंगे।
- ब्रह्मचारी गुरु द्वारा वर्णित भारतवर्ष की दशा से उत्पन्न शोक से परिचित होंगे।
- संस्कृत- शब्दों की विशिष्ट प्रयोग-विधि का साक्षात्कार करेंगे।

12.1 प्रस्तावना

संस्कृत गद्य-साहित्य पाठ्यक्रम से सम्बन्धित यह 12वीं इकाई है। इस इकाई में भारतवर्ष की दशा का वर्णन किया गया है। ब्रह्मचारी गुरु के द्वारा कन्या के अपहरण की बात को सुनकर योगिराज कहते हैं कि विक्रम के राज्य में दुराचारियों का यह उपद्रव कैसे सम्भव है। तब ब्रह्मचारी गुरु निवेदन करते हैं कि महात्मन्! अब विक्रमादित्य का शासन कहाँ है? अब मन्दिरों में जय-जय का शब्द कहाँ है? मठों में वेदमन्त्रों की ध्वनि कहाँ है? वर्तमान में तो वेदों को फाड़ा जा रहा है। मन्दिर तोड़े जा रहे हैं, कहीं अग्निकाण्ड है तो कहीं घरों का विध्वंस है। यह सब सुनकर योगिराज दुःखित हो जाते हैं और भारतवर्ष के विक्रमादित्य के काल के वैभव और समृद्धि को याद करने लगते हैं। तब ब्रह्मचारी गुरु कहते हैं कि भगवन् ध्यान में लीन होने के परिणामस्वरूप आपको समय की गति का पता नहीं चला। योगिराज ब्रह्मचारी गुरु से भारतवर्ष की दशा के विषय में जानने की इच्छा प्रकट करते हैं, जिसका वर्णन प्रस्तुत इकाई में किया गया है।

12.2 गद्यांश का अनुवाद – तदाकर्ण्यकोपज्वाला ..... इति कथयित्वा तूष्णीमवतस्थे।

तदाकर्ण्य कोपज्वालाज्वलित इव योगी प्रोवाच–"विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः?"

ततः स उवाच–

''महात्मन्! क्वाधुना विक्रमराज्यम्? वीरविक्रमस्य तु भारतभुवं विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदश-शतकानि व्यतीतानि। क्वाधुना मन्दिरे मन्दिरे जयजयध्वनिः? क्व सम्प्रति तीर्थे तीर्थे घण्टानादः? क्वाद्यापि मठे मठे वेदघोषः? अद्य हि वेदा विच्छिद्य वीथीषु विक्षिप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धूय धूमध्वजेषु ध्मायन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भर्ज्यन्ते; ''क्वचिन्मन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित् तुलसीवनानि छिद्यन्ते, क्वचिद् दारा अपह्रियन्ते, क्वचिद् धनानि लुण्ठ्यन्ते, क्वचिदार्त्तनादाः, क्वचिद् रुधिरधाराः, क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद् गृहनिपातः'' इत्येव श्रूयतेऽवलोक्यते च परितः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय के प्रथम विराम के प्रथम निःश्वास से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में योगिराज के पूछने पर ब्रह्मचारी गुरु द्वारा राज्य की तत्कालीन स्थिति का वर्णन किया गया है।

अनुवाद– यह सुनकर क्रोधाग्नि की लपटों से जलते हुए से योगिराज बोले–''विक्रमादित्य के राज्य में भी दुराचारियों का यह पापमय उपद्रव कैसा?'' तब ब्रह्मचारी गुरु ने कहा–''महात्मन्, अब विक्रम का राज्य कहाँ रहा? वीर विक्रमादित्य को तो भारतभूमि को छोड़कर गये हुए सत्रह सौ वर्ष बीत चुके हैं। अब मन्दिरों में जय-जय का शब्द कहाँ? आज तीर्थों में घण्टा-ध्वनि कहाँ सुनाई पड़ती है? मठों में वेदमन्त्रों की ध्वनि कहाँ? आज तो वेदग्रन्थ फाड़कर गलियों में बिखेरे जाते हैं। धर्मशास्त्र के ग्रन्थ उछालकर अग्नि में झोंके जाते हैं। पुराण की पुस्तकें पीसकर पानी में फेंकी जाती हैं। भाष्य ग्रन्थ नष्ट कर भाड़ों में जला दिये जाते हैं। कहीं मन्दिर तोड़े जाते हैं। कहीं तुलसी के वृक्ष काटे जाते हैं। कहीं स्त्रियों का अपहरण किया जाता है। कहीं धनसम्पत्ति लूटी जाती है। कहीं करुण क्रन्दन है तो कहीं रक्त की धारा। कहीं अग्निकाण्ड तो कहीं घरों का विध्वंस किया जा रहा है।'' इस समय चारों ओर यही सुनाई देता है और यही दिखाई देता है।

शब्दार्थ– तदाकर्ण्य =उसे सुनकर, **कोपज्वालाज्वलित इव** =क्रोधाग्नि की लपटों से जलते हुए के समान, **प्रोवाच** =बोले। **कथमेष पातकमयः** =क्यों इस पापमय, **उवाच** =कहा, **क्व** =कहाँ, **अधुना** =इस समय, **विरहय्य** =छोड़े हुए, **गतस्य** =गये हुए, **विच्छिद्य** =फाड़कर, **वीथीषु** =गलियों में, **विक्षिप्यन्ते** =फेंके जाते हैं, **उद्धूय** =उछालकर या उड़ाकर, **धूमध्वजेषु** =अग्नि में, **ध्मायन्ते** =झोंके जाते हैं, **पिष्ट्वा** =पीसकर, **पात्यन्ते** =डाले जाते हैं, **भ्रंशयित्वा** =नष्टकर, **भ्राष्ट्रेषु** =भाड़ों में, **भर्ज्यन्ते** =जलाये जाते हैं, **भिद्यन्ते** =तोड़े जाते हैं, **छिद्यन्ते** =काटे जाते हैं, **क्वचित्** =कहीं, **दाराः** =स्त्रियाँ, **लुण्ठ्यन्ते** =लुटे जाते हैं, **गृहनिपातः** =घरों का विनाश।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पातकमयः–पातक+मयट्। **विरहय्य**–वि+रह+ल्यप्। **गतस्य**–गम्+क्त (षष्ठी), **व्यतीतानि**–वि+अत+क्त(नपुं.)। **विच्छिद्य**–वि+छिद्+ल्यप्। **उद्धूय**–उद्+धूञ्+ल्यप्। **पिष्ट्वा**–पिष्+क्त्वा। **ध्मायन्ते**–ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः से भावकर्म लट्। **भर्ज्यन्ते**–भृजी भर्जने+यक्, भावकर्म लट्।

तदाकर्ण्य दुःखितश्चकितश्च योगिराडुवाच–''कथमेतत्? ह्य एव पर्वतीयाञ्छकान् विनिर्जित्य महता जयघोषेण स्वराजधानीमायातः श्रीमानादित्य-पदलाञ्छनो वीरविक्रमः। अद्यापि तद्विजयपताका मम चक्षुषोरग्रत इव समुद्धूयन्ते, अधुनापि तेषां पटहगोमुखादीनां निनादः कर्णशष्कुलीं पूरयतीव, तत् कथमद्य वर्षाणां सप्तदश-शतकानि व्यतीतानि'' इति?

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में ब्रह्मचारी गुरु के द्वारा स्थिति का वर्णन करने पर योगिराज दुःखित हो जाते हैं और आश्चर्यपूर्वक कहते हैं कि यह कैसे? अभी तो कल ही विक्रम शकों को जीत कर राजधानी आए फिर सत्रह सौ वर्ष कैसे बीत गये?

अनुवाद– यह सुनकर दुःखित और आश्चर्ययुक्त होकर योगिराज बोले– ''यह कैसे? श्रीमान् आदित्य पद से विभूषित वीर विक्रम अभी कल ही पर्वत प्रान्त निवासी शकों को जीतकर महान् जय जयकार के साथ अपनी राजधानी आये थे। आज भी मानो उनकी विजयपताकायें मेरे नेत्रों के सामने फहरा रही हैं। आज भी उनके नगाड़े, तुरही आदि के शब्द मेरे कर्णविवरों को भर रहे हैं। तब फिर आज सत्रह सौ वर्ष कैसे बीत चुके।

शब्दार्थ– ह्य एव =बीता हुआ कल, **पर्वतीयान्** =पर्वत पर रहने वाला, **विनिर्जित्य** =जीतकर, **अग्रत इव** =सम्मुख जैसे, **समुद्धूयन्ते** =उड़ रही है, **पटहगोमुखादीनां** =नगाड़ा और तुरही आदि की, **निनादः** =आवाज, **पूरयतीव** =पूर्ण सी कर रही है, **व्यतीतानि** =बीत गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आकर्ण्य–आ+कर्ण+ल्यप्। **पर्वतीयान्** – पर्वत+छप्रत्यय+ईय, द्वि. बहु.। **विनिर्जित्य**–वि+निर्+जी+ल्यप्। **समुद्धूयन्ते**–सम्+उद्+धूञ्+लट् (आत्म.)।

ततः सर्वेषु स्तब्धेषु चकितेषु च ब्रह्मचारिगुरुणा प्रणम्य कथितम्–

''भगवन्! बद्ध-सिद्धासनैर्निरुद्ध-निःश्वासैः प्रबोधितकुण्डलिनीकैर्विजितदशेन्द्रियैर-नाहत-नाद-तन्तुमवलम्ब्याऽऽज्ञाचक्रं संस्पृश्य, चन्द्रमण्डलं भित्त्वा, तेजः पुञ्जमविगणय्य, सहस्त्रदलकमलस्यान्तः प्रविश्य, परमात्मानं साक्षात्कृत्य, तत्रैव रममाणैर्मृत्युञ्जयैरा-नन्दमात्रस्वरूपैर्ध्यानावस्थितैर्भवादृशैर्न ज्ञायते कालवेगः। तस्मिन् समये भवता ये पुरुषा अवलोकिताः तेषां पञ्चाशत्तमोऽपि पुरुषो नावलोक्यते। अद्य न तानि स्रोतांसि नदीनाम् न सा संस्था नगराणाम्, न सा आकृतिर्गिरीणाम्, न सा सान्द्रता विपिनानाम्। किमधिकं कथयामी भारतवर्षमधुना अन्यादृशमेव सम्पन्नमस्ति।''

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– योगिराज के राज्य की स्थिति पर आश्चर्य करने पर ब्रह्मचारी गुरु कहते हैं कि भगवान् आप जैसे समाधि में लीन रहने वाले योगियों को समय की गति का भान कहाँ होता है, आज तो भारत की स्थिति भिन्न ही है।

अनुवाद– योगिराज के यह वचन सुनकर सबके स्तब्ध और विस्मित हो जाने पर ब्रह्मचारियों के गुरु ने प्रणाम कर कहा–''भगवान्! सिद्धासन लगाकर, साँस रोककर, कुण्डलिनी को जगाकर, दसों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, अनाहतनाद के तन्तु का अवलम्बन करके, आज्ञाचक्र को स्पर्श कर अर्थात् ध्यान का लक्ष्य बनाकर, चन्द्रमण्डल का भेदन करके, सोमचक्र में स्थित महाप्रकाश को तिरस्कृत करके, सहस्त्रदल चक्र के भीतर प्रवेश करके, परब्रह्म का साक्षात् दर्शन करके उसी में रमण करने वाले, मृत्यु को जीतने वाले, आत्मा के आनन्दमय स्वरूप को प्राप्त हुए, ध्यानमग्न आप जैसे योगियों को समय की गति का पता नहीं चलता। उस समय आपने जिन लोगों को देखा होगा, उनकी पचासवीं पीढ़ी का पुरुष भी आज नहीं दिखायी देता। आज नदियों की वे धारायें नहीं हैं। नगरों की वह स्थिति नहीं है, पर्वतों का वह आकार नहीं और न जंगलों की वह सघनता है। अधिक क्या कहें, इस समय भारत देश अन्य प्रकार का ही हो गया है।''

शब्दार्थ– बद्धसिद्धासनैः =सिद्धासन को बाँधने वाले (सिद्धासन से अभिप्राय– आसन को जीत लिया हो जिसने ऐसे योगी सिद्धासन में रहते हैं), **निरुद्धनिःश्वासैः** =श्वास प्रक्रिया को रोकने वाले, **प्रबोधितकुण्डलिनीकैः** =कुण्डलिनी (आज्ञा चक्र) को जगाने वाले, **तेजःपुञ्जम्** =चन्द्रमण्डल से सम्बन्धित महाप्रकाश को, **मृत्युञ्जयैः** =मृत्यु को जीतने वाले, **सहस्त्रदलकमलस्यान्तः** =सहस्त्रदल कमल के भीतर, **भवता** =आपके द्वारा, **अवलोकिताः** =देखे गये हैं, **विपिनानाम्** = जंगलों की, **अन्यादृशमेव** =अन्य प्रकार का, **सम्पन्नमस्ति** =हो गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निरुद्ध–नि+रुध्+क्त। **संस्पृश्य**–सम्+स्पृश्+क्त्वा+ल्यप्। **भित्त्वा**–भिदिर् विदारणे+क्त्वा। **अविगणय्य**=अ(न)+वि+गण्+णिच्+ल्यप्। **प्रविश्य**–प्र+विश्+क्त्वा+ल्यप्। **रममाणैः**–रम+शानच्। **मृत्युञ्जयैः**– मृत्युं जितवन्त इति मृत्युञ्जयाः, तैः मृत्यु+जि+खच्+मुमागमः। **संस्था**–सम्+स्था+अङ्+टाप्।

इदमाकर्ण्य किञ्चित् स्मित्वेव परितोऽवलोक्य च योगी जगाद–''सत्यं न लक्षितो मया समय-वेगः। यौधिष्ठरे समये कलितसमाधिरहं वैक्रम-समये उदस्थाम्। पुनश्च वैक्रम-समये समाधिमाकलय्य अस्मिन् दुराचारमये समयेऽहमुत्थितोऽस्मि। अहं पुनर्गत्वा समाधिमेव कलयिष्यामि, किन्तु तावत् सङ्क्षिप्य कथ्यतां का दशा भारतवर्षस्येति''?

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– सब कुछ सुनने के बाद योगिराज कहते हैं कि मुझे सच में समय की गति का पता नहीं चला तब से समाधि लगाये हुए मैं इस दुराचारमय समय में जगा हूँ –

अनुवाद– यह सुनकर कुछ मुस्कुराते हुए से, चारों ओर देखकर, योगिराज बोले– ''सच में मुझे समय की गति का पता नहीं चला। युधिष्ठिर के समय में समाधि लगाकर मैं विक्रमादित्य के समय में उठा था और विक्रमादित्य के समय में पुनः समाधि लगाकर इस दुराचारपूर्ण समय में जगा हूँ। मैं फिर जाकर समाधि ही लगाऊँगा किन्तु तब तक संक्षेप में बताइये कि भारतवर्ष की क्या दशा है?''

शब्दार्थ– इदम् =ब्रह्मचारी गुरु के कथन को, **आकर्ण्य** =सुनकर, **स्मित्वेव** =मानो मुस्कुरा कर, **जगाद** =बोले, **न लक्षितः** =नहीं समझा, **कलितसमाधिः** =समाधि धारण करने वाले, **उदस्थाम्** =उठा, **समाधिमाकलय्य** =ध्यान लगाकर, **उत्थितोऽस्मि** =उठा हूँ, **कलयिष्यामि** =धारण करूँगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आकर्ण्य–आ+कर्ण+क्त्वा+ल्यप्। **स्मित्वा**–ष्मिङ्+क्त्वा। **अवलोक्य**–अव+लोक+क्त्वा+ल्यप्। **जगाद्**–गद व्यक्तायां वाचि+लिट्+तिप्। **यौधिष्ठिरे**–युधिष्ठिरस्य अयं यौधिष्ठिरः (युधिष्ठिर+अण्), तस्मिन् यौधिष्ठिरे। **वैक्रम समये**–विक्रमस्य अयम् इति (विक्रम+अण्) वैक्रमः, स चासौ समयः, तस्मिन् वैक्रमसमये। **आकलय्य**–आ+कल+ल्यप्। **दुराचारमये**–दुराचार+मयट्। **उत्थितः**–उद्+स्था+इट्+क्त। **उदस्थाम्**–उत्+स्था+लुङ्, उ.पु.ए.व.। **गत्वा**–गम्+क्त्वा। **कलयिष्यामि**–कल+लृट्+मिप्। **संक्षिप्य**–सम्+क्षिप्+ल्यप्।

तत् संश्रुत्य भारतवर्षीय-दशा-संस्मरण-सञ्जात-शोको हृदयस्थ- प्रसाद सम्भारोद्गिरण-श्रमेणेवातिमन्थरेण स्वरेण ''मा स्म धर्मध्वंसन- घोषणैर्योगिराजस्य धैर्यमवधीरय'' इति कण्ठं रुन्धतो बाष्पानविगणय्य, नेत्रे प्रमृज्य, उष्णं निःश्वस्य, कातराभ्यामिव नयनाभ्यां परितोऽवलोक्य ब्रह्मचारिगुरुः प्रवक्तुमारभत–

''भगवन्! दम्भोलिघटितेयं रसना, या दारुण-दानवोदन्तोदीरणैर्न दीर्य्यते, लोहसारमयं हृदयम्, यत् संस्मृत्य यावनान् परस्सहस्त्रान् दुराचारान् शतधा न भिद्यते, भस्मसाच्च

न भवति। धिगस्मान्, येऽद्यापि जीवामः श्वसिमः, विचरामः, आत्मन आर्य्यवंश्यांश्चाऽभिमन्यामहे।''

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– भारतवर्ष की दशा के स्मरण से ब्रह्मचारी गुरु दुःखित हो उठते हैं और आँखों में अश्रु भरकर स्वयं को धिक्कारते हुए उस स्थिति का वर्णन करते हैं।

अनुवाद– इसे सुनकर भारतवर्ष की दशा के स्मरण से उत्पन्न शोकवाले ब्रह्मचारी गुरु ने मानो हृदय में स्थित प्रसन्नता को व्यक्त करने के श्रम से अत्यन्त धीमे स्वर से, ''धर्मविध्वंस की कथाओं से योगिराज का धैर्य मत डिगाओ'' यह कहते हुए गला रुँधने वाले आँसुओं की परवाह न करके, आँखों को पोंछकर कहना प्रारम्भ किया–

''भगवन्! मेरी यह जीभ वज्र से बनी है, जो भीषण दानवों के वृत्तान्त के वर्णन से कट नहीं जाती। मेरा हृदय लोहे का बना हुआ है, जो यवनों के द्वारा किये गये हजारों से अधिक दुराचारों का स्मरण कर टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता और जलकर राख नहीं हो जाता। धिक्कार है हम लोगों को जो आज भी जीते हैं, साँस लेते हैं इधर-उधर घूमते हैं और अपने को आर्यों का वंशज मानते हैं।''

शब्दार्थ– **भारतवर्षीयदशासंस्मरणसञ्जातशोकः** =भारतवर्ष की दशा का स्मरण कर उत्पन्न हुए शोक वाले, **हृदयस्थप्रसादसम्भारोद्गिरणश्रमेणेव** = मन में स्थित प्रसन्नता को उगलने (व्यक्त करने) के परिश्रम से मानो, **अतिमन्थरेण स्वरेण** =अत्यन्त धीमी वाणी से, **मा स्म** =निषेधवाचक अव्यय, **धर्मध्वंसनघोषणैः** =धर्म के विनाश के प्रकाशन से, **अवधीरय** =विचलित करो, **बाष्पानविगणय्य** =आँसुओं की परवाह न कर, **नेत्रे प्रमृज्य** =आँखों को पोंछकर, **कातराभ्यामिव नयनाभ्यां** =मानो दीनतापूर्ण आँखों से, **आरभत** =आरम्भ किया। **दम्भोलिघटिता** =वज्र से बनी हुई, **दारुणदानवोदन्तोदीरणैः** =भयङ्कर दानवों के वृत्तान्त के कथन से, **न दीर्य्यते** =फट नहीं जाती, **दुराचारान्** =अत्याचारों को, **न भिद्यते** =भिन्न-भिन्न नहीं हो जाता। **धिगस्मान्** =हम लोगों को धिक्कार है, **विचरामः** =विचरण करते हैं, **अभिमन्यामहे** =मानते हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **संश्रुत्य**–सम्+श्रु+क्त्वा+ल्यप्। **उद्गिरण**–उद्+गृ+ल्युट्। **अवधीरय**–अव+धृ+लोट्। **अविगणय्य**–अ+वि+गण+ल्यप्। **प्रमृज्य**–प्र+मृज्+ क्त्वा+ल्यप्। **निःश्वस्य**–निर्+श्वस्+क्त्वा+ल्यप्। **प्रवक्तुम्**–प्र+वच्+तुमुन्। **आरभत**–आ+रभ्+लङ्+तिप्। **उदीरण**–उद्+इर्+ल्युट्+अन्। **दीर्य्यते**–दृ+भावकर्म यक्+लट्+तिप्। **यावनान्**–यवन+अण् (द्वि.ब.व.)। **संस्मृत्य**–सम्+स्मृ+क्त्वा+ल्यप्।

उपक्रममुमाकर्ण्य अवलोक्य च मुनेर्विमनायमानं हरिद्राद्रवक्षालितमिव वदनम्, निपतद्वारिबिन्दुनी नयने, अञ्चित-रोमकञ्चुकं शरीरम्, कम्पमानमधरम्, भज्यमानं च स्वरम्, अवागच्छत् ''सकलानर्थमयः, सकल-वञ्चनामयः, सकलपापमयः सकलोपद्रवमयश्चायं वृत्तान्तः''–इति, ''अत एव तत्स्मरणमात्रेणापि खिद्यत एष हृदये, तन्नाहमेनं निरर्थं जिग्लापयिषामि, न वा चिखेदयिषामि'' इति च विचिन्त्य–

''मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला-कलाप-कलनः सकल-कालनः करालः कालः। स एव कदाचित् पयः-पूर-पूरितान्यकूपार-तलानि मरूकरोति। सिंह-व्याघ्र- भल्लूक-गण्डक-फेरु-शश-सहस्त्र-व्याप्तान्यरण्यानि जनपदीकरोति, मन्दिर-प्रासाद-हर्म्य-शृङ्गाटक-चत्वरोद्यान-तडाग-गोष्ठमयानि नगराणि च काननीकरोति। निरीक्ष्यतां कदाचिदस्मिन्नेव भारते वर्षे यायजूकै राजसूयादियज्ञा व्ययाजिषत, कदाचिदिहैव

वर्ष-वाताऽऽतप-हिम-सहानि तपांसि अतापिषत। सम्प्रति तु म्लेच्छैर्गावो हन्यन्ते, वेदा विदीर्यन्ते, स्मृतयः समृद्यन्ते, मन्दिराणि मन्दुरीक्रियन्ते, सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते। सर्वमेतन्माहात्म्यं तस्यैव महाकालस्येति कथं धीरधौरेयोऽपि धैर्यं विधुरयसि? शान्तिमाकलय्यातिसङ्क्षेपेण कथय यवनराज्य-वृत्तान्तम्। न जाने किमित्यनावश्यकमपि शुश्रूषते मे हृदयम्''–इति कथयित्वा तूष्णीमवतस्थे।

सन्दर्भ–पूर्ववत्।

प्रसंग– इस वृत्तान्त को सुनकर ब्रह्मचारी गुरु के दुःखी और पीले पड़े हुए चेहरे को देखकर योगिराज समझ जाते हैं कि ये सारा वृत्तान्त व्यर्थ है। वह कहते हैं कि मुनिवर कालदेवता बड़े विलक्षण हैं ये कभी समुद्रतल को मरुस्थल बना देते हैं कभी भयंकर पशुओं से व्याप्त जंगल को नगर बना देते हैं। अतः आप भारतवर्ष की दशा का वर्णन करें।

अनुवाद– इस वृत्तान्त को सुनकर तथा ब्रह्मचारी गुरु के हल्दी के रस में रंगे हुए के समान उदास अर्थात् पीले पड़े हुए चेहरे, आँसू बहाते हुए नेत्रों, रोमांचित शरीर, फड़कते ओंठ और लड़खड़ाती हुई आवाज को देखकर योगिराज समझ गये कि यह सारा वृत्तान्त अनर्थ, वञ्चना, पाप और उपद्रवों से परिपूर्ण है। अतः उसके स्मरण मात्र से ही इनका हृदय दुःखी हो रहा है। इसलिये मैं इनको व्यर्थ में ही और अधिक दुःखी अथवा खिन्न नहीं करना चाहता। यह सोचकर (बोले)–

''हे मुनि! सारी कलाओं के निर्माता और सबके संहारक, भगवान् महाकाल बड़े ही विलक्षण हैं। ये कभी अथाह जलराशि से भरे हुए समुद्रतलों को मरुस्थल बना देते हैं। कभी हजारों सिंह, बाघ, भालू, गेंडा, सियार, खरगोशों से व्याप्त जंगलों को नगर बना देते हैं और कभी मन्दिरों, राजमहलों, अट्टालिकाओं, चौराहों, चबूतरों, उपवनों, सरोवरों और गोशालाओं से भरे नगरों को जंगल बना देते हैं। देखिये, कभी इसी भारतवर्ष में याज्ञिकों के द्वारा राजसूय आदि यज्ञ किये जाते थे, कभी यहीं पर वर्षा, आँधी, धूप और हिमपात सहकर तपस्यायें की गयी थीं। इस समय तो म्लेच्छों द्वारा गायें मारी जाती हैं, वेद की पुस्तकें फाड़ी जाती हैं, स्मृतियाँ कुचली जाती हैं, मन्दिर, घुड़साल बनाये जाते हैं, पतिव्रता स्त्रियों का सतीत्व नष्ट किया जाता है और सज्जनों को सताया जाता है। यह सब उसी महाकाल की महिमा है। आप धैर्यशालियों में अग्रणी होकर भी धैर्य क्यों खोते हैं ? शान्त होकर अत्यन्त संक्षेप में यवनराज्य का वृत्तान्त कहिये। अनावश्यक होते हुए भी न जाने क्यों मेरा हृदय इसे सुनना चाहता है।'' यह कहकर योगिराज चुप हो गये।

शब्दार्थ– **उपक्रमम्** =वृत्तान्त को, **विमनायमानं** =उदास दुःखी, **हरिद्राद्रवक्षालितम्** =हल्दी के रस से रंगे हुए के, **इव** =समान, **निपतद्वारिबिन्दुनी** =आँसू बनाने वाले, **अञ्चितरोमकञ्चुकं** =रोमांच से युक्त, **भज्यमानम्** =भंग होता हुआ, टूटता हुआ। **कम्पमानम्** =काँपते हुए, **अवागच्छत्** =जान गये, **सकलानर्थमयः** =सम्पूर्ण अनर्थों से युक्त, **सकलवञ्चनामयः** =अशेष वञ्चनाओं से युक्त, **सकलोपद्रवमयः** =समस्त उपद्रवों से युक्त, **खिद्यते** =दुःखी हो रहे हैं, **जिग्लापयिषामि** =दुःखी नहीं करना चाहता हूँ, **न वा चिखेदयिषामि** =और न ही खिन्न करना चाहता हूँ, **सकलकलाकलापकलनः** =समस्त कलाओं का कर्ता, **सकलकालनः** =सभी को नष्ट करने वाला, **करालः** =भीषण, **पयःपूरपूरितानि** =जलप्रवाह से परिपूर्ण, **अकूपारतलानि** =समुद्र को, **मरूकरोति** =रेगिस्तान बना देता है, **काननीकरोति** =जंगल के समान बना देता है, **यायजूकैः** =याज्ञिकों के द्वारा, **व्ययाजिषत** =किये जाते थे, **अतापिषत** =तप किये जाते थे, **विदीर्यन्ते** =फाड़े जा रहे हैं, **सम्मृद्यन्ते** =कुचल दी जाती हैं, **मन्दुरीक्रियन्ते** =घुड़साल बना दिये जाते हैं, **धीरधौरेयोऽपि** =धैर्यशालियों में अग्रणी होने पर भी, **विधुरयसि** =छोड़ रहे हो, **शान्तिमाकलय्य** =शान्ति धारण कर, **शुश्रूषोः** =सुनने की इच्छा करता है, **तूष्णीम्** =मौन, **अवतस्थे** =हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **उपक्रमम्**–उप+क्रम+भावे घञ्। **विमनायमानम्**–वि+मन+क्यच्+शानच्। **कम्पमानम्**–कम्प+शानच्। **भज्यमानम्**–भज्+यक्+शानच्। **अवागच्छत्**–अव+गम्+लङ्+तिप्। **जिग्लापयिषामि**–ग्लै हर्षक्षये+पुक्+णिच्+ सन्+लट्+मिप्। **चिखेदयिषामि**–खिद्+णिच्+सन्+मिप्। **विचिन्त्य**–वि+चिन्त+ल्यप्। **कलनः**–कल+ल्युट्। **कालनः**–कल+णिच्+ल्युट्। **यायजूकैः**–पुनः पुनः भजते इति क्रियासमभिहारे यङ्, यजजपदशां यङः इत्यूकः। **अतापिषत**–तप+लुङ्+झ, भावकर्म। **विदीर्यन्ते**–वि+दृ+यक्+लट्+झि। **आकलय्य**–आ+कल्+ल्यप्। **अवतस्थे**–अव+स्था+लिट्+त, 'समवप्रविभ्यः स्थः' आत्मनेपदं।

बोध प्रश्न

1) निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही का चिन्ह लगाइए –

i) 'विक्रमराज्येऽपि कथमेष पातकमयो दुराचाराणामुपद्रवः' कथन है – योगिराज/ब्रह्मचारी गुरु

ii) 'मा स्म धर्मविध्वंसन घोषणैर्योगिराजस्य धैर्यमवधीर्य' कथन है– ब्रह्मचारी गुरु/गौरसिंह

iii) 'उपक्रमम्' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है – ल्युट/घञ्

iv) 'मुने! विलक्षणोऽयं भगवान् सकल-कला-कलाप' कथन है – योगिराज/ब्रह्मचारी गुरु

v) 'पर्वतीयान्' पद में प्रत्यय का प्रयोग है – ख/छ

2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

i) आदित्य पद से विभूषित ..... कल ही शकों को जीतकर राजधानी आये थे।

ii) ..... दुराचारियों का पापमय उपद्रव कैसा?

iii) इस समय ..... अन्य प्रकार का हो गया है।

iv) ..... के समय में समाधि लगाकर विक्रमादित्य के समय में उठा था।

v) ..... भगवान् महाकाल बड़े ही विलक्षण हैं।

3) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

i) विक्रमादित्य की विजय पताकायें आज भी किसके नेत्रों में फहरा रहीं हैं?

.....

.....

.....

.....

ii) किसके राज्य को व्यतीत हुए सत्रह सौ वर्ष हो चुके हैं?

.....

.....

.....

iii) भारतवर्ष की दशा का स्मरण करके कौन दुःखित हो उठते हैं?

.....

.....

.....

.....

iv) 'कम्पमानम्' पद में किस प्रत्यय का प्रयोग किया गया है?

.....

.....

.....

.....

अभ्यास प्रश्न

i) ब्रह्मचारी गुरु के दुःखी होने का क्या कारण था? सविस्तार लिखिए।

ii) योगिराज ब्रह्मचारी गुरु को किस प्रकार सान्त्वना देते हैं? लिखिए।

12.3 सारांश

व्यास जी ने शिवराजविजय उपन्यास में भारतवर्ष की दशा का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है। उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से विक्रमादित्य के समय के गौरवशाली भारतवर्ष से भी पाठकों को परिचित कराया। कन्या के अपहरण से दुःखी होकर योगिराज भारतवर्ष की दशा के विषय में जानने की इच्छा प्रकट करते हैं। योगिराज द्वारा यह कहने पर कि 'विक्रम' के राज में यह उपद्रव कैसे सम्भव है। तब ब्रह्मचारी गुरु कहते हैं कि महाराज अब विक्रम का समय नहीं है। उन्हें तो भारतभूमि छोड़कर गये हुए सत्रह सौ वर्ष बीत चुके हैं। भारतवर्ष की दशा का वर्णन करते हुए वह कहते हैं कि हम सबको धिक्कार है जो हम स्वयं को आर्यवंश में उत्पन्न होने वाला मानते हैं। तत्पश्चात् योगिराज ब्रह्मचारी गुरु से कहते हैं कि हे मुनिवर! कालदेवता बड़े विलक्षण हैं। इस समय जो भी घटनायें घटित हो रही हैं वह सब उसी महाकाल की महिमा है। अतः आप धैर्य धारण कीजिये और यवनराज्य का वर्णन कीजिये।

12.4 शब्दावली

क्रन्दन	–	रोना
वीथीषु	–	गलियों में
निनादः	–	आवाज
विध्वंस	–	नष्ट
विपिनानाम्	–	जंगलों की
आकर्ण्य	–	सुनकर
घुड़साल	–	जहाँ घोड़े बाँधे जाते हैं ऐसा स्थान

कम्पमानम्	–	काँपते हुए
प्रमृज्य	–	आँखों को पोंछकर
म्लेच्छ	–	कसाई
तूष्णीम्	–	मौन

12.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः) – डा. रमाशंकर मिश्र,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी।

2) शिवराजविजयः (प्रथम विराम) – डा. देवनारायण मिश्र,साहित्य भण्डार,मेरठ।

3) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः) – डा. गायत्री शुक्ला,इन्दिरा प्रकाशन,इलाहाबाद।

4) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः प्रथमो निःश्वासः) – डा. चन्द्रिका लाल श्रीवास्तव,गुरुमन्त्र प्रकाशन,गोरखपुर।

12.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i) योगिराज (ii) ब्रह्मचारी गुरु (iii) घञ् (iv) योगिराज (v) छ

2) i) विक्रमादित्य (ii) विक्रमादित्य के राज्य में (iii) भारतदेश (iv) युधिष्ठिर
   v) सबके संहारक

3) i) विक्रमादित्य की विजय पताकायें आज भी योगिराज के नेत्रों में फहरा रहीं हैं।
   ii) विक्रम राज्य को व्यतीत हुए सत्रह सौ वर्ष हो चुके हैं।
   iii) भारतवर्ष की दशा का स्मरण ब्रह्मचारी गुरु दुःखित हो उठते हैं।
   iv) 'कम्पमानम्' पद में शानच् प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

इकाई 13 शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 21-29

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 गद्यांश का अनुवाद – अथ स मुनिः ..... पर्वत कन्दरे तपस्तप्तुं जगाम।

13.3 सारांश

13.4 शब्दावली

13.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- वीर विक्रम के परलोकगमन के पश्चात् की भारतवर्ष की स्थिति का अध्ययन कर सकेंगे।
- महमूद द्वारा भारतवर्ष पर किए गए आक्रमण के विषय में अध्ययन करेंगे।
- महमूद ने किस प्रकार सोमनाथ तीर्थ को नष्ट किया, यह जान सकेंगे।
- महमूद की मृत्यु के पश्चात् भारतवर्ष पर किन यवन शासकों ने आक्रमण किया और शासन किया, आप इस विषय में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- महाराष्ट्र केसरी की वीरता और निपुणता का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

13.1 प्रस्तावना

अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय संस्कृत गद्य-साहित्य का एक उत्कृष्ट उपन्यास है। इस उपन्यास के माध्यम से व्यास जी ने भारतवर्ष की सामाजिक, साँस्कृतिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस इकाई के माध्यम से आप भारतवर्ष की समृद्धि और उसके वैभव के विषय में जान सकेंगे। योगिराज के कहने पर ब्रह्मचारी गुरु भारतवर्ष की स्थिति का वर्णन करना प्रारम्भ करते हैं कि किस प्रकार विक्रमादित्य के परलोकगमन के पश्चात् राजाओं के मध्य पारस्परिक द्वेषभाव बढे परिणामस्वरूप महमूद गजनवी जैसे लोगों ने भारतवर्ष पर आक्रमण किया। उसने राजाओं के मध्य आपसी वैरभाव को बढाकर भारतवर्ष में यवन राज्य का बीजारोपण किया जिसका अध्ययन आप प्रस्तुत इकाई में करेंगे।

13.2 गद्यांश का अनुवाद – अथ स मुनिः..... पर्वत कन्दरे तपस्तप्तुं जगाम।

अथ स मुनिः –''भगवन्! धैर्येण, प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण, विक्रमेण, शान्त्या, श्रिया, सौख्येन, धर्मेण विद्यया च सममेव परलोकं सनाथितवति तत्रभवति वीरविक्रमादित्ये, शनैः शनैः पारस्परिकविरोध-विशिथिली-कृतस्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी-भ्रूभङ्ग-भूरिभाव-प्रभाव-पराभूत-वैभवेषु भटेषु, स्वार्थ-चिन्ता-सन्तान-वितानैकतानेष्वमात्यवर्गेषु, प्रशंसामात्रप्रियेषु प्रभुषु, ''इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं कुबेरस्त्वम्'' इति वर्णनामात्रसक्तेषु बुधजनेषु कश्चन गजिनी-स्थाननिवासी महामदो यवनः ससेनः प्राविशद् भारते वर्षे। स च प्रजा विलुण्ठ्य, मन्दिराणि निपात्य, प्रतिमा विभिद्य, परश्शतान् जनांश्च दासीकृत्य, शतशः उष्ट्रेषु रत्नान्यारोप्य स्वदेशमनैषीत्।

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय के प्रथम विराम के प्रथम निःश्वास से उद्धृत है।

प्रसंग– अनुचित होने पर भी योगिराज के कहने पर ब्रह्मचारी गुरु ने भारत की उस स्थिति का वर्णन करना आरम्भ किया।

व्याख्या– तब उस मुनि अर्थात् ब्रह्मचारी गुरु ने कहना प्रारम्भ किया– भगवन्! धैर्य, हर्ष, प्रताप, तेज, वीरता, पराक्रम, शान्ति, शोभा, सुख, धर्म एवं विद्या के सहित वीर विक्रमादित्य के परलोक चले जाने पर, धीरे-धीरे आपसी झगड़ों के कारण राजाओं के पारस्परिक स्नेह-बन्धनों के शिथिल हो जाने पर, वीर योद्धाओं के कामिनियों के कटाक्षों एवं हाव-भावों के प्रभाव में आकर सारी सम्पत्ति नष्ट कर देने पर, मन्त्रियों के केवल स्वार्थ साधन की चिन्ताओं में तल्लीन हो जाने पर, राजाओं के प्रशंसा-प्रिय हो जाने पर, विद्वानों के 'आप इन्द्र हैं, आप वरुण हैं, आप कुबेर हैं' इस प्रकार केवल राजाओं की चाटुकारिता में तत्पर हो जाने पर, कोई गजिनी स्थान निवासी महमूद नामक यवन ने सेना सहित भारतवर्ष में प्रवेश किया। वह प्रजाओं को लूटकर मन्दिरों को ध्वस्त करके मूर्तियों को तोड़कर, सैकड़ों लोगों को दास बनाकर, सैकड़ों ऊँटों पर रत्न लादकर अपने देश ले गया।

शब्दार्थ– **अथ** =योगिराज के शान्त हो जाने पर, **सौख्येन** =सुख से, **विरोधविशिथिलीकृतस्नेहबन्धनेषु** =आपसी झगड़ों के कारण पारस्परिक स्नेह बन्धनों के शिथिल हो जाने पर, **भामिनीभ्रूभङ्गभूरिभावप्रभावपराभूतवैभवेषु** =कामिनियों के कटाक्षों एवं हाव-भावों के प्रभाव में आकर सारी सम्पत्ति नष्ट कर देने पर, **भटेषु** =वीर योद्धाओं के, **स्वार्थचिन्तासन्तानवितानैकतानेषु** =केवल स्वार्थ साधन की चिन्ताओं में तल्लीन हो जाने पर, **ससेनः** =सेना के सहित, **विलुण्ठ्य** =लूटकर, **विभिद्य** =तोड़कर, **उष्ट्रेषु** =ऊँटों पर, **आरोप्य** =लादकर, **अनैषीत्** =ले गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– 'धैर्येण' इत्यारभ्य 'विद्यया चे' ति पर्यन्तं 'समम्' इत्यस्य योगे तृतीया। **सनाथितवति**–सनाथ+णिच्+क्त+क्तिन्+मतुप्, सप्तम्यन्तं पदम्। **प्राविशत्**–प्र+विश्+लङ्+तिप्। **विलुण्ठ्य**–वि+लुण्ठ+ल्यप्। **निपात्य**–नि+पत्+णिच्+ल्यप्। **विभिद्य**–वि+भिद्+क्त्वा+ल्यप्। **दासीकृत्य**–न दासाः अदासाः, अदासान् दासान् कृत्वा–इति दासीकृत्य (च्विप्रत्ययः)।

एवं स ज्ञातास्वादः पौनःपुन्येन द्वादशवारमागत्य भारतमलुलुण्ठत्। तस्मिन्नेव च स्वसंरम्भे एकदा गुर्जरदेश चूडायितं सोमनाथ-तीर्थमपि धूलीचकार। अद्य तु तत्तीर्थस्य नामापि केनापि न स्मर्यते; परं तत्समये तु लोकोत्तरं तस्य वैभवमासीत्। तत्र हि

महार्ह-वैदूर्य-पद्मराग-माणिक्य मुक्ताफलादि-जटितानि कपाटानि स्तम्भान्, गृहावग्रहणीः, भित्तीः, वलभीः विटङ्कानि च निर्मथ्य, रत्ननिचयमादाय, शतद्वय-मणसुवर्ण-शृङ्खलावलम्बिनीं चञ्चच्चाकचक्य-चकितीकृतावलोचक-लोचन-निचयां महाघण्टां प्रसह्य सङ्गृह्य महादेवमूर्तावपि गदामुदतूतुलत्।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– ब्रह्मचारी गुरु भारत की दुराचारमयी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं कि किस प्रकार उस महमूद गजनवी ने 12 बार इस देश को लूटा और सोमनाथ मन्दिर पर भी गदा चलायी।

व्याख्या– इस प्रकार लूटने का आस्वाद लग जाने पर उसने पुनः-पुनः बारह बार आकर भारत को लूटा। अपने उसी उत्साह के वशीभूत होकर उसने एक बार गुजरात देश के मुकुट के समान सोमनाथतीर्थ को भी धूल में मिला दिया। आज तो उस तीर्थ का नाम भी किसी के द्वारा स्मरण नहीं किया जाता किन्तु उस समय उसका अलौकिक वैभव था। उसमें बहुमूल्य वैदूर्य, पद्मराग, माणिक्य तथा मोतियों से जड़े हुए किवाड़ों, खम्भों, देहलियों, दीवारों, छज्जों और कबूतरों के दरबों को नष्ट करके, रत्न राशि लेकर, दो सौ मन सोने की जंजीर में लटकने वाली और देदीप्यमान चमचमाहट से दर्शकों के नेत्रों को चमत्कृत कर देने वाली महाघण्टा को भी बलूपर्वक छीनकर, उसने महादेव की मूर्ति पर भी प्रहार करने के लिये गदा उठाई।

शब्दार्थ– **ज्ञातास्वादः** =लूटने का आस्वाद, **स्वसंरम्भे** =निज उद्योगभूत अपने आक्रमण में, **गुर्जरदेशचूडायितम्** =गुजरात प्रदेश के चूड़ामणिस्वरूप, **धूलीचकार** =धूल में मिला दिया, **तत्तीर्थस्य** =उस तीर्थ का, **गृहावग्रहणीः** =घर की देहलियों को, **भित्तीः** =दीवालों को, **वलभीः** =छज्जा को, **विटङ्कानि** =कबूतरों के दरबों को, **निर्मथ्य** =मथकर, **रत्ननिचयम्** =रत्नसमूह को, **चञ्चच्चाकचक्यचकितीकृतावलोचकलोचननिचयाम्** =प्रकाशित चमक से दर्शकों को नेत्रों को चकित कर देने वाले, **प्रसह्य** =बलात्, **उदतूतुलत्** =उठाई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पुनः पुनः इत्यस्य भावः पौनःपुन्यं, तेन पौनःपुन्येन। **अलुलुण्ठत्**–लुठि स्तेये, चुरादिः+णिजन्तात् लुङ्, प्र.पु.ए.व.। **चूडायितम्**–चूडा इव आचारतीति चूडायते; चूडा+क्यङ्+क्त। **धूलीचकार**–अधूलिं धूलिं कृतवान्, धूलि+च्वि+कृ+लिट् 'च्वौ च' इति इकारदीर्घत्वम्। **निर्मथ्य**–निर्+मथ+ल्यप्। **प्रसह्य**–प्र+सह+ल्यप्।

अथ "वीर! गृहीतमखिलं वित्तम्, पराजिता आर्य्यसेनाः, बन्दीकृता वयम्, सञ्चितममलं यशः, इतोऽपि न शाम्यति ते क्रोधश्चेदस्मांस्ताडय, मारय, छिन्धि, भिन्धि, पातय, मज्जय, खण्डय, कर्तय, ज्वलय; किन्तु त्यजेमामकिञ्चित्करीं जडां महादेव-प्रतिमाम्। यद्येवं न स्वीकरोषि तद् गृहाणास्मत्तोऽन्यदपि सुवर्णकोटिद्वयम्, त्रायस्व, मैनां भगवन्मूर्तिं स्प्राक्षीः" इति साम्रेडं कथयत्सु रुदत्सु पतत्सु विलुण्ठत्सु प्रणमत्सु च पूजकवर्गेषु; "नाहं मूर्तीर्विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि" इति सङ्गर्ज्य जनताया हाहाकार-कलकलमाकर्णयन् घोरगदया मूर्तिमतुत्त्रुटत्। गदापातसमकालमेव चानेकार्बुदपद्ममुद्रामूल्यानि रत्नानि मूर्तिमध्यादुच्छलितानि परितोऽवाकीर्यन्त। स च दग्धमुखः तानि रत्नानि मूर्तिखण्डानि च क्रमेलकपृष्ठेष्वारोप्य सिन्धुनदमुत्तीर्य स्वकीयां विजयध्वजिनीं गजिनीं नाम राजधानीं प्राविशत्।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में महमूद गजनवी द्वारा क्रूरतापूर्वक सोमनाथ में शिवलिंग भंग करने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– उसके बाद हे वीर! तुमने सारा धन ले लिया, आर्यों की सेना पराजित हो गई, हमलोगों को बन्दी बना लिया, स्वच्छ यश सञ्चित कर लिया। यदि इतने पर भी तुम्हारा क्रोध शान्त नहीं होता, तो हम लोगों को पीटो, मारो, चीर डालो, पर्वत से गिरा दो, समुद्र में डुबा दो, टुकड़े-टुकड़े कर डालो, कतर डालो, अग्नि में जला दो, किन्तु आपका कुछ न बिगाड़ने वाली महादेवजी की इस चेतनारहित (जड़) मूर्ति को छोड़ दो। यदि आपको यह भी स्वीकार न हो, तो हम लोगों से और भी दो करोड़ स्वर्ण मुद्राएं ले लो, किन्तु रक्षा करो; भगवान् की इस मूर्ति को स्पर्श न करो। इस प्रकार पुजारियों के बार-बार कहने पर, रोने-बिलखने पर, पैरों के ऊपर गिरने पर, भूमि पर लोटने और प्रणाम करने पर भी मैं, 'मूर्ति बेचता नहीं हूँ, अपितु तोड़ता हूँ' इस प्रकार गरजकर जन-समूह के हाहाकार के शब्द को सुनते हुए, उसने भयंकर गदा से शिवलिंग को तोड़ दिया। गदा गिरने के साथ ही मूर्ति में से अनेक अरब पद्म स्वर्णमुद्राओं के रत्न उछल पड़े तथा चारों ओर बिखर गये; और वह मुँहजला उन रत्नों और मूर्तिखण्डों को ऊँटों की पीठ पर लादकर सिन्धु नदी को पारकर, अपनी विजयध्वज वाली राजधानी गजिनी में प्रविष्ट हुआ।

शब्दार्थ– **अथ** =अनन्तर, **गृहीतम्** =ले लिया, **अखिलम्** =सम्पूर्ण, **अमलम्** =स्वच्छ, **शाम्यति** =शान्त होता है, **ताडय** =मारो (पीटो), **मारय** =मारो, **छिन्धि**=काटो, **भिन्दि** =भेदन करो, **मज्जय** =डुबा दो, **कर्तय** =कतर दो, **इमाम्** =सामने स्थित, **अकिञ्चित्करी** =कुछ न करने वाली, **त्रायस्व** =रक्षा करो, **एनाम्** =इस, **स्प्राक्षीः** =स्पर्श करो, **साम्रेडम्** =पुनः-पुनः, **विलुण्ठत्सु** =पृथ्वी पर लोटने पर, **भिनद्मि** =तोड़ता हूँ, **हाहाकारकलकलम्** ='हा-हा' इस प्रकार की ध्वनि को, **आकर्णयन्** =सुनते हुए, **अतुत्रुटत्** =तोड़ डाला, **गदापातसमकालमेव** =गदा गिरने के साथ ही, **अनेकार्बुदपद्ममुद्रामूल्यानि** =अनेक अरब पद्म मुद्रा के मूल्य वाले, **अवाकीर्यन्त** =बिखर गये, **दग्धमुखः** =मुँहजला, **उत्तीर्य** =पारकर।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **गृहीतम्**–ग्रह उपादाने+क्त, **पराजिता**–पर+आ+जि+क्त। **सञ्चितम्**–सम्+चि चयने+क्त। **अमलम्**–न विद्यते मलं यस्मिन् तत्। **अकिञ्चित्करीम्**–किञ्चित् करोतीति किञ्चित्करी, किञ्चित्+कृ+ट+ङीप्, ततो नञ्समासः। **बन्दीकृताः**–बन्द+च्वि+कृ+क्त।**त्रायस्व**–त्रै रक्षणे आत्मनेपद, लोट्, म.पु.ए.व.। **मा स्प्राक्षीः**–स्पृश्+लुङ् (सिप्)–माङ्योगे लुङ् अडागमाभावश्च। **अतुत्रुटत्**–त्रुट् छेदने चुरादि, णिजन्तात् लुङ्। **उत्तीर्य**–उत्+तॄ+ल्यप्।

अथ कालक्रमेण सप्ताशीत्युत्तरसहस्त्रतमे (1087) वैक्रमाब्दे सशोकं सकष्टं च प्राणांस्त्यक्तवति महामदे, गोरदेशवासी कश्चित् शहाबुद्दीन नामा प्रथमं गजिनीदेशमाक्रम्य, महामदकुलं धर्मराजलोकाध्वन्यध्वनीनं विधाय, सर्वाः प्रजाश्च पशुमारं मारयित्वा, तद्रुधिरार्द्रमृदा गोरदेशे बहून गृहान् निर्माय चतुरङ्गिण्याऽनीकिन्या भारतवर्षं प्रविश्य, शीतलशोणितानप्यसयन् पञ्चाशदुत्तर-द्वादश-शतमितेऽब्दे (1250) दिल्लीमश्वयाम्बभूव।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में महमूद गजनवी की मृत्यु के पश्चात् शहाबुद्दीन का भारत पर आक्रमण करने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– तत्पश्चात् कालक्रम से विक्रम संवत् 1087 में महमूद गजनवी की शोक और कष्टपूर्वक मृत्यु हो जाने पर, गोरदेश निवासी शहाबुद्दीन नामक किसी यवन ने पहले गजिनी देश पर आक्रमण करके, महमूद के वंशजों को यमलोक के पथ का पथिक बनाकर और समस्त प्रजा को पशुओं के समान मारकर, उन्हीं के रक्त से गीली मिट्टी से गोरदेश में

बहुत से घर बनवा कर, चतुरङ्गिणी सेना के साथ भारतवर्ष में प्रवेश कर युद्ध की इच्छा से रहित भारतीयों को भी तलवार के घाट उतारते हुए 1250 में घुड़सवार सेना के साथ दिल्ली पर चढ़ाई कर दी।

शब्दार्थ– सप्ताशीत्युत्तरसहस्त्रतमे =एक हजार सतासी, **वैक्रमाब्दे** =विक्रमादित्य द्वारा प्रवर्तित संवत्सर में, **प्राणांस्त्यक्तवति** =प्राण त्याग देने पर, **महामदकुलं** =महमूद के वंश को, **धर्मराजलोकाध्वनि** =यमलोक के मार्ग का, **अध्वनीनम्** =पथिक, **विधाय** =बनाकर, **तद्रुधिरार्द्रमृदा** =उसके खून की गीली मिट्टी से, **शीतलशोणितानपि** =ठण्डे रक्त वालों को भी अर्थात् युद्ध की इच्छा से रहित भारतीयों को भी, **असयन्** =तलवार के घाट उतारता हुआ, **पञ्चाशदुत्तरद्वादशशतमितेऽब्दे** =एक हजार दो सौ पचास संवत् में, **व्याकरणात्मक टिप्पणी– त्यक्तवति**–त्यज्+क्तवतु, सप्तमी एक.। **अध्वनीनम्**–अध्वानं मार्गम् अलं गच्छतीति अध्वनीनः पान्थः, तम् अध्वनीनम् 'अध्वनौ यत्खौ(5/2/16)। **निर्माय**–निर्+मा माने+क्त्वा+ल्यप्। **चतुरङ्गिण्या**–चत्वारि अङ्गानि यस्याः सा, तया। **अनीकिन्या**–अनीकं रणोऽस्त्यस्याः सा, तया। अनीक+इनिः 'अत इनिठनौ'। **असयन्**–असि+णिच्+शतृ। **अश्वयाम्बभूव**–अश्वैरतिचक्रामेत्याशयः, 'तेनातिक्रामति' इति णिच्, अश्व+णिच्+आम्+भू+लिट्, प्रथमपुरुष एकवचन।

ततो दिल्लीश्वरं पृथ्वीराजं कान्यकुब्जेश्वरं जयचन्द्रं च पारस्परिकविरोध-ज्वर-ग्रस्तं विस्मृत-राजनीतिं भारतवर्ष-दुर्भाग्यायमाणमाकलय्यानायासेनोभावपि विशस्य, वाराणसीपर्यन्तमखण्डमण्डलमकण्टकमकीटकिट्टं महारत्नमिव महाराज्यमङ्गीचकार। तेन वाराणस्यामपि बहवोऽस्थिगिरयः प्रचिताः, रिङ्गत्तरङ्ग-भङ्गा गङ्गाऽपि शोणित-शोणा शोणीकृता, परस्सहस्त्राणि च देवमन्दिराणि भूमिसात्कृतानि।

स एव प्राधान्येन भारते यावनराज्याङ्कुराऽऽरोपकोऽभूत्। तस्यैव च कश्चित् क्रीतदासः कुतुबुद्दीननामा प्रथमभारतसम्राट् सञ्जातः।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– शहाबुद्दीन की नृशंस बर्बरता का वर्णन प्रस्तुत गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– तत्पश्चात् उसने दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज तथा कन्नौज नरेश जयचन्द को आपसी वैर रूपी ज्वर से पीडित और राजनीति को भूलकर भारत के दुर्भाग्य के समान आचरण करते हुए जानकर, दोनों को अनायास ही मारकर, समस्त कीड़ों और मैल से अस्पृष्ट अर्थात् निर्मल, महान् रत्न के समान काशी तक फैले हुए समस्त जनपद सहित विस्तृत साम्राज्य को अपने अधीन कर लिया। उसने वाराणसी में भी हड्डियों के बहुत से पहाड़ लगा दिये। चंचल तरङ्गों वाली गङ्गा को भी उसने रक्तरञ्जित कर सोन नद बना दिया और हजारों से अधिक देवमन्दिर मिट्टी में मिला दिये।

भारतवर्ष में यवन राज्य का बीजारोपण प्रधानरूप से उसी ने किया। उसी का एक गुलाम, जिसका नाम कुतुबुद्दीन था, भारत का प्रथम सम्राट हुआ।

शब्दार्थ– पारस्परिकविरोधज्वरग्रस्तम् =परस्पर फूट के ज्वर से ग्रस्त, **विस्मृतराजनीतिम्** =राजनीति को भूले हुए, **आकलय्य** =जानकर, **अनायासेन** =बिना प्रयास के ही, **विशस्य** =मारकर, **अङ्गीचकार** =स्वायत्त कर लिया, **प्रचिताः** =चुन दिये, **रिङ्गतरङ्गभङ्गा** =चञ्चल लहरों से व्याप्त, **शोणितशोणा** =रक्त से लाल करके, **शोणीकृता** =सोन नदी बना दी गई, **परस्सहस्त्राणि** =हजारों से अधिक, **भूमिसात्कृतानि** =मिट्टी में मिला दिये गये, **क्रीतदासः** =गुलाम, **सञ्जातः** =बना।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **विशस्य**–वि+शस् हिंसायाम्+ल्यप्। **प्रचिताः**–प्र+चि+क्त। **सञ्जातः**–सम्+जनी प्रादुर्भावे+क्त।

तमारभ्याद्यावधि राक्षसा एव राज्यमकार्षुः। दानवा एव च दीनानदीदलन्। अभूत् केवलम् अकबरशाह-नामा यद्यपि गूढशत्रुर्भारतवर्षस्य, तथापि शान्तिप्रियो विद्वत्प्रियश्च। अस्यैव प्रपौत्रो मूर्तिमदिव कलियुगं, गृहीतविग्रह इव चाधर्मः, आलमगीरोपाधिधारी अवरङ्गजीवः सम्प्रति दिल्लीवल्लभतां कलङ्कयति। अस्यैव पताकाः केकयेषु मत्स्येषु मगधेषु अङ्गेषु वङ्गेषु कलिङ्गेषु च दोधूयन्ते, केवलं दक्षिणदेशेऽधुनाऽप्यस्य परिपूर्णो नाधिकारः संवृत्तः।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में सम्पूर्ण उत्तर भारत में यवनों के क्रूर शासन का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– तब से (कुतुबुद्दीन) से आरम्भ कर आज तक इन राक्षसों (यवनों) ने ही राज्य किया। दानवों ने ही दीन भारतीयों की हत्या की है। केवल अकबर बादशाह ही शान्तिप्रिय और विद्वानों का सम्मान करने वाला था, यद्यपि वह भी भारतवर्ष का गुप्त शत्रु था। इसी का प्रपौत्र (नाती), 'आलमगीर' उपाधिधारी औरंगजेब, जो मानो मूर्तिमान् कलियुग अथवा शरीरधारी अधर्म ही है, इस समय दिल्ली के सम्राट पद को कलंकित कर रहा है। उसी की पताकायें केकय (झेलम और चिनाब नदियों के मध्य का भाग, पंजाब), मत्स्य (राजपूताना), मगध (बिहार), अङ्ग (पूर्वी बिहार), बङ्ग (बंगाल) और कलिङ्ग (उड़ीसा) में फहरा रही हैं। केवल दक्षिण देश में ही इस समय भी इसका पूरा अधिकार नहीं हो पाया है।

शब्दार्थ– **तमारभ्य** =कुतुबुद्दीन से आरम्भ कर, **अकार्षुः** =किया, **अदीदलन्** =विदीर्ण किया, **गूढशत्रुः** =प्रच्छन्न शत्रु, **गृहीतविग्रहः** =शरीरधारी, **आलमगीरोपाधिधारी** = आलमगीर की उपाधि धारण करने वाला, **अवरङ्गजीवः** =औरङ्गजेब नामक, **वल्लभतां** =दिल्ली के शासन को, **संवृत्तः** =हो पाया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **अदीदलन्**–दल विदारणे (चुरादिः)+लुङ्+झि। **मूर्तिमत्**–मूर्ति+मतुप्। **उपाधिधारी**–उपाधि+धृ+णिनिः। **दोधूयन्ते**–धूञ् कम्पने क्रयादि+यङ्+प्र. पु.ब.व.। **संवृत्तः**–सम्+वृतु वर्तने+क्त।

दक्षिणदेशो हि पर्वतबहुलोऽस्ति, अरण्यानीसङ्कुलश्वास्तीति चिरोद्योगेनापि नायमशकन्महाराष्ट्रकेसरिणो हस्तयितुम्। साम्प्रतमस्यैवाऽऽत्मीयो दक्षिणदेश-शासकत्वेन ''शास्तिखान'' नामा प्रेष्यत इति श्रूयते। महाराष्ट्रदेशरत्नम्, यवन-शोणित-पिपासाऽऽकुलकृपाणः, वीरता-सीमन्तिनी-सीमन्त-सुन्दर-सान्द्र-सिन्दूर-दान-देदीप्यमानदोर्दण्ड,मुकुटमणिर्महाराष्ट्राणाम्, भूषणं भटानाम्, निधिर्नीतीनाम्, कुलभवनं कौशलानाम्, पारावारः परमोत्साहानाम्, कश्चन प्रातः-स्मरणीयः, स्वधर्माऽऽग्रह-ग्रह-ग्रहिलः, शिव इव धृतावतारः शिववीरश्चास्मिन् पुण्यनगरान्नेदीयस्येव सिंहदुर्गे ससेनो निवसति। विजयपुराधीश्वरेण साम्प्रतमस्य प्रवृद्धं वैरम्। ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्!'' इत्यस्य सारगर्भा महती प्रतिज्ञा। सतीनाम्, सताम्, त्रैवर्णिकस्य आर्यकुलस्य, धर्मस्य भारतवर्षस्य च आशा-सन्तान-वितानस्यायमेवाऽऽश्रयः। इयमेव वर्तमाना दशा भारतवर्षस्य। किमधिकं विनिवेदयामो योग-बलावगत सकल-गोप्यतम-वृत्तान्तेषु योगिराजेषु'' इति कथयित्वा विरराम।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में ब्रह्मचारी गुरु द्वारा शिवाजी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– केवल दक्षिण देश में निश्चय ही पर्वतों का बाहुल्य है और घने जंगलों से व्याप्त है। इसी कारण बहुत अधिक प्रयास करने के बाद भी वह महाराष्ट्र केसरी को नहीं जीत सका। अब सुना जाता है कि उसी का सगा-सम्बन्धी 'शाइस्ता खाँ' दक्षिण देश का शासक बनाकर वहाँ भेजा जा रहा है। महाराष्ट्र देश के रत्न, यवनों के रक्त की प्यासी तलवार वाले, वीरता रूपी नायिका की माँग में सुन्दर और घना सिन्दूर लगाने से देदीप्यमान भुजाओं वाले, मराठों के मुकुटमणि, योद्धाओं के आभूषण, नीतियों के निधान, निपुणताओं के आश्रय, परम उत्साहों के सागर, अपने धर्म की आग्रहपूर्वक रक्षा करने में दृढ़, अवतार धारण किये हुए शिव के समान कोई प्रातःस्मरणीय शिवाजी इस पूनानगर के अति समीपवर्ती सिंहदुर्ग में सेना सहित निवास कर रहे हैं। बीजापुर नरेश के साथ इस समय इनकी शत्रुता बढ़ी हुई है। 'या तो कार्य पूरा करूँगा या शरीर को नष्ट कर दूँगा' यह उनकी सारगर्भित दृढ़ प्रतिज्ञा है। वह सतियों, सज्जनों, द्विजों, तीन वर्णों वाली आर्य जाति, धर्म और भारतवर्ष की विविध आशाओं के आधार हैं। भारतवर्ष की यही वर्तमान दशा है। आप योगिराज हैं और योग बल से सारे गोप्य वृत्तान्त जानते हैं, अतः आपसे अधिक क्या कहें? यह कहकर ब्रह्मचारी गुरु चुप हो गये।

शब्दार्थ–**हि** =निश्चितरूप से, **पर्वतबहुलोऽस्ति** =पर्वतों की अधिकता है, **अरण्यानीसङ्कुलोऽस्ति** =विशाल घने जंगल से व्याप्त है, **चिरोद्योगेनापि** = चिरकाल तक प्रयास करने पर भी, **हस्तयितुम्** =अपने अधीन करने में, **अशकन्** =समर्थ हुआ, **यवनशोणितपिपासाऽऽकुलकृपाणः** =यवनों के रक्त की प्यास से व्याकुल खड्गवाले, **भूषणं भटानाम्** =वीरों के अलंकारस्वरूप, **निधिर्नीतीनाम्** =नीतियों के निधान (खजाना), **पारावारः परमोत्साहानाम्** =परमोत्साह के सागर, **स्वधर्माऽऽग्रहग्रहग्रहिलः** =अपने धर्म को हठ से भी पालन करने में दृढ़तर, **पुण्यनगरान्नेदीयस्येव** =इस पूना नगर के अत्यन्त समीप में ही, **ससेनः** =सेना के साथ, **कार्यं व साधयेयं देहं वा पातयेयम्** =या तो कार्य सिद्ध करूँगा या शरीर को नष्ट कर दूँगा, **त्रैवर्णिकस्य** =(ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इन) तीन वाली, **आशासन्तानवितानस्य** =आशा-समूह के विस्तार के अर्थात् विविध आशाओं के, **योगबलावगतसकलगोप्यतमवृत्तान्तेषु** =योग के बल से समस्त गूढ़ वृत्तान्तों को जान लेने वालों के लिये, **विरराम** =मौन हो गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– **अरण्यानी**–अरण्य+आनुक्+ङीष्। **हस्तयितुम्**–हस्ते करोतीति हस्तयति, हस्त+णिच्+रम+लिट्+तिप्।

तदाकर्ण्य विविध-भाव-भङ्ग-भासुर-वदनो योगिराजो मुनिराजं तत्सहचरांश्च निपुणं निरीक्ष्य, तेषामपि शिववीरान्तरङ्गतामङ्गीकृत्य, मुनिवेषव्याजेन स्वधर्मरक्षा व्रतिनश्चोररीकृत्य ''विजयतां शिववीरः, सिद्धयन्तु भवतां मनोरथाः'' इति मन्दं व्याहार्षीत्।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– शिवाजी के विषय में सुनकर योगिराज वीर शिवाजी का जयघोष करते हैं और मनोरथ पूर्ण होने का आशीर्वाद देते हैं।

व्याख्या– यह वृत्तान्त सुनकर, योगिराज का मुख विविध भाव-भङ्गियों से खिल उठा। उन्होंने मुनि और उनके साथियों को ध्यान से देखकर तथा ये भी वीरशिवाजी के अन्तरङ्ग सहायक लोग हैं और मुनि के वेष के बहाने से अपने धर्म की रक्षा करने में कटिबद्ध हैं, ऐसा जानकर, धीरे से 'वीर शिवाजी की जय हो आपके मनोरथ पूरे हों यह कहा।

शब्दार्थ– विविधभावभङ्गभासुरवदनः =विविध भाव-भङ्गियों से प्रकाशमान मुखवाले, **निपुणं** =अच्छी तरह से, **शिववीरान्तरङ्गताम्** =शिवाजी की अन्तरङ्गता को, **मुनिवेषव्याजेन** =मुनि के वेष के बहाने से, **उररीकृत्य** =जानकर, **व्याहार्षीत्** =कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आकर्ण्य–आङ्+कर्ण+क्त्वा+ल्यप्। **निरीक्ष्य**–निर्+ईक्ष+ल्यप्।**व्याहार्षीत**–वि+आ+हृ+लुङ्,प्र.पु.ए.व.।

अथ ''किमपि पिपृच्छिषामी'' ति शनैरभिधाय बद्धकरसम्पुटे सोत्कण्ठे जटिलमुनौ ''अवगतम्, यवनयुद्धे विजय एव, दैवादापद्ग्रस्तोऽपि च सखिसाहाय्येनाऽऽत्मानमुद्धरिष्यति'' इति समभाणीत्। मुनिश्च 'गृहीतमि'त्युदीर्य, पुनः किञ्चिद् विचार्य्यैव स्मृत्वेव, च दीर्घमुष्णं निःश्वस्य, रोरुध्यमानैरपि किञ्चिदुद्गतैर्बाष्पबिन्दुभिराकुलनयनो ''भगवन्! प्रायो दुर्लभो युष्मादृक्षाणां साक्षात्कार इत्यपराऽपि पृच्छाऽऽच्छादयति माम्'' इति न्यवेदीत्। स च ''आम्! ऊरीकृतम्, जीवति सः, सुखेनैवाऽऽस्ते'' इत्युदतीतरत्। अथ ''तं कदा द्रक्ष्यामि'' इति पुनः पृष्टवति ''तद्विवाहसमये द्रक्ष्यसि'' इत्यभिधाय, बहूनि सान्त्वनावचनानि च गम्भीरस्वरेणोक्त्वा, सपदि उपत्यकाम्, गण्डशैलान् अधित्यकां चाऽऽरुह्य पुनस्तस्मिन्नेव पर्वतकन्दरे तपस्तप्तुं जगाम।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनने के पश्चात् योगिराज महामुनि की जिज्ञासा शान्त कर, अनेक प्रकार के आश्वासन देकर तपस्या करने गुफा में चले जाते हैं।

व्याख्या – तत्पश्चात् 'मैं कुछ पूछना चाहता हूँ' धीरे से यह कहकर जटाधारी मुनि के उत्कण्ठापूर्वक हाथ जोड़ने पर योगिराज बोले –मैंने समझ लिया, यवनों से युद्ध में शिवाजी की जीत होगी। दैववश आपत्ति में पड़ने पर भी अपने मित्रों की सहायता से अपने को उबार लेंगे। मुनि ने भी 'समझ लिया' यह कहकर फिर कुछ विचारते हुए और स्मरण करते हुए से, लम्बी और गरम साँस लेकर, निरन्तर रोके जाने पर भी कुछ निकल आये हुए अश्रुकणों से भरे हुए नेत्रों से कहा– भगवन्! आप जैसे महात्माओं के दर्शन प्रायः दुर्लभ होते हैं।अतः एक और जिज्ञासा मुझे विवश कर रही है। योगिराज ने उत्तर दिया हाँ, समझ गया, वह जीवित है, सुखपूर्वक है। तदनन्तर मुनि ने फिर पूछा ''उसे कब देखूँगा?''यह पुनः पूछने पर ''उसके विवाह के समय देखोगे'' यह कहकर और गम्भीर स्वर से अनेक प्रकार के सान्त्वनापूर्ण वचन समुच्चारित कर, उसी समय पर्वत की घाटी फिर पर्वत से गिरी हुई बड़ी-बड़ी शिलाओं और पर्वत के ऊपर भूमि पर चढ़कर पुनः उसी गुफा में तपस्या करने चले गये।

शब्दार्थ– पिपृच्छिषामि =पूछना चाहता हूँ, **अभिधाय** =कहकर, **बद्धकरसम्पुटे** =हाथ जोड़ लेने पर, **सखिसाहाय्येन** =मित्रों की सहायता से, **उद्धरिष्यति** =उबार लेगा, **समभाणीत्** =कहा, **रोरुध्यमानैरपि** =अत्यन्त रोके जाने पर भी, **युष्मादृक्षाणां** =आप जैसों का, **अपराऽपि** =दूसरी भी, **ऊरीकृतम्** =स्वीकार किया, **उदतीतरत्** =उत्तर दिया, **पृष्टवति** =पूछने पर, **उपत्यकाम्** =पर्वत के समीप की निचली भूमि, **आरुह्य** =चढ़कर, **जगाम** =चले गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पिपृच्छिषामी–प्रच्छ+सन्+लट्+मिप्। **अभिधाय**–अभि+धा+क्त्वा+ल्यप्। **उद्धरिष्यति**–उद्+हर्+णिच्+लट्+तिप्। **समभाणीत्**–सम्+भण्+लुङ्+तिप्। **रोरुध्यमानैः**–रुध्+यङ्+शानच्। **उद्गतैः**–उद्+गम्+क्त। **न्यवेदीत्**–नि+विद्+लुङ्+तिप्। **उदतीतरत्**–उद्+तॄ+णिच्+लुङ्+तिप्।

बोध प्रश्न

1) **नीचे दिए गए कथनों में से सत्य (√) तथा असत्य (x) कथन का चयन कीजिए –**

i) महमूद नामक यवन गजिनी देश का निवासी था – ( )

ii) 'नाहं मूर्तिर्विक्रीणामि, किन्तु भिनद्मि' कथन गोरी का था – ( )

iii) गजिनी देश में शहाबुद्दीन नामक यवन ने आक्रमण किया – ( )

iv) 'आलमगीर' की उपाधि कुतुबुद्दीन ने धारण की थी – ( )

v) शिवाजी सिंह दुर्ग में सेनासहित निवास कर रहे थे – ( )

vi) 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' कथन शिवाजी का है – ( )

2) **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

i) गुजरात देश का मुकुट ..... था।

ii) महमूद नामक यवन ने सेनासहित ..... में प्रवेश किया।

iii) शहाबुद्दीन ने ..... में दिल्ली पर चढ़ाई की।

iv) ..... ने जयचन्द और पृथ्वीराज के मध्य आपसी फूट डाली।

v) भारतवर्ष का प्रथम यवन सम्राट ..... हुआ।

vi) ..... शान्तिप्रिय और विद्वान् का सम्मान करने वाला शासक था।

vii) ..... देश में पर्वतों का बाहुल्य था।

3) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –**

i) सोमनाथ तीर्थ को किसने धूल में मिला दिया?

ii) महमूद ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किया?

iii) महमूद की राजधानी क्या थी?

iv) महमूद की मृत्यु कब हुई?

v) भारतवर्ष का गुप्त शत्रु कौन था?

vi) 'मूर्तिमान् कलियुग' विशेषण का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?

vii) महाराष्ट्र केसरी को कौन नहीं जीत सका ?

अभ्यास प्रश्न

1) सर्वप्रथम भारत पर किसने आक्रमण किया? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

2) ब्रह्मचारी द्वारा कही गयी शिवाजी की विशेषताएं बताइए।

13.3 सारांश

योगिराज के निवेदन करने पर ब्रह्मचारी गुरु तत्कालीन स्थिति का वर्णन करना प्रारम्भ करते हैं–विक्रमादित्य के चले जाने के बाद धैर्य, पराक्रम, सुख, शान्ति सब चला गया और महमूद गजनवी नाम के किसी विदेशी आक्रान्ता ने आकर भारत को लूटा। सोमनाथ मन्दिर में शिवलिङ्ग तोड़कर रत्न लूटकर अपने देश ले गया। उसने भारतवर्ष पर 12 बार आक्रमण किया। उसकी कष्टमय मृत्यु के उपरान्त मोहम्मद गोरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया।

पृथ्वीराज और जयचन्द के मध्य फूट डालकर सबको मृत्यु के घाट उतार कर सम्पूर्ण उत्तर भारत पर तब से अब तक इन विदेशी आतताइयों का ही शासन रहा। दक्षिण देश में इन यवनों का अधिकार नहीं हो सका। उसके पश्चात् महाराष्ट्र देश में मराठों के मुकुटमणि, नीतिनिधान, कुशल शिवाजी के विषय में महामुनि बताते हैं जिसे सुनकर योगिराज के मुख पर प्रसन्नता आ जाती है और वे आर्शीवचन स्वरूप 'भारत की यवनों पर विजय निश्चित है' ऐसा आश्वासन देकर पुनः तपस्या करने चले जाते हैं।

13.4 शब्दावली

विलुण्ठ्य	–	लूटकर
दरबा	–	कबूतरों के रहने का स्थान
विशस्य	–	मारकर
नृशंस	–	क्रूर
गूढशत्रु	–	प्रच्छन्न शत्रु
हि	–	निश्चितरूप से
अस्पृष्ट	–	बिना हुए
निपुणं	–	अच्छी तरह से
रक्तरञ्जित	–	खून से रंगी हुई
अभिधाय	–	कहकर
बाहुल्य	–	अधिकता
जगाम	–	चले गये
कटिबद्ध	–	अडिग, दृढ़निश्चयी

13.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः) – डा. रमाशंकर मिश्र,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी।

2) शिवराजविजयः (प्रथम विराम) – डा. देवनारायण मिश्र,साहित्य भण्डार,मेरठ।

3) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः) – डा. गायत्री शुक्ला,इन्दिरा प्रकाशन,इलाहाबाद।

4) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः प्रथमो निःश्वासः) – डा. चन्द्रिका लाल श्रीवास्तव,गुरुमन्त्र प्रकाशन,गोरखपुर।

13.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1) i) सत्य (ii)असत्य (iii) सत्य (iv)असत्य(v)सत्य (vi)सत्य

2) i) सोमनाथ तीर्थ(ii)भारतवर्ष(iii) 1250(iv)शहाबुद्दीन(v)कुतुबुद्दीन(vi)अकबर बादशाह (vii)दक्षिण

3) i) सोमनाथ तीर्थ को महमूद ने धूल में मिला दिया।

ii) महमूद ने भारत पर 12 बार आक्रमण किया।

iii) महमूद की राजधानी गजिनी थी।

iv) महमूद की मृत्यु विक्रम संवत् 1087 में हुई।

v) भारतवर्ष का गुप्त शत्रु अकबर था।

vi)'मूर्तिमान् कलियुग' विशेषण का प्रयोग औरंगजेब के लिये किया गया है।

vii) महाराष्ट्र केसरी को औरंगजेब नहीं जीत सका।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 14 शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास) – अनुच्छेद 30-36

इकाई का रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 गद्यांश का अनुवाद – ततः शनैः शनैर्नियातेष्व ..... सगणः स्वकुटीरं प्रविवेश।

14.3 सारांश

14.4 शब्दावली

14.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- गौरसिंह की वीरता से परिचित होंगे।
- गौरसिंह की व्यवहारकुशलता का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- यवन-युवक का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- गौरसिंह एवं यवन-युवक के मध्य हुए संवादों से परिचित होंगे।
- संस्कृत शब्दों की विशिष्ट प्रयोग विधि को समझ सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों! इस इकाई में ऐतिहासिक चरित्रों के क्रिया-कलापों और आचरण-व्यवहार का चित्रण इतिहासकार की दृष्टि से किया गया है। ऐतिहासिक मान्यताओं का ध्यान रखते हुए व्यास जी ने ऐसे स्थल ढूँढ निकाले हैं जहाँ उनकी प्रतिभा को खुलकर खेलने का अवसर मिल सके।

गौरसिंह शिवाजी के वीरों में अग्रगण्य है जिसकी वीरता, पराक्रम, साहस का वर्णन आगे किया गया है। अम्बिकादत्त व्यास ने गौरसिंह का स्वामिभक्ति की भावना से ओत-प्रोत चित्र प्रस्तुत किया है। स्वयं व्यास जी ने गौरसिंह की प्रशंसा में लिखा है–

''बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्ष देशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चाऽऽसीत्।'' गौरसिंह गुप्तचर का कार्य करते हुए कभी ब्रह्मचारी बनता है तो कभी संन्यासी, कभी गायक बनता है तो कभी उत्कट योद्धा।वह सर्वत्र अपना कार्य बड़ी कुशलता से करता है। युवावस्था में उसके स्वामिभक्ति, नीतिचातुर्य एवं शौर्य आदि गुण पाठक को आश्चर्यचकित कर देते हैं। व्यास जी ने गौरसिंह का जैसा उन्नत तथा वास्तविक चित्र खींचा है वह वास्तव में अद्वितीय है। गौरसिंह एक कुशल सैनिक, राजनीति में प्रवीण, योद्धाओं में अग्रणी है। गौरसिंह अकेले ही यवन-युवक का वध करता है जिससे उसके साहस और निर्भयता का परिचय प्राप्त होता है।

14.2 गद्यांश का अनुवाद–ततः शनैः शनैर्निर्यातेष्व... सगणः स्वकुटीरं प्रविवेश।

ततः शनैः शनैर्निर्यातेष्वपरिचितजनेषु, संवृत्ते च निर्मक्षिके, मुनिर्गौरबटुमाहूय, विजयपुराधीशाऽऽज्ञया शिववीरेण सह योद्धुं ससेनं प्रस्थितस्य अपजलखानस्य विषये यावत् किमपि प्रष्टुमियेष, तावत् पादचारध्वनिमिव कस्याप्यश्रौषीत्। तमवधार्याऽन्यमनस्के इव मुनौ गौरबटुरपि तेनैव ध्वनिना कर्णयोः कृष्ट इव समुत्थाय, निपुणं परितो निरीक्ष्य, पर्य्यट्य, 'कोऽयम्? इति च साम्रेडं व्याहृत्य, कम्प्यनवलोक्य, पुनर्निवृत्य, 'मन्ये मार्जारः कोऽपि' इति मन्दं गुरवे निवेद्य, पुनस्तथैवोपविवेश। मुनिश्च 'मा स्म कश्चिदितरः श्रौषीत्' इति सशङ्कः क्षणं विरम्य पुनरुपन्यस्तुमारेभे –

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश अम्बिकादत्त व्यास विरचित शिवराजविजय के प्रथम विराम के प्रथम निःश्वास से उद्धृत है।

प्रसंग– योगिराज के तपस्या के लिए चले जाने पर मुनि ने गौरबटु को बुलाकर अफजल खान के विषय में पूछना चाहा तभी ब्रह्मचारी गुरु को किसी प्रकार की ध्वनि सुनाई दी जिसका वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– उसके बाद धीरे-धीरे अपरिचित लोगों के चले जाने पर, एकान्त हो जाने पर, मुनि ने गौरबटु को बुलाकर, बीजापुर नरेश की आज्ञा से शिवाजी के साथ युद्ध करने के लिए सेना सहित चल चुके हुए अफजल खान के विषय में जैसे ही कुछ पूछना चाहा, वैसे ही किसी के पैरों की ध्वनि सुनाई दी। उसे सुनकर मुनि के अन्यमनस्क से हो जाने पर, गौरबटु भी उसी ध्वनि से आकृष्ट हुआ-सा होकर और वहाँ से उठकर, चारों ओर अच्छी तरह देखकर, टहल कर, 'कौन है?' ऐसा कई बार कहकर, किसी को न देखकर, फिर लौटकर 'लगता है, कोई बिल्ली है' ऐसा गुरुजी से धीरे से निवेदन कर फिर उसी प्रकार बैठ गया। मुनि ने भी 'कोई दूसरा न सुन ले' इस आशङ्का से थोड़ी देर रुककर, फिर कहना शुरू किया।

शब्दार्थ– निर्यातेषु =चले जाने पर, **अपरिचितजनेषु** =अपरिचित लोगों के, **संवृत्ते** = हो जाने पर, **निर्मक्षिके** =एकान्त, **विजयपुराधीशाऽऽज्ञया** =बीजापुर के शासक की आज्ञा से, **प्रस्थितस्य** =चल चुके हुए, **प्रष्टुम् इयेष** =पूछने की इच्छा की, **अश्रौषीत्** =सुनाई पड़ा, **अवधार्य** =सुनकर या जानकर, **कृष्ट इव** =आकृष्ट हुए के समान, **समुत्थाय** =उठकर, **साम्रेडम्** =बार-बार, **व्याहृत्य** =कहकर, **अनवलोक्य** =न देखकर, **निवृत्त्य** =लौटकर, **मार्जारः** =बिल्ली, **मा स्म कश्चिदितरः श्रौषीत्** =कोई दूसरा न सुन ले, **उपन्यस्तुम्** =कहना, **आरेभे** =आरम्भ किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – निर्यातेषु–निर्+या+क्त,स.ब.। **संवृत्ते**–सम्+वृत्+क्त,स.ए.। **योद्धुम्**–युध्+तुमुन्। **प्रस्थितस्य**–प्र+स्था+क्त, षष्ठी ए.। **प्रष्टुम्**–प्रच्छ+तुमुन्। **इयेष**–इष इच्छायाम्+लिट्+तिप्। **अवधार्य**–अव+धृ+णिच्+ल्यप्। **समुत्थाय**–सम्+उद्+स्था+ल्यप्। **पर्य्यट्य**–परि+अट गतौ+ल्यप्। **व्याहृत्य**–वि+आ+हृ+ल्यप्। **अनवलोक्य**–अन+अव+लोक+ल्यप्। **उपन्यस्तुम्**– उप+नि+अस्+तुमुन्। **आरेभे**–आ+रभ+लिट्।

''वत्स गौरसिंह! अहमत्यन्तं तुष्यामि त्वयि, यत् त्वमेकाकी अपजलखानस्य त्रीनश्वान् तेन दासीकृतान् पञ्च ब्राह्मणतनयांश्च मोचयित्वा अनीतवानसीति। कथं न भवेरीदृशः? कुलमेवेदृशं राजपुत्रदेशीयक्षत्रियाणाम्''। तावत् पुनरश्रूयत मर्मरः पादक्षेपश्च। ततो विरम्य, मुनिः स्वयमुत्थाय, प्रोच्चं शिलापीठमेकमारुह्य, निपुणतया परितः पश्यन्नपि

कारणं किमपि नावलोकयामास चरणाक्षेपशब्दस्य। अतः पुनरेकतानेन निपुणं निरीक्षमाणेन गौरसिंहेन दृष्टं यत् कुटीर-निकटस्थ-निष्कुटक-कदलीकूटे द्वित्रास्तरवोऽतितरां कम्पन्ते इति।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– अफजल खान द्वारा बन्दी बनाये गए ब्राह्मण बालकों को छुड़ाने पर गौरसिंह की मुनि द्वारा प्रशंसा और झुरमुट से आती हुई ध्वनि का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या–''बेटा गौरसिंह! मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ क्योंकि तुम अकेले ही अफजल खान के तीन घोड़ों और उसके द्वारा दास बनाये गये पाँच ब्राह्मण बालकों को छुड़ाकर ले आये। तुम ऐसे क्यों न होगे? राजपूताने के क्षत्रियों का कुल ही ऐसा है।'' उसी समय पुनः मर्मर ध्वनि तथा पैरों की आहट सुनाई पड़ी। तभी रुककर मुनि ने स्वयं उठकर एक अत्यन्त ऊँचे शिलाखण्ड पर चढ़कर चतुरतापूर्वक सावधानी से चारों ओर देखते हुए भी पैरों की आहट का कोई कारण नहीं देखा। अतः पुनः एकाग्रचित्त से भली-भाँति देखते हुए गौरसिंह ने देखा कि कुटी के समीप की गृहवाटिका के केलों के समूह में दो या तीन पेड़ अधिकतम हिल रहे हैं।

शब्दार्थ– **तुष्यामि** =प्रसन्न हूँ, **त्वयि** =तुम पर, **ब्राह्मणतनयांश्च** =ब्राह्मणबालकों को, **मोचयित्वा** =छुड़ाकर, **आनीतवानसि** =ले आये हो, **कथं न भवेरीदृशः** =तुम ऐसे क्यों न होगे, **मर्मरः** =मर्मर ध्वनि, **पादक्षेपश्च** = और पैरों का शब्द, **विरम्य** =क्षण भर रुककर, **प्रोन्नतम्** =अत्यन्त ऊँचे, **नावलोकयामास** =नहीं देखा, **एकतानेन** =एकाग्र चित्त से, **कुटीरनिकटस्थनिष्कुटककदलीकूटे** =कुटी के समीप में स्थित गृहवाटिका के केलों के समूह में, **तरवः** =कदलीपादप, **अतितराम्** =अधिकतर, **कम्पन्ते** =काँप या हिल रहे हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – **मोचयित्वा**–मुच्+णिच्+क्त्वा। **आनीतवान्**–आ+नी+क्त+क्तवतु। **विरम्य**–वि+रम्+ल्यप्। **अतितराम्**–अति+तरप्।

तदेव संशयस्थानमित्यङ्गुल्या निर्दिश्य, कुटीर-वलीके गोपयित्वा स्थापितानामसीनामेकमाकृष्य, रिक्तहस्तेनैव मुनिना पृष्ठतोऽनुगम्यमानः कपोल-तल-विलम्बमानान् चक्षुश्चुम्बिनः कुटिल-कचान् वामकराङ्गु- लिभिरपसारयन्, मुनिवेषोऽपि किञ्चित् कोप-कषायित नयनः, कर-कम्पित कृपा कृपण-कृपाणो महादेवमारि राधयिषुस्तपस्विवेषोऽर्जुन इव शान्तवीररसद्वयस्नातः सपदि समागतवान् तन्निकटे, अपश्यच्च लता-प्रतान-वितान- वेष्टित-रम्भा-स्तम्भ-त्रितयस्य मध्ये नील- वस्त्र-खण्ड-वेष्टित-मूर्द्धानं हरित-कञ्चुकं श्याम-वसनानद्ध-कटितट-कर्बुराधोवसनम्, काकासनेनोपविष्टम्, रम्भालवाल-लग्नाधोमुख-खड्गत्सरुन्यस्त-विपर्यस्त-हस्त-युगलम्, लशुनगन्धिभिर्निश्वासैः कदली-किसलयानि मलिनयन्तम्, नवाङ्कुरित-श्मश्रु-श्रेणि-च्छलेन कन्यकापहरण-पङ्क-कलङ्कपङ्ककलङ्किताननम्, विंशतिवर्ष-कल्पं यवनयुवकम्। ततः परस्परं चाक्षुषे सम्पन्ने दृष्टोऽहमिति निश्चित्य, उत्प्लुत्य, कोशात् कृपाणमाकृष्य, युयुत्सुः सोऽपि सम्मुखमवतस्थे। ततस्तयोरेवं सञ्जाताः परस्परमालापाः।

सन्दर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– झुरमुट से आती हुई ध्वनि को जब गौरसिंह ने सुना तो वहाँ उसने मुसलमान युवक को देखा। गौरसिंह ने उससे बातचीत की जिसका वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– 'सन्देह का स्थान वही है' ऐसा अंगुलि से निर्देश कर, कुटीर की छप्पर की ओरी में छिपाकर रखी गई तलवारों में से एक तलवार खींचकर, खाली हाथ वाले मुनि के द्वारा पीछा किया जाता हुआ, गालों पर लटकते हुए और आँखों पर आ जाने वाले अपने घुँघराले बालों को बाँयें हाथ की अंगुलियों से दूर हटाता हुआ, मुनिवेष धारण करते हुए भी कुछ क्रोध के कारण लाल नेत्रों वाला, हाथ में प्रकम्पित एवं निर्दय तलवार लिये हुए, महादेव की आराधना करने के लिये तपस्वी वेषधारी अर्जुन के समान शान्त और वीर दोनों रसों में स्नान किये हुए, गौरसिंह तुरन्त उस स्थान के समीप आया और वहाँ लताओं की विस्तृत बेलों से आच्छादित (ढँका हुआ) केले के तीन पेड़ों के बीच, नीले कपड़े के टुकड़े से सिर को ढँके हुए, हरे रंग का कुर्ता पहने हुए, काले वस्त्र से कमर के भाग को बाँधे हुए, चितकबरे रंग का अधोवस्त्र (लुङ्गी) धारण किये हुए, काकासन से बैठे हुए, केले के थाले पर अधोमुख रखी तलवार की मूठ पर दोनों हाथ उल्टे रखे हुए, लहसुन की दुर्गन्ध से युक्त श्वासों से केले के कोमल पत्तों को मलिन करते हुए, नई निकलती हुई मूँछ की रेखा के बहाने कन्या के अपहरण रूप कीचड़ के कलंकपंक से कलंकित मुखवाले, लगभग बीस वर्ष की अवस्था वाले, पापकर्म से उत्पन्न अपयश वाले एक मुसलमान युवक को देखा। तदनन्तर आपस में दोनों की आँखें मिल जाने पर –'मैं देख लिया गया हूँ' ऐसा निश्चय करके, उछलकर, म्यान से तलवार खींचकर, लड़ने की इच्छा वाला वह मुसलमान युवक भी सामने खड़ा हो गया,तदनन्तर उन दोनों की आपस में इस प्रकार बातचीत हुई।

शब्दार्थ– **कुटीरवलीके** =कुटीर की ओरी में, **असिनाम्** =तलवारों में से, **आकृष्य** = खींचकर, **कपोलतलविलम्बमानान्** =गालों तक लटकने वाले, **चक्षुश्चुम्बिनः** =आँखों को स्पर्श करने वाले, **कुटिलकचान्** =वक्र केशों को, **अपसारयन्** =दूर हटाता हुआ, **किञ्चित्कोपकषायितनयनः** =कुछ क्रोध से लाल नेत्रों वाला, **करकम्पितकृपाकृपणकृपाणः** =हाथ में हिलती हुई एवं निर्दय तलवार को लिये हुए, **अरिराधयिषुः** =आराधना करने की इच्छा वाले, **समागतवान्** =आया, **लताप्रतानवितानवेष्टितरम्भास्तम्भत्रितयस्य** =लताओं की फैली हुई बेलों से ढका हुआ केले के तीन पेड़ों के, **नीलवस्त्रखण्डवेष्टितमूर्द्धानम्** =नीले वस्त्र के टुकड़े से सिर ढके हुए, **कञ्चुकम्** =कुर्ता, **रम्भालवाललग्नाधोमुखखड्गत्सरुन्यस्तविपर्यस्तहस्तयुगलम्** =केले के थाले पर नीचे की ओर मुख की हुई तलवार की मुट्ठी पर दोनों हाथों को उल्टे रखे हुए, **कदलीकिसलयानि** =केले के पत्तों को, **मलिनयन्तम्** =दूषित करते हुए, **कोशात्** =म्यान से, **कृपाणम्** =तलवार, **युयुत्सुः** =युद्ध की इच्छा वाला, **आलापाः** =बात-चीत।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – **निर्दिश्य**–निर्+दिश्+क्त्वा+ल्यप्। **गोपयित्वा**–गुप्+णिच्+क्त्वा। **आकृष्य**–आ+कृष्+ल्यप्। **अनुगम्यमानः**–अनु+गम्+णिच्+शानच्। **अपसारयन्**–अप+सृ+णिच्+शतृ। **अरिराधयिषु**–आ+राध्+सन्+उ। **आनद्ध**–आ+नध्+क्त। **उत्प्लुत्य**–उत्+प्लुङ्+क्त्वा+ल्यप्। **युयुत्सुः**–युध्+सन्+उ। **अवतस्थे**–अव+स्था+ लिट्।

गौरसिंहः – कुतो रे यवन-कुल-कलङ्क!

यवन-युवकः– आः! वयमपि कुत इति प्रष्टव्याः? भारतीयकन्दरिकन्दरेष्वपि वयं विचरामः, शृङ्ग-लाङ्गूलविहीनानां हिन्दुपदव्यवहार्याणां च युष्मादृक्षाणां पशूनामाखेटक्रीडया रमामहे।

गौरसिंहः – (सक्रोधं विहस्य) वयमपि तु स्वाङ्कागतसत्त्ववृत्तयः शिवस्य गणा अत्रैव निवसामः, तत् सुप्रभातमद्य, स्वयमेव त्वं दीर्घदाव-दहने पतङ्गायितोऽसि।

यवन-युवकः –अरे रे वाचाल! ह्यो रात्रौ युष्मत्कुटीरे रुदतीं समायातां ब्राह्मण-तनयां सपदि प्रयच्छथ, तत् कदाचिद् दयया जीवतोऽपि त्यजेयम्, अन्यथा मदसिभुजङ्गिन्या दष्टाः क्षणात् कथावशेषाः संवर्त्स्यथ।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– गौरसिंह और यवन-युवक के वार्तालाप का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– गौरसिंह – क्यों रे यवनकुलकलङ्क! यहाँ कहाँ से आया?

यवन-युवक – अरे! हमसे भी 'कहाँ से आये' यह पूछना चाहिये? हम यवन लोग भारतवर्ष की पर्वत-गुफाओं में भी विचरण करते हैं और सींग-पूँछ विरहित हिन्दू नामधारी तुम जैसे पशुओं का शिकार कर आनन्द मनाते हैं।

गौरसिंह– (क्रोध के साथ हँसकर) अपने अङ्क (गोद) में स्वतः आये हुए दुष्ट प्राणियों के ऊपर ही जीवित रहने वाले शिव के गण हम आश्रमवासी हिन्दू लोग भी यहीं रहते हैं। तो आज का प्रभात शुभ रहा, क्योंकि तुम स्वयं ही तीव्र दावानल में पतंग के समान जलने के लिये आ गये हो।

यवन-युवक– अरे रे वाचाल! कल रात जो ब्राह्मण की पुत्री रोती हुई तुम्हारी कुटी में आई थी, उसे तुरन्त मुझे सौंप दो। तब शायद दया करके तुम्हें जीवित ही छोड़ दूँ, नहीं तो क्षण भर में ही मेरी इस नागिन सी तलवार से डँसे गये तुम्हारी सिर्फ कहानी ही शेष रहेगी।

शब्दार्थ– आः = खेदसूचक, **भारतीयकन्दरिकन्दरेष्वपि** =भारतीय पहाड़ों की कन्दराओं में भी, **शृङ्गलाङ्गूलविहीनानाम्** =सींग-पूँछ से विहीन, **युष्मादृक्षाणाम्** =तुम्हारे समान, **रमामहे** =मनोरंजन करते हैं, **स्वाङ्कागतसत्त्ववृत्तयः** =अपनी गोद में आये हुए प्राणी ही आहार हैं जिनकी, **दीर्घदावदहने** =तेज जलती हुई आग में, **रुदतीं समायाताम्** =विलाप करती आई हुई, **प्रयच्छथ** =दे दो, **मदसिभुजङ्गिन्या** =मेरी तलवार रूपी सर्पिणी से, **दंष्टाः** =डँसे गये, **संवर्त्स्यथ** =रहोगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – **सुप्रभातम्**–शोभनं प्रभातमिति विग्रहः; 'कुगतिप्रादयः' इति प्रादि समासः। **पतङ्गायितः**–पतङ्ग इवाचरितवानिति, पतङ्ग+क्यङ्+क्त। **दंष्टाः**–दंश+क्त।

कलकलमेतमाकर्ण्य श्यामबटुरपि कन्यासमीपादुत्थाय दृष्ट्वा च हन्तुमेतं यवनवराकं पर्य्याप्तोऽयं गौरसिंह इति मा स्म गमदन्योऽपि कश्चित् कन्यकामपजिहीर्षुरिति वलीकादेकं विकटखड्गमाकृष्यत्सरौ गृहीत्वा कन्यकां रक्षन्, तदध्युषित-कुटीर-निकट एव तस्थौ।

गौरसिंहस्तु 'कुटीरान्तः कन्यकाऽस्ति, सा च यवन-वध-व्यसनिनि मयि जीवति न शक्या द्रष्टुमपि, किं नाम स्प्रष्टुम्? तद् यावत् तव कवोष्ण-शोणित-तृषित एष चन्द्रहासो न चलति, तावत् कूर्दनं वा उत्फालं वा यच्चिकीर्षसि तद् विधेहि' इत्युक्त्वा व्यालीढमर्य्यादया सज्जः समतिष्ठत।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– श्यामवर्ण के ब्रह्मचारी द्वारा कुटी के बाहर तलवार लेकर कन्या की रक्षा करने का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– इस कोलाहल को सुनकर श्यामवर्ण का ब्रह्मचारी भी बालिका के पास से उठकर और देखकर कि क्षुद्र यवन-युवक को मारने के लिये यह गौरसिंह अकेले पूर्ण समर्थ है, यह सोचकर कन्या का अपहरण करने की इच्छा से कोई अन्य यवन-युवक न आ जाये, इसलिये छप्पर की ओरी से एक भयंकर तलवार खींचकर उसकी मूँठ पकड़कर कन्या की रक्षा करता हुआ जिस कुटी में बालिका थी उसके समीप ही खड़ा हो गया।

और गौरसिंह-कुटी के अन्दर कन्या है और यवनों के वध के व्यसनी मेरे जीवित रहते उसे छूने की कौन कहे, कोई देख भी नहीं सकता। जब तक तुम्हारे कुछ गरम खून की प्यासी यह तलवार नहीं चलती, तब तक ही तुम जो कुछ उछल-कूद करना चाहते हो, वह कर लो। यह कहकर वह युद्ध-विधान के विशेष ढङ्ग से पैंतरा बनाकर तैयार हो गया।

शब्दार्थ– कलकलमेतम् =इस कोलाहल को, **उत्थाय** =उठकर, **हन्तुम्** =मारने के लिए, **यवनवराकम्** =क्षुद्र यवन को, **मा स्म गमत्** =न पहुँच जाये, **कश्चित्** –कोई, **अपजिहीर्षुः** =अपहरण करने की इच्छा वाला, **वलीकात्** =छप्पर की ओरी से, **विकटखड्गम्** =भयङ्कर तलवार को, **आकृष्य** =खींचकर, **तदध्युषितकुटीरनिकटे एव** = उस कन्या से युक्त कुटीर के समीप ही, **तस्थौ** =स्थित हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – पर्याप्तः–परि+अप्+क्त। **मा स्म गमत्**–'स्म' के योग में लुङ् लकार तथा 'मा' के योग में अट् का निषेध है। **अपजिहीर्षुः**–अप्+हृ+सन्+उ। **अध्युषित**–अधि+वस्+क्त। **कुटीरः**–कुटी+रः। **तस्थौ**–स्था+लिट्। **शक्या**–शक्+यत्+टाप्। **द्रष्टुम**–दृश्+तुमुन। **चिकीर्षसि**–कृ+सन्+लट्+सिप्। **समतिष्ठत**–सम+स्था+लङ्।

ततो गौरसिंहः दक्षिणान् वामांश्च परश्शतान् कृपाणमार्गानङ्गीकृतवतः, दिनकर-कर-स्पर्श-चतुर्गुणीकृत-चाकचक्यैः चञ्चच्चन्द्रहासचमत्कारैश्चक्षूंषि मुष्णतः, यवन-युवक-हतकस्य, केनाप्यनुपलक्षितोद्योगः, अकस्मादेव स्वासिना कलित-क्लेद-सञ्जात-स्वेदजल-जालं विशिथिल-कच-कुल-मालं भग्न-भ्रू-भयानक-भालं शिरश्चिच्छेद।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– गौरसिंह द्वारा यवन-युवक के वध करने का वर्णन इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– तदनन्तर गौरसिंह ने दाँये-बाँये हजारों तलवार चलाने की विधाओं को स्वीकार करने वाले, सूर्य की किरणों के सम्पर्क से जिसकी चमक चौगुनी हो रही थी, चलती हुई तलवार के चमत्कार से चौंधियाई आँखों वाले उस दुष्ट यवन-युवक के श्रम से निकले हुए पसीने से व्याप्त, अस्त-व्यस्त बालों वाले टेढ़ी भौहों से भयानक ललाट वाले शिर को अपनी तलवार से अचानक काट डाला। उसका यह कर्तन-उद्योग कोई और नहीं देख पाया।

शब्दार्थ– परश्शतान् =सैकड़ों, **कृपाणमार्गान्** =तलवार चलाने की विधाओं को, **दिनकरस्पर्शचतुर्गुणीकृतचाकचक्यैः** =सूर्य की किरणों के स्पर्श से चौगुना कर दिया गया है चमक जिसका, **चञ्चच्चन्द्रहासचमत्कारैः** =चलती हुई तलवार के चमत्कार से, **मुष्णतः** =चौंधियाने वाले, **यवनयुवकहतकस्य** =दुष्ट यवन-युवक के, **केनाप्यनुपलक्षितोद्योगः** =किसी के द्वारा जिसका उद्योग नहीं देखा गया है, **विशिथिलकचकुलमालम्** =बिखरे हुए बालों वाले, **भग्नभ्रूभयानकभालम्** =विच्छिन्न भौंहों से भयानक भाल वाले, **चिच्छेद** =काट डाला।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – मुष्णतः–मुष्+तसिल्। **कलित**–कल्+क्त। **भालम्**–भा+लच्। **चिच्छेद**–छिद्+लिट्।

अथ मुनिरपि दाडिम-कुसुमास्तरणाच्छन्नायामिव गाढ-रुधिरदिग्धायां ज्वलदङ्गार-चितायां चितायामिव वसुधायां शयानं वियुज्यमान-भारतभुवमालिङ्गन्तमिव निर्जीवीभवदङ्गबन्ध-चालनपरं शोणित-सङ्घात-व्याजेनान्तः-स्थित-रजोराशिमिवोद्गिरन्तं कलित-सायन्तन-घनाऽऽडम्बर-विभ्रमं

सतत-ताम्रचूडभक्षण-पातकेनेव ताम्रीकृतं छिन्न-कन्धर यवनहतकमवलोक्य सहर्षं ससाधुवादं सरोमोद्गमं च गौरसिंहमाश्लिष्य, भ्रूभङ्गमात्राऽऽज्ञप्तेन भृत्येन मृतककञ्चुककटिबन्धोष्णीषादिकमन्विष्याऽऽनीतं पत्रमेकमादाय सगणः स्वकुटीरं प्रविवेश।

सन्दर्भ– पूर्ववत्।

प्रसंग– लहूलुहान अवस्था में पड़े हुए यवन को देख हर्षपूर्वक साधुवाद देकर मुनि ने कुटि में प्रवेश किया।

व्याख्या– तत्पश्चात् मुनि ने भी, अनार के फूलों के बिछौने से ढँकी हुई सी, गाढे खून से लथपथ हो रही, जलते अङ्गारों वाली चिता के समान, पृथ्वी पर पड़े हुए, बिछुड़ती हुई भारत भूमि का आलिङ्गन करते हुए से, निर्जीव हो रही अंग संधियों को हिलाते हुए, रुधिर-राशि के बहाने भीतर के रजोगुण को उगलते हुए से, सायंकालीन मेघाडम्बर के विलास को धारण किये हुए, मानो मुर्गा खाने के पाप से रक्तवर्ण को प्राप्त और कटे हुए मस्तक वाले दुष्ट यवन को मुनि ने देखकर, हर्षपूर्वक साधुवाद देते हुए रोमांचित होकर, गौरसिंह का आलिंगन करके, आँखों के इशारे मात्र से आज्ञप्त भृत्य द्वारा मृतक के कुर्ते, कटिबन्ध तथा पगड़ी आदि की तलाशी लेकर लाये गये एक पत्र को लेकर, सब के साथ अपनी कुटी में प्रवेश किया।

शब्दार्थ– **दाडिमकुसुमास्तरणाच्छन्नायाम्** =अनार के पुष्पों के चादर से ढँकी हुई, **गाढरुधिरदिग्धायाम्** =घनीभूत रक्त से सनी हुई, **ज्वलदङ्गारचितायाम्** =जलते हुए अङ्गारों से व्याप्त चिता में, **शयानम्** =सोते हुए, **निर्जीवीभवदङ्गबन्धचालनपरम्** =निर्जीव हो रहे सन्धिबन्धों को हिलाते हुए, **शोणितसङ्घातव्याजेन** =रुधिर समूह के बहाने से, **उद्गिरन्तम्** =उगलते हुए, **कलितसायन्तनघनाडम्बरविभ्रमम्** =सायंकालिक मेघ के विभ्रम को धारण करने वाले, **भक्षणपातकेनैव** =मुर्गा खाने के पाप से, **छिन्नकन्धरम्** =कटे हुए सिर वाले, **भ्रूभङ्गमात्राज्ञप्तेन** =भृकुटी के संकेत मात्र से आदिष्ट हुए, **भृत्येन** =भृत्य के द्वारा, **मृतककञ्चुककटिबन्धोष्णीषादिकम्** =मृतक के कुर्ते, कटिबन्ध तथा पगड़ी आदि को, **सगणः** =सपरिवार, **प्रविवेश** =प्रवेश किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी – **आच्छन्न**–आ+छद्+क्त। **शयानम्**–शीङ्+शानच्। **वियुज्यमानम्**–वि+युज्+शानच्। **निर्जीवीभवत्**–निर्+जीव+च्वि+भू+शतृ। **आश्लिष्य**–आ+श्लिष्+ल्यप्।

बोध प्रश्न

1) **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तरों पर सही का चिन्ह लगाइए –**

i) मुनि ने गौरबटु से किसके विषय में कुछ पूछना चाहा– अफजल खान/शिवाजी

ii) अफजल खान किसकी आज्ञा से शिवाजी के साथ युद्ध के लिये तैयार हुआ– कन्नौज नरेश/बीजापुर नरेश

iii) अफजल खान द्वारा बन्दी बनाये गये ब्राह्मण बालकों को कौन छुड़ाकर लाया था– गौरबटु/श्यामबटु

iv) मुस्लिम युवक से वार्तालाप हुआ – मुनि/गौरसिंह

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

i) ..... मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ।

ii) ..... के क्षत्रियों का कुल ही ऐसा है।

iii) ..... ने देखा कि केले के समूह से 2-3 पत्ते अधिक हिल रहे हैं।

iv) ..... अरे! हमसे भी कहाँ से आये यह पूछना चाहिए?

v) कोलाहल को सुनकर ..... बालिका के पास आया।

vi) ..... यवनयुवक के सिर को काट डाला।

अभ्यास प्रश्न

1) यवन युवक के विशेषण बताइए।

2) यवन युवक और गौर सिंह के मध्य हुए वार्तालाप को संक्षेप में लिखिए।

14.3 सारांश

योगिराज के तपस्या के लिये चले जाने पर मुनि ने गौरबटु को बुलाकर अफजलखान के विषय में कुछ जानकारी करनी चाही तभी समीप के केले के पत्ते में से कुछ ध्वनि की आहट सुनाई पड़ती है। गौरबटु जाकर निकट से देखता है तो वहाँ कोई मुसलमान युवक तलवार लेकर खड़ा रहता है। एक दूसरे के खून के प्यासे उन दोनों में परस्पर वार्तालाप होता है और इस शोर को सुनकर कुटी के अन्दर कन्या की रक्षा के लिये श्यामबटु ब्रह्मचारी भी आ जाता है वह कुटी के बाहर तलवार लेकर खड़ा हो जाता है। उधर गौरसिंह अकेले ही एकान्त में उस मुस्लिम युवक का वध कर डालता है। यह सुनकर मुनि प्रसन्न होकर गौरबटु को धन्यवाद देते हैं और अपनी कुटी में प्रवेश करते हैं।

14.4 शब्दावली

छप्पर	–	कुटी के ऊपर कुशा से छायी हुई छत
अवधार्य	–	सुनकर
साम्रेडम्	–	बार-बार
प्रकम्पित	–	हिलते हुए
असिनाम्	–	तलवारों में से
तरवः	–	कदलीपादप
कञ्चुकम्	–	कुर्ता
प्रयच्छथ	–	दे दो
काकासन	–	घुटनों के बीच में ठोढ़ी डालकर सिकुड़कर-बैठना
आकृष्य	–	खींचकर
आज्ञप्त	–	आज्ञा प्राप्त

14.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) शिवराजविजयः (प्रथमो निःश्वासः) – डा. रमाशंकर मिश्र,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी।

2) शिवराजविजयः (प्रथम विराम) – डा. देवनारायण मिश्र,साहित्य भण्डार,मेरठ।

3) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः) – डा. गायत्री शुक्ला,इन्दिरा प्रकाशन,इलाहाबाद।

4) शिवराजविजयः (प्रथमो विरामः प्रथमो निःश्वासः) – डा. चन्द्रिका लाल श्रीवास्तव,गुरुमन्त्र प्रकाशन,गोरखपुर।

14.6 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) i. अफजल खान ii. बीजापुर नरेश iii. गौरबटु iv. गौरसिंह

2) i. बेटा गौरसिंह! ii. राजपूताने iii. गौरसिंह iv. यवन-युवक v श्यामबटु vi गौरसिंह

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY